श्री चंद्रप्रज्ञप्ति सूत्र

।। श्री आगम-गुण-मञ्जूषा ।।

।। શ્રી આગમ-ગુણ-મંજૂષા ।।

।। Sri Agama Guna Manjusa ।।

(सचित्र)

प्रेरक-संपादक

अचलगच्छाधिपति प.पू.आ.भ.स्व. श्री गुणसागर सूरीश्वरजी म.सा.

४५ आगमो का संक्षिप्त परिचय

११ अंगसूत्र

१) **श्री आचारांग सूत्र :-** इस सूत्र मे साधु और श्रावक के उत्तम आचारो का सुंदर वर्णन है। इनके दो श्रुतस्कंध और कुल २५ अध्ययन है। द्रव्यानुयोग, गणितानुयोग, धर्मकथानुयोग और चरणकरणानुयोगोमे से मुख्य चौथा अनुयोग है। उपलब्ध श्लोको कि संख्या २५०० एवं दो चुलिका विद्यमान है।

२) **श्री सूत्रकृतांग सूत्र :-** श्री सुयगडांग नाम से भी प्रसिद्ध इस सूत्र मे दो श्रुतस्कंध और २३ अध्ययन के साथ कुलमिला के २००० श्लोक वर्तमान मे विद्यमान है। १८० क्रियावादी, ८४ अक्रियावादी, ६७ अज्ञानवादी अपरंच द्रव्यानुयोग इस आगम का मुख्य विषय रहा है।

३) **श्री स्थानांग सूत्र :-** इस सूत्र ने मुख्य गणितानुयोग से लेकर चारो अनुयोंगो कि बाते आती है। एक अंक से लेकर दस अंको तक मे कितनी वस्तुअें है इनका रोचक वर्णन है, ऐसे देखा जाय तो यह आगम की शैली विशिष्ट है और लगभग ७६०० श्लोक है।

४) **श्री समवायांग सूत्र :-** यह सूत्र भी ठाणांगसूत्र की भांति कराता है। यह भी संग्रहग्रंथ है। एक से सो तक कौन कौन सी चीजे है उनका उल्लेख है। सो के बाद देढसो, दोसो, तीनसो, चारसो, पांचसो और दोहजार से लेकर कोटाकोटी तक कौनसे कौनसे पदार्थ है उनका वर्णन है। यह आगमग्रंथ लगभग १६०० श्लोक प्रमाण मे उपलब्ध है।

५) **श्री व्याख्याप्रज्ञप्ति सूत्र (भगवती सूत्र) :-** यह सबसे बडा सूत्र है, इसमे ४२ शतक है, इनमे भी उपविभाग है, १९२५ उद्देश है। इस आगमग्रंथ मे प्रभु महावीर के प्रथम शिष्य श्री गौतमस्वामी गणधरादि ने पुछे हुए प्रश्नो का प्रभु वीर ने समाधान किया है। प्रश्नोत्तर संकलन से इस ग्रंथ की रचना हुइ है। चारो अनुयोगो कि बाते अलग अलग शतको मे वर्णित है। अगर संक्षेप मे कहना हो तो श्री भगवतीसूत्र रत्नो का खजाना है। यह आगम १५००० से भी अधिक संकलित श्लोको मे उपलब्ध है।

६) **ज्ञाताधर्मकथांग सूत्र :-** यह सूत्र धर्मकथानुयोग से है। पहले इसमे साडेतीन करोड कथाअे थी अब ६००० श्लोको मे उन्नीस कथाअें उपलब्ध है।

७) **श्री उपासकदशांग सूत्र :-** इसमें बाराह व्रतो का वर्णन आता है और १० महाश्रावको के जीवन चरित्र है, धर्मकथानुंयोग के साथ चरणकरणानुयोग भी इस सूत्र मे सामील है। इसमे ८०० से ज्यादा श्लोक है।

८) **श्री अन्तकृद्दशांग सूत्र :-** यह मुख्यत: धर्मकथानुयोग मे रचित है। इस सूत्र में श्री शत्रुंजयतीर्थ के उपर अनशन की आराधना करके मोक्ष मे जानेवाले उंत्तम जीवो के छोटे छोटे चरित्र दिए हुए है। फिलाल ८०० श्लोको मे ही ग्रंथ की समाप्ति हो जाती है।

९) **श्री अनुत्तरोपपातिक दशांग सूत्र :-** अंत समय मे चारित्र की आराधना करके अनुत्तर विमानवासी देव बनकर दूसरे भव मे फीर से चारित्र लेंकर मुक्तिपद को प्राप्त करने वाले महान् श्रावको के जीवनचरित्र है इसलीए मुख्यतया धर्मकथानुयोगवाला यह ग्रंथ २०० श्लोक प्रमाणका है।

१०) **श्री प्रश्नव्याकरण सूत्र :-** इस सूत्र मे मुख्यविषय चरणकरणानुयोग है। इस आगम में देव-विद्याधर-साधु-साध्वी श्रावकादि ने पुछे हुए प्रश्नों का उत्तर प्रभु ने कैसे दिया इसका वर्णन है। जो नंदिसूत्र मे आश्रव-संवरद्वार है ठीक उसी तरह का वर्णन इस सूत्र मे भी है। कुलमिला के इसके २०० श्लोक है।

११) **श्री विपाक सूत्र :-** इस अंग मे २ श्रुतस्कंध है पहला दु:खविपाक और दूसरा सुखविपाक, पहेले में १० पापीओं के और दूसरे में १० धर्मीओ के द्रष्टांत है मुख्यतया धर्मकथानुयोग रहा है। १२०० श्लोक प्रमाण का यह अंगसूत्र है।

१२ उपांग सूत्र

१) **श्री औपपातिक सूत्र :-** यह आगम आचारांग सूत्र का उपांग है। इस मे चंपानगरी का वर्णन १२ प्रकार के तपों का विस्तार कोणिक का जुलुस अम्बडपरिव्राजक के ७०० शिष्यो की बाते है। १५०० श्लोक प्रमाण का यह ग्रंथ है।

२) **श्री राजप्रश्नीय सूत्र :-** यह आगम सुयगडांगसूत्र का उपांग है। इसमें प्रदेशीराजा का अधिकार सूर्याभदेव के जरीए जिनप्रतिमाओं की पूजा का वर्णन है। २००० श्लोको से भी अधिक प्रमाण का ग्रंथ है।

Jain Education International 2010_03 For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

३) **श्री जीवाजीवाभिगम सूत्र :-** यह ठाणांगसूत्र का उपांग है। जीव और अजीव के बारे मे अच्छा विश्लेषण किया है। इसके अलावा जम्बुद्विप की जगती एवं विजयदेव ने कि हुइ पूजा की विधि सविस्तर बताइ है। फिलाल जिज्ञासु ४ प्रकरण, क्षेत्रसमासादि जो पढते है वह सभी ग्रंथे जीवाभिगम अपरन्च पन्नवणासूत्र के ही पदार्थ है। यह आगम सूत्र ४७०० श्लोक प्रमाण का है।

४) **श्री प्रज्ञापना सूत्र-** यह आगम समवायांग सूत्र का उपांग है। इसमे ३६ पदो का वर्णन है। प्राय: ८००० श्लोक प्रमाण का यह सूत्र है।

५) **श्री सुर्यप्रज्ञप्ति सूत्र :-**

६) **श्री चन्द्रप्रज्ञप्तिसूत्र :-** इस दो आगमो मे गणितानुयोग मुख्य विषय रहा है। सूर्य, चन्द्र, ग्रहादि की गति, दिनमान ऋतु अयनादि का वर्णन है, दोनो आगमो मे २२००, २२०० श्लोक है।

७) **श्री जम्बूद्वीप प्रज्ञप्ति सूत्र :-** यह आगम भी अगले दो आगमों की तरह गणितानुयोग मे है। यह ग्रंथ नाम के मुताबित जंबूद्विप का सविस्तर वर्णन है। ६ आरे के स्वरूप बताया है। ४५०० श्लोक प्रमाण का यह ग्रंथ है।

८) **श्री निरयावली सूत्र :-** इन आगम ग्रंथो में हाथी और हारादि के कारण नानाजी का दोहित्र के साथ जो भयंकर युद्ध हुआ उस मे श्रेणिक राजा के १० पुत्र मरकर नरक मे गये उसका वर्णन है।

९) **श्री कल्पावतंसक सूत्र :-** इसमें पद्मकुमार और श्रेणिकपुत्र कालकुमार इत्यादि १० भाइओं के १० पुत्रों का जीवन चरित्र है।

१०) **श्री पुष्पिका उपांग सूत्र :-** इसमें १० अध्ययन है। चन्द्र, सूर्य, शुक्र, बहुपुत्रिका देवी, पूर्णभद्र, माणिभद्र, दत्त, शील, जल, अणाढ्य श्रावक के अधिकार है।

११) **श्री पुष्पचुलीका सूत्र :-** इसमें श्रीदेवी आदि १० देवीओ का पूर्वभव का वर्णन है।

१२) **श्री वृष्णिदशा सूत्र :-** यादववंश के राजा अंधकवृष्णि के समुद्रादि १०पुत्र, १० मे पुत्र वासुदेव के पुत्र बलभद्रजी, निषधकुमार इत्यादि १२ कथाएं है। अंतके पांचो उपांगो को निरियावली पन्चक भी कहते है।

दश प्रकीर्णक सूत्र

१) **श्री चतुशरण प्रकीर्णक सूत्र :-** इस पयन्ने में अरिहन्त, सिद्ध, साधु और गच्छधर्म के आचार के स्वरूप का वर्णन एवं चारों शरण की स्वीकृति है।

२) **श्री आतुर प्रत्याख्यान प्रकीर्णक सूत्र :-** इस आगम का विषय है अंतिम आराधना और मृत्युसुधार

३) **श्री भक्तपरिज्ञा प्रकीर्णक सूत्र :-** इस पयन्ने में पंडित मृत्यु के तीन प्रकार (१) भक्त परिज्ञा मरण (२) इंगिनी मरण (३) पादोपगमन मरण इत्यादि का वर्णन है।

६) **श्री संस्तारक प्रकीर्णक सूत्र :-** नामानुसार इस पयन्ने में संथारा की महिमा का वर्णन है। इन चारों पयन्ने पठन के अधिकारी श्रावक भी है।

७) **श्री तंदुल वैचारिक प्रकीर्णक सूत्र :-** इस पयन्ने को पूर्वाचार्यगण वैराग्य रस के समुद्र के नाम से चीन्हित करते है। १०० वर्षो में जीवात्मा कितना खानपान करे इसकी विस्तृत जानकारी दी गई है। धर्म की आराधना ही मानव मन की सफलता है। ऐसी बातों से गुंफित यह वैराग्यमय कृति है।

८) **श्री चन्दाविजय प्रकीर्णक सूत्र :-** मृत्यु सुधार हेतु कैसी आराधना हो इसे इस पयन्ने में समजाया गया है।

९) **श्री देवेन्द्र-स्तव प्रकीर्णक सूत्र :-** इन्द्र द्वारा परमात्मा की स्तुति एवं इन्द्र संबधित अन्य बातों का वर्णन है।

१०A) **श्री मरणसमाधि प्रकीर्णक सूत्र :-** मृत्यु संबधित आठ प्रकरणों के सार एवं अंतिम आराधना का विस्तृत वर्णन इस पयन्ने में है।

१०B) **श्री महाप्रत्याख्यान प्रकीर्णक सूत्र :-** इस पयन्ने में साधु के अंतिम समय में किए जाने योग्य पयन्ना एवं विविध आत्महितकारी उपयोगी बातों का विस्तृत वर्णन हे।

Jain Education International 2010_03 For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

१०C) **श्री गणिविद्या प्रकीर्णक सूत्र :-** इस पयत्रे में ज्योतिष संबधित बड़े ग्रंथो का सार है।

उपरोक्त दसों पयन्नों का परिमाण लगभग २५०० श्लोकों में बध्य हे। इसके अलावा २२ अन्य पयन्ना भी उपलब्ध हैं। और दस पयन्नों में चंदाविजय पयन्नो के स्थान पर गच्छाचार पयन्ना को गिनते हैं।

छह छेद सूत्र

(१) निशिथ सूत्र (२) महानिशिथ सूत्र (३) व्यवहार सूत्र (४) जीतकल्प सूत्र (५) पंचकल्प सूत्र (६) दशा श्रुतस्कंध सूत्र

इन छेद सूत्र ग्रन्थों में उत्सर्ग, अपवाद और आलोचना की गंभीर चर्चा है। अति गंभीर केवल आत्मार्थ, भवभीरू, संयम में परिणत, जयणावंत, सूक्ष्म दष्टि से द्रव्यक्षेत्रादिक विचार धर्मदष्टि से करने वाले, प्रतिपल छहकाया के जीवों की रक्षा हेतु चिंतन करने वाले, गीतार्थ, परंपरागत उत्तम साधु, समाचारी पालक, सर्वजीवो के सच्चे हित की चिंता करने वाले ऐसे उत्तम मुनिवर जिन्होंने गुरु महाराज की निश्रा में योगद्वहन इत्यादि करके विशेष योग्यता अर्जित की हो ऐसे मुनिवरों को ही इन ग्रन्थों के अध्ययन पठन का अधिकार है।

चार मूल सूत्र

१) **श्री दशवैकालिक सूत्र :-** पंचम काल के साधु साध्वीओं के लिए यह आगमग्रन्थ अमृत सरोवर सरीखा है। इसमें दश अध्ययन हैं तथा अन्त में दो चूलिकाए रतिवाक्या व, विविक्त चरिया नाम से दी हैं। इन चूलिकाओं के बारे में कहा जाता है कि श्री स्थूलभद्रस्वामी की बहन यक्षासाध्वीजी महाविदेहक्षेत्र में से श्री सीमंधर स्वामी से चार चूलिकाए लाइ थी। उनमें से दो चूलिकाएं इस ग्रंथ में दी हैं। यह आगम ७०० श्लोक प्रमाण का है।

२) **श्री उत्तराध्ययन सूत्र :-** परम कृपालु श्री महावीरभगवान के अंतिम समय के उपदेश इस सूत्र में हैं। वैराग्य की बातें और मुनिवरों के उच्च आचारों का वर्णन इस आगम ग्रंथ में ३६ अध्ययनों में लगभग २००० श्लोकों द्वारा प्रस्तुत हें।

३) **श्री निर्युक्ति सूत्र :-** चरण सत्तरी-करण सत्तरी इत्यादि का वर्णन इस आगम ग्रन्थ में है। पिंडनिर्युक्ति भी कई लोग ओघ निर्युक्ति के साथ मानते हैं अन्य कई लोग इसे अलग आगम की मान्यता देते हैं। पिंडनिर्युक्ति में आहार प्राप्ति की रीत बताइ हें। ४२ दोष कैसे दूर हों और आहार करने के छह कारण और आहार न करने के छह कारण इत्यादि बातें हैं।

४) **श्री आवश्यक सूत्र :-** छह अध्ययन के इस सूत्र का उपयोग चतुर्विध संघ में छोट बडे सभी को है। प्रत्येक साधु साध्वी, श्रावक-श्राविका के द्वारा अवश्य प्रतिदिन प्रात: एवं सायं करने योग्य क्रिया (प्रतिक्रमण आवश्यक) इस प्रकार हैं :-

(१) सामायिक (२) चतुर्विंशति (३) वंदन (४) प्रतिक्रमण (५) कार्योत्सर्ग (६) पच्चक्खाण

दो चूलिकाए

१) **श्री नंदी सूत्र :-** ७०० श्लोक के इस आगम ग्रंन्थ में परमात्मा महावीर की स्तुति, संघ की अनेक उपमाए, २४ तीर्थंकरों के नाम ग्यारह गणधरों के नाम, स्थविरावली और पांच ज्ञान का विस्तृत वर्णन है।

२) **श्री अनुयोगद्वार सूत्र :-** २००० श्लोकों के इस ग्रन्थ में निश्चय एवं व्यवहार के आलंबन द्वारा आराधना के मार्ग पर चलने की शिक्षा दी गइ है। अनुयोग याने शास्त्र की व्याख्या जिसके चार द्वार है (१) उक्रम (२) निक्षेप (३) अनुगम (४) नय

यह आगम सब आगमों की चावी है। आगम पढने वाले को प्रथम इस आगम से शुरुआत करनी पडती है। यह आगम मुखपाठ करने जैसा है।

॥ इति शम् ॥

Jain Education International 2010_03 For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

Introduction

45 *Āgamas*, a short sketch

I Eleven *Aṅgas* :

(1) **Ācārāṅga-sūtra :** It deals with the religious conduct of the monks and the Jain householders. It consists of 02 Parts of learning, 25 lessons and among the four teachings on entity, calculation, religious discourse and the ways of conduct, the teaching of the ways of conduct is the main topic here. The Āgama is of the size of 2500 *Ślokas*.

(2) **Sūyagaḍāṅga-sūtra :** It is also known as Sūtra-Kṛtāṅga. It's two parts of learning consist of 23 lessons. It discusses at length views of 363 doctrine-holders. Among them are 180 ritualists, 84 non-ritualists, 67 agnostics and 32 restraint-propounders, though it's main area of discussion is the teaching of entity. It is available in the size of 2000 *Ślokas*.

(3) **Ṭhāṇāṅga-sūtra :** It begins with the teaching of calculation mainly and discusses other three teachings subordinately. It introduces the topic of one dealing with the single objects and ends with the topic of eight objects. It is of the size of 7600 *Ślokas*.

(4) **Samavāyāṅga-sūtra :** This is an encompendium, introducing 01 to 100 objects, then 150, 200 to 500 and 2000 to crores and crores of objects. It contains the text of size of 1600 *Ślokas*.

(5) **Vyākhyā-prajñapti-sūtra :** It is also known as Bhagavatī-sūtra. It is the largest of all the *Aṅgas*. It contains 41 centuries with subsections. It consists of 1925 topics. It depicts the questions of Gautama *Gaṇadhara* and answers of Lord Mahāvīra. It discusses the four teachings in the centuries. This *Āgama* is really a treasure of gems. It is of the size of more than 15000 *Ślokas*.

(6) **Jñātādharma-Kathāṅga-sūtra :** It is of the form of the teaching of the religious discourses. Previously it contained three and a half crores of discourses, but at present there are 19 religious discourses. It is of the size of 6000 *Ślokas*.

(7) **Upāsaka-daśāṅga-sūtra :** It deals with 12 vows, life-sketches of 10 great Jain householders and of Lord Mahāvīra, too. This deals with the teaching of the religious discourses and the ways of conduct. It is of the size of around 800 *Ślokas*.

(8) **Antagaḍa-daśāṅga-sūtra :** It deals mainly with the teaching of the religious discourses. It contains brief life-sketches of the highly spiritual souls who are born to liberate and those who are liberating ones : they are Andhaka Vṛṣṇi, Gautama and other 9 sons of queen Dhāriṇī, 8 princes like Akṣobhakumāra, 6 sons of Devaki, Gajasukumāra, Yādava princes like Jāli, Mayālī, Vasudeva Kṛṣṇa, 8 queens like Rukmiṇī. It is available of the size of 800 *Ślokas*.

(9) **Anuttarovavāyi-daśāṅga-sūtra :** It deals with the teaching of the religious discourses. It contains the life-sketches of those who practise the path of religious conduct, reach the *Anuttara Vimāna*, from there they drop in this world and attain Liberation in the next birth. Such souls are Abhayakumāra and other 9 princes of king Śrenika, Dīrghasena and other 11 sons, Dhannā *Aṇagāra*, etc. It is of the size of 200 *Ślokas*.

(10) **Praśna-vyākaraṇa-sūtra :** It deals mainly with the teaching of the ways of conduct. As per the remark of the Nandī-sūtra, it contained previously Lord Mahāvīra's answers to the questions put by gods, Vidyādharas, monks, nuns and the Jain householders. At present it contains the description of the ways leading to transgression and the self-control. It is of the size of 200 *Ślokas*.

(11) **Vipāka-sūtrāṅga-sūtra :** It consists of 2 parts of learning. The first part is called the Fruition of miseries and depicts the life of 10 sinful souls, while the second part called the Fruition of happiness narrates illustrations of 10 meritorious souls. It is available of the size of 1200 *Ślokas*.

II Twelve *Upāṅgas*

(1) **Uvavāyi-sūtra :** It is a subservient text to the *Ācārāṅga-sūtra*. It deals with the description of Campā city, 12 types of austerity, procession-arrival of Koṇika's marriage, 700 disciples of the monk Ambaḍa. It is of the size of 1000 *Ślokas*.

(2) **Rāyapaseṇī-sūtra :** It is a subservient text to Sūyagaḍāṅga-sūtra. It depicts king Pradesī's jurisdiction, god Sūryābha worshipping the Jina idols, etc. It is of the size of 2000 *Ślokas*.

Jain Education International 2010_03 For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

(3) **Jīvābhigama-sūtra :** It is a subservient text to Ṭhāṇāṅga-sūtra. It deals with the wisdom regarding the self and the non-self, the Jambū continent and its areas, etc. and the detailed description of the veneration offered by god Vijaya. The four chapters on areas, society, etc. published recently are composed on the line of the topics of this *Sūtra* and of the Pannāvaṇā-sūtra. It is of the size of 4700 *Ślokas*.

(4) **Pannāvaṇā-sūtra :** It is a subservient text to the Samavāyāṅga-sūtra. It describes 36 steps or topics and it is of the size of 8000 *Ślokas*.

(5) **Sūrya-prajñapti-sūtra** and

(6) **Candra-prajñapti-sūtra :** These two falls under the teaching of the calculation. They depict the solar and the lunar transit, the movement of planets, the variations in the length of a day, seasons, northward and the southward solstices, etc. Each one of these *Āgamas* are of the size of 2200 *Ślokas*.

(7) **Jambūdvīpa-prajñapti-sūtra :** It mainly deals with the teaching of the calculations. As it's name indicates, it describes at length the objects of the Jambū continent, the form and nature of 06 corners (*āra*). It is available in the size of 4500 *Ślokas*.

Nirayāvalī-pañcaka :

(8) **Nirayāvalī-sūtra :** It depicts the war between the grandfather and the daughter's son, caused of a necklace and the elephant, the death of king Ceṭika's 10 sons who attained hell after death. This war is designated as the most dreadful war of the Downward (*avasarpiṇī*) age.

(9) **Kalpāvataṁsaka-sūtra :** It deals with the life-sketches of Kālakumara and other 09 princes of king Śreṇika, the life-sketch of Padamakumara and others.

(10) **Pupphiyā-upāṅga-sūtra :** It consists of 10 lessons that covers the topics of the Moon-god, Sun-god, Venus, queen Bahuputrikā, Pūrṇabhadra, Maṇibhadra, Datta, Śila, Bala and Aṇāḍḍhiya.

(11) **Pupphaculīya-upāṅga-sūtra :** It depicts previous births of the 10 queens like Śrīdevī and others.

(12) **Vahnidaśā-upāṅga sūtra :** It contains 10 stories of Yadu king Andhakavṛṣṇi, his 10 princes named Samudra and others, the tenth one Vāsudeva, his son Balabhadra and his son Niṣaḍha.

III Ten *Payannā-sūtras* :

(1) **Āurapaccakhāṇa-sūtra :** It deals with the final religious practice and the way of improving (the life so that the) death (may be improved).

(2) **Bhattaparinnā-sūtra :** It describes (1) three types of *Paṇḍita* death, (2) knowledge, (3) Iṅgini devotee (4) *Pādapopagamana*, etc.

(4) **Santhāraga-payannā-sūtra :** It extols the *Saṁstāraka*.

**** These four payannās can also be learnt and recited by the Jain householders. ****

(5) **Tandula-viyāliya-payannā-sūtra :** The ancient preceptors call this Payannā-sūtra as an ocean of the sentiment of detachment. It describes what amount of food an individual soul will eat in his life of 100 years, the human life can be justified by way of practising a religious life.

(6) **Candāvijaya-payannā-sūtra :** It mainly deals with the religious practice that improves one's death.

(7) **Devendrathui-payannā-sūtra :** It presents the hymns to the Lord sung by Indras and also furnishes important details on those Indras.

(8) **Maraṇasamādhi-payannā-sūtra :** It describes at length the final religious practice and gives the summary of the 08 chapters dealing with death.

(9) **Mahāpaccakhāṇa-payannā-sūtra :** It deals specially with what a monk should practise at the time of death and gives various beneficial informations.

(10) **Gaṇivijaya-payannā-sūtra :** It gives the summary of some treatise on astrology.

These 10 Payannās are of the size of 2500 *Ślokas*.

Besides about 22 Payannās are known and even for these above 10 also there is a difference of opinion about their names. The Gacchācāra is taken, by some, in place of the Candāvijaya of the 10 Payannās.

Jain Education International 2010_03 For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

IV Six *Cheda-sūtras*

(1) Vyavahāra-sūtra, (2) Nisītha-sūtra,
(3) Mahānisītha-sūtra, (4) Pancakalpa-sūtra,
(5) Daśāśruta-skandha-sūtra and (6) Bṛhatkalpa-sūtra.

These Chedasūtras deal with the rules, exceptions and vows.

The study of these is restricted only to those best monks who are (1) serene, (2) introvert, (3) fearing from the worldly existence, (4) exalted in restraint, (5) self-controlled, (6) rightfully descerning the subtlety of entity, territories, etc. (7) pondering over continuously the protection of the six-limbed souls, (8) praiseworthy, (9) exalted in keeping the tradition, (10) observing good religious conduct, (11) beneficial to all the beings and (12) Who have paved the path of Yoga under the guidance of their master.

V Four *Mūlasūtras*

(1) **Daśavaikālika-sūtra :** It is compared with a lake of nectar for the monks and nuns established in the fifth stage. It consists of 10 lessons and ends with 02 Cūlikās called Rativākyā and Vivittacariyā. It is said that monk Sthūlabhadra's sister nun Yakṣā approached Simandhara Svāmī in the Mahāvideha region and received four Cūlikās. Here are incorporated two of them.

(2) **Uttarādhyayana-sūtra :** It incorporates the last sermons of Lord Mahāvīra. In 36 lessons it describes detachment, the conduct of monks and so on. It is available in the size of 2000 *Slokas*.

(3) **Anuyogadvāra-sūtra :** It discusses 17 topics on conduct, behaviour, etc. Some combine Piṇḍaniryukti with it, while others take it as a separate *Āgama*. Piṇḍaniryukti deals with the method of receiving food (*bhikṣā* or *gocarī*), avoidance of 42 faults and to receive food, 06 reasons of taking food, 06 reasons for avoiding food, etc.

(4) **Āvaśyaka-sūtra :** It is the most useful *Āgama* for all the four groups of the Jain religious constituency. It consists of 06 lessons. It describes 06 obligatory duties of monks, nuns, house-holders and housewives. They are : (1) *Sāmāyika*, (2) *Caturviṁśatistava*, (3) *Vandanā*, (4) *Pratikramaṇa*, (5) Kāyotsarga and (6) *Paccakhāṇa*.

VI Two *Cūlikās*

(1) **Nandī-sūtra :** It contains hymn to Lord Mahāvīra, numerous similies for the religious constituency, name-list of 24 *Tīrthaṅkaras* and 11 *Gaṇadharas*, list of *Sthaviras* and the fivefold knowledge. It is available in the size of around 700 *Ślokas*.

(2) **Anuyogadvāra-sūtra :** Though it comes last in the serial order of the 45 *Āgamas*, the learner needs it first. It is designated as the key to all the *Āgamas*. The term *Anuyoga* means explanatory device which is of four types : (1) Statement of proposition to be proved, (2) logical argument, (3) statement of accordance and (4) conclusion.

It teaches to pave the righteous path with the support of firm resolve and wordly involvements.

It is of the size of 2000 *Ślokas*.

Jain Education International 2010_03 For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

આગમ - ૧૬, ૧૭

ગણિતાનુયોગમય સૂર્યપ્રજ્ઞપ્તિ સૂત્ર - ચંદ્રપ્રજ્ઞપ્તિ - ૧૬, ૧૭

અન્ય નામ :- સૂરપણ્ણત્તિ, સૂરિયપણ્ણત્તિ, ચંદપણ્ણત્તિ.

અધ્યયન ---------------- ૧ + ૧

પ્રાભૃત --------------- ૨૦ + ૨૦

પ્રાભૃત પ્રાભૃત -------------- ૩૧ + ૩૧

ઉપલબ્ધ પાઠ -------- ૨૨૦૦ + ૨૨૦૦ શ્લોક પ્રમાણ

ગદ્યસૂત્ર -------------- ૧૦૮ + ૧૦૮

પદ્યસૂત્ર -------------- ૧૦૩ + ૧૦૩

પ્રાભૃત - ૧

પ્રાભૃત - પ્રાભૃત - ૧ : આમાં અરિહંતને વંદના કરીને મિથિલા વગેરેના વર્ણન પછી ભગવાન મહાવીરનું સમવસરણ, ઈન્દ્રભૂતિ ગૌતમની જિજ્ઞાસા અને ૨૦ પ્રાભૃતોનો વર્ણ્ય વિષય, મુહૂર્તોની હાનિ-વૃદ્ધિ વગેરે વર્ણન છે.

પ્રાભૃત-પ્રાભૃત - ૨ : આમાં સૂર્યના દક્ષિણાયન અને ઉત્તરાયણના જઘન્ય - ઉત્કૃષ્ટ મુહૂર્ત અને તેના હાનિ-વૃદ્ધિનું વર્ણન છે.

પ્રાભૃત-પ્રાભૃત - ૩ : આમાં ભરતક્ષેત્ર તથા ઐરાવત ક્ષેત્રના સૂર્યના ઉદ્યોત ક્ષેત્રનું વર્ણન છે.

પ્રાભૃત-પ્રાભૃત - ૪ : આમાં એક સૂર્યની ગતિના અંતરની વાત છે.

પ્રાભૃત-પ્રાભૃત - ૫ : આમાં સૂર્ય દ્વારા દ્વીપ-સમુદ્રોના અવગાહન સંબંધી વર્ણન છે.

પ્રાભૃત-પ્રાભૃત - ૬ : આમાં સૂર્ય દ્વારા એક દિવસ-રાતમાં સ્પર્શ કરાતા ક્ષેત્રોના વિષે વર્ણન છે.

પ્રાભૃત-પ્રાભૃત - ૭ : આમાં સૂર્યમંડળોના સંસ્થાન સંબંધી આઠ પ્રતિપત્તિઓનું નિરૂપણ છે.

પ્રાભૃત-પ્રાભૃત - ૮ : આમાં સૂર્યમંડળોના આયામ, વિષ્કંભ વગેરે તેમજ તદનુસાર દિવસ-રાતના મુહૂર્તોની હાનિવૃદ્ધિ નું વર્ણન છે.

પ્રાભૃત - ૨

પ્રાભૃત-પ્રાભૃત - ૧ : આમાં સૂર્યની ત્રાંસી ગતિ વિષે આઠ પ્રતિપત્તિઓનું નિરૂપણ છે.

પ્રાભૃત-પ્રાભૃત - ૨ : આમાં સૂર્યના એક મંડળમાંથી બીજા મંડળમાં સંક્રમણ વિષે વર્ણન છે.

પ્રાભૃત-પ્રાભૃત - ૩ : આમાં એક મુહૂર્તમાં સૂર્યની ગતિના પરિમાણ વિષે નિરૂપણ છે.

પ્રાભૃત - ૩ : આમાં સૂર્યના તાપનું ક્ષેત્ર તેમજ ચંદ્રના ઉદ્યોતનું ક્ષેત્ર તે વિષે ૧૨ પ્રતિપત્તિઓનું નિરૂપણ છે.

પ્રાભૃત - ૪ : આમાં ચંદ્ર-સૂર્યના સંસ્થાનના ભેદ અને તે વિષે ૧૬ પ્રતિપત્તિઓ તથા દરેક મંડળમાં ઉદ્યોત, તાપ અને અંધકારના ક્ષેત્રોના સંસ્થાનનું નિરૂપણ છે.

પ્રાભૃત - ૫ : આમાં સૂર્યના લેશ્યા-તાપના પ્રતિઘાતક વિષે ૧૦ પ્રતિપત્તિઓનું નિરૂપણ છે.

પ્રાભૃત - ૬ : આમાં સૂર્યની ઓજ - સંસ્થિતિ વિષે ૨૫ પ્રતિપત્તિઓ તેમજ અવગાહિત - અનવગાહિત અને અવસ્થિત - અનવસ્થિત મંડળનું વર્ણન છે.

પ્રાભૃત - ૭ : આમાં સૂર્ય દ્વારા પ્રકાશિત થતા સ્થૂળ-સૂક્ષ્મ પદાર્થ વિષે ૨૦ પ્રતિપત્તિઓનું નિરૂપણ છે.

પ્રાભૃત - ૮ : આમાં સૂર્યની ઉદયદિશા વિષે ત્રણ પ્રતિપત્તિઓનું નિરૂપણ તથા જંબૂદ્રીપના દક્ષિણાર્ધ અને ઉત્તરાર્ધમાં ઋતુ, અયન વગેરે વિભિન્ન ક્ષેત્રોના દિવસ-રાત તેમજ ઉત્સર્પિણી - અવસર્પિણી કાળનું વર્ણન છે.

પ્રાભૃત - ૯ : પૌરુષી છાયાપ્રમાણ નામના આ પ્રાભૃતમાં પૌરુષી છાયાના મૂલકારણ, મૂળ વિભાગ અને તે વિષે ૨૫ પ્રતિપત્તિઓ વગેરેનું વર્ણન કરી અંતે પુરુષની ૨૫ પ્રકારની છાયાનું નિરૂપણ છે.

પ્રાભૃત - ૧૦

પ્રાભૃત-પ્રાભૃત - ૧ : આમાં ચંદ્ર-સૂર્ય સાથે નક્ષત્રોના યોગ અને તે વિષે પાંચ પ્રતિપત્તિઓનું નિરૂપણ છે.

પ્રાભૃત-પ્રાભૃત - ૨ : આમાં ચંદ્ર-સૂર્ય સાથે યોગમાં આવતા નક્ષત્રોના મુહૂર્ત-પરિમાણ વર્ણિત છે.

પ્રાભૃત-પ્રાભૃત - ૩ : આમાં પૂર્વ-પશ્ચિમ અને ઉભય ભાગોથી ચંદ્ર સાથે યોગ કરનારા નક્ષત્રોનું નિરૂપણ છે.

પ્રાભૃત-પ્રાભૃત - ૪ : આમાં યુગારંભે યોગ કરનારા નક્ષત્રોના પૂર્વાદિ વિભાગોનું વર્ણન છે.

પ્રાભૃત-પ્રાભૃત - ૫ : આમાં નક્ષત્રોના કુળ - ઉપકુળ - કુળોપકુળ નું નિરૂપણ છે.

પ્રાભૃત-પ્રાભૃત - ૬ : આમાં ૧૨ પૂર્ણિમા તેમજ ૧૨ અમાવાસ્યામાં નક્ષત્રોના યોગ તથા તેમના નક્ષત્રોના કુળ - ઉપકુળ - કુળોપકુળનું વર્ણન છે.

પ્રાભૃત - પ્રાભૃત - ૭ : આમાં એકસરખા નક્ષત્રોથી યુક્ત પૂર્ણિમા અને અમાવાસ્યાનું નિરૂપણ છે.

પ્રાભૃત-પ્રાભૃત - ૮-૯ : આ બંનેમાં અનુક્રમે નક્ષત્રોના સંસ્થાન અને તારાઓનું વર્ણન છે.

પ્રાભૃત-પ્રાભૃત - ૧૦ : આમાં વર્ષા, હેમંત તેમજ ગ્રીષ્મ ઋતુઓમાં માસ ક્રમાનુસાર નક્ષત્રોના યોગ તથા પૌરુષી પ્રમાણનું વર્ણન છે.

પ્રાભૃત-પ્રાભૃત - ૧૧ : આમાં દક્ષિણ-ઉત્તર અને ઉભયમાર્ગે ચંદ્ર સાથે યોગ કરનારા નક્ષત્રો તથા નક્ષત્રરહિત ચંદ્રમંડળ, સૂર્યરહિત ચંદ્રમંડળ વગેરે વાતો છે.

પ્રાભૃત-પ્રાભૃત - ૧૨ : આમાં નક્ષત્રોના દેવતા જણાવ્યા છે.

પ્રાભૃત-પ્રાભૃત - ૧૩ : આમાં ૩૦ મુહૂર્તોના નામ આપ્યાં છે.

પ્રાભૃત-પ્રાભૃત - ૧૪-૧૫ : આ બંનેમાં અનુક્રમે ૧૫ દિવસ તથા ૧૫ રાત્રિઓના તેમજ તેમની તિથિઓના નામ બતાવ્યા છે.

પ્રાભૃત-પ્રાભૃત - ૧૬-૧૭ : આ બંનેમાં અનુક્રમે નક્ષત્રોના ગોત્ર તેમજ તે નક્ષત્રોમાં ભોજન-વિધાનનું નિરૂપણ છે.

પ્રાભૃત-પ્રાભૃત - ૧૮ : આમાં એક એક યુગમાં ચંદ્ર-સૂર્ય સાથેના નક્ષત્રોના યોગનું વર્ણન છે.

પ્રાભૃત-પ્રાભૃત - ૧૯ : આમાં સંવત્સરના માસ તથા લૌકિક અને લોકોત્તર માસના નામ આપ્યાં છે.

પ્રાભૃત-પ્રાભૃત - ૨૦ : આમાં સંવત્સર, નક્ષત્ર સંવત્સર, યુગ સંવત્સર, પ્રમાણ સંવત્સર, લક્ષણ સંવત્સર તથા શનૈશ્વર સંવત્સરના પ્રકાર - પેટાપ્રકારનું નિરૂપણ છે.

પ્રાભૃત-પ્રાભૃત - ૨૧ : આમાં નક્ષત્રોના દ્વાર વગેરે વિષે પાંચ પ્રતિપત્તિઓનું નિરૂપણ છે.

પ્રાભૃત-પ્રાભૃત - ૨૨ : આમાં બે-બે ચંદ્ર-સૂર્ય તથા તે બંનેની સાથે યોગ કરનારા નક્ષત્રો, તેમનો પાંચ પ્રકારના સંવત્સરમાં યોગ, તેમનું કાલપ્રમાણ વગેરે વર્ણન છે.

પ્રાભૃત - ૧૧ :

આમાં પાંચ પ્રકારના સંવત્સરોના આરંભ અને અંત તથા તેમાંના નક્ષત્રોના યોગનું નિરૂપણ છે.

પ્રાભૃત - ૧૨ :

આમાં પાંચ પ્રકારના સંવત્સરોના મુહૂર્ત, દિવસ-રાત વગેરે, છ ઋતુઓ, ક્ષયતિથિ-વૃદ્ધિતિથિ વગેરેના વર્ણન પછી પાંચ પ્રકારના સંવત્સરોના યોગ, યોગકાળ વગેરે વર્ણન છે.

પ્રાભૃત - ૧૩ :

આમાં કૃષ્ણ શુક્લ પક્ષમાં ચંદ્રની હાનિ-વૃદ્ધિ તથા ચંદ્ર-સૂર્યનો રાહુ સાથે યોગ વગેરે વર્ણન છે.

પ્રાભૃત - ૧૪

આમાં કૃષ્ણ-શુક્લ પક્ષમાં ચંદ્રપ્રકાશ અને અંધકારનું પ્રમાણ છે.

પ્રાભૃત - ૧૫

આમાં ચંદ્ર વગેરે જ્યોતિષી દેવોની ગતિ, મંડલગતિ, નક્ષત્રમાસ તેમજ ચંદ્રમાસ વગેરેમાં સૂર્ય વગેરેની મંડલગતિ તેમજ ચંદ્ર, સૂર્ય વગેરે ગ્રહોની એક યુગમાં મંડલગતિ વગેરે વર્ણન છે.

પ્રાભૃત - ૧૬

આમાં ચંદ્રિકા, તડકો તેમજ અંધકારના પર્યાયો આવ્યા છે.

પ્રાભૃત - ૧૭

આમાં ચંદ્ર-સૂર્યના ચ્યવન-મરણ તેમજ ઉપપાત-જન્મ વગેરે વિષે ૨૫ પ્રતિપત્તિઓનું નિરૂપણ છે.

પ્રાભૃત - ૧૮

આમાં ભૂમિથી ચંદ્ર, સૂર્ય વગેરેની ઊંચાઈનું પરિમાણ અને તે વિષે ૨૫ પ્રતિપત્તિઓ, જ્યોતિષી-દેવો, દ્વીપો વગેરેના એક બીજાથી અંતર તે દેવોની રાણીઓ વગેરે તેમજ તે રાણીઓની જઘન્ય-ઉત્કૃષ્ટ સ્થિતિ વગેરે વર્ણન છે.

પ્રાભૃત - ૧૯

આમાં ચંદ્ર-સૂર્યના પ્રકાશિત વિભાગ વિષે ૧૨ પ્રતિપત્તિઓ તેમજ લવણ સમુદ્ર, ધાતકીખંડ, કાલોદધિ, પુષ્કરદ્વીપ અને પુષ્કરાર્ધ વગેરેના સંસ્થાન, આયામ વગેરે તેમજ ત્યાંના ચંદ્ર-સૂર્ય વગેરેના વર્ણનને અંતે સ્વયંભૂરમણદ્વીપ પર્યન્ત વર્ણન છે.

પ્રાભૃત - ૨૦

આમાં ચંદ્ર-રાહુ-સૂર્ય ના નામ વિષયક, તેમના જઘન્ય-ઉત્કૃષ્ટ કાળ, માનવભોગોની તુલના અને ૮૦ ગ્રહોના નામ જણાવ્યા અંતે આ પ્રજ્ઞપ્તિના પાત્ર-અપાત્ર અને વીરવંદનાથી ઉપસંહાર કરવામાં આવ્યો છે.

सिरि उसहदेव सामिस्स णमो। सिरि गोडी - जिराउला - सव्वोदयपासणाहाणं णमो। नमे ऽत्थुणं समणस्स भगवओ महइ महावीर वद्धमाण सामिस्स। सिरि गोयम - सोहम्माइ सव्व गणहराणं णमो। सिरि सुगुरु - देवाणं णमो। **卐卐卐 श्रीचन्दप्रज्ञप्त्युपाङ्गम्। 卐卐卐** 'जयइ नवणलिणकुवलयविगसियसयवत्तपत्तलदलच्छो। वीरो गइंदमयगलसललियगयविक्कमो भयवं ॥१॥ णमिऊण असुरसुरगरूलभुयगपरिवंदिए गयकिलेसे। अरिहे सिद्धायरियउवज्झाए सव्वसाहू य ॥२॥ फुडवियडपायडत्थं वुच्छं पुव्वसुयसारणीसंदं। सुहुमं गणिणोवइट्ठं जोइसगणरायपन्नतिं ॥३॥ णामेण इंदभूइत्ति गोयमो वंदिऊण तिविहेणं। पुच्छइ जिणवरवसहं जोइसरायस्स पण्णत्तिं ॥४॥ कइ मंडलाइं वच्चइ, तिरिच्छा किं च गच्छइ। ओभासइ केवइयं, सेयाइ किं ते संठिई ॥५॥ कहिं पडिहया लेसा, कह ते ओयसंठिई। किं सूरियं वरयते, कहं ते उदयसंठिई ॥६॥ कईकट्ठा पोरिसीच्छाया, जोएत्ति किं ते आहिए।१०॥ के ते संवच्छराणादी, कइ संवच्छराइ य ॥७॥ कहं चंदमसो वुड्ढी, कया ते दोसिणा बहू। के सिग्घगई वुत्ते, किं ते दोसिणलक्खणं ॥८॥ चयणोववाय उच्चत्ते, सूरिया कइ आहिया। अणुभावे केरिसे वुत्ते २०, एवमेयाइं वीसई ॥९॥१। वड्ढोवड्ढी मुहुत्ताणमद्धमंडलसंठिई। के ते चिन्नं परियरइ, अंतरं किं चरंति य ॥१०॥ ओगाहइ केवइयं, केवतियं च विकंपइ ।मंडलाण य संठाणे, विक्खंभो अट्ठ पाहुडा ॥११॥२। छप्पंच य सत्तेव य अट्ठ तिन्नि य हवंति पडिवत्ती। पढमस्स पाहुडस्स उ एयाउ हवंति पडिवत्ती ॥१२॥३। पडिवत्तीओ उदए, अदुव अत्थमणेसु य। भेयघाए कण्णकला, मुहुत्ताण गतीति य ॥१३॥ निक्खममाणे सिग्घगई, पविसंते मंदगईइ य। चुलसीइसयं पुरिसाणं, तेसिं च पडिवत्तीओ ॥१४॥ उदयम्मि अट्ठ भणिया भेदग्घाए दुवे य पडिवत्ती। चत्तारि मुहुत्तगईए हुंति तइयंमि पडिवत्ती ॥१५॥४। आवलिय मुहुत्तग्गे, एवंभागा य जोगसा। कुलाइं पुन्नमासी य, सन्निवाए य संठिई ॥१६॥ तारगग्गं च नेता य, चंदमग्गत्ति यावरे। देवताण य अज्झयणे, मुहुत्ताणं नामया इय ॥१७॥ दिवसा राई वुत्ता य, तिहि गोत्ता भोयणाणि य। आइच्चवार मासा य, एवं संवच्छरा इय ॥१८॥ जोइसस्स य दाराइं, नक्खत्तविजयेऽविय। दसमे पाहुडे एए, बावीसं पाहुडपाहुडा ॥१९॥५। तेणं कालेणं तेणं समएणं मिहिलानामं नगरी होत्था, रिद्धि० वण्णओ, तीसे मिहिलाए नयरीए बहिया उत्तरपुरच्छिमे दिसिभाए एत्थ णं माणिभद्दे णामं चेइए होत्था, चिराइए वण्णओ, तीसे णं मिहिलाए णगरीए जियसत्तू राया धारिणी देवी वण्णओ, तेणं कालेणं० तंमि माणिभद्दे चेइए सामी समोसढे परिसा णिग्गया धम्मो कहिओ परिसा पडिगया।६। तेणं कालेणं० समणस्स भगवओ महावीरस्स जेट्ठे अंतेवासी इंदभूइनामं अणगारे गोयमगोत्तेणं सत्तूस्सेहे जाव पज्जुवासमाणे एवं वयासी।७। ता कहं ते वद्धोवद्धी मुहुत्ताणं आहितेति वदेज्जा ?, ता अट्ठ एकूणवीसे मुहुत्तसते सत्तावीसं च सत्तट्ठिभागे मुहुत्तस्स आहितेति वदेज्जा ।८। ता जया णं सूरिए सव्वब्भंतरातो मंडलातो सव्वबाहिरं मंडलं उवसंकमित्ता चारं चरति सव्वबाहिरातो मंडलातो सव्वब्भंतरं मंडलं उवसंकमित्ता चारं चरति एस णं अद्धा केवतियं रातिंदियग्गेणं आहि० ?, ता तिण्णि छावट्ठे रातिंदियसए रातिंदियग्गेणं आहि० ।९। ता एताए णं अद्धाए सूरिए कति मंडलाइं चरति ?, ता चुलसीयं मंडलसतं चरति, बासीतिमंडलसतं दुक्खुत्तो चरति, तं०-णिक्खममाणे चेव पवेसमाणे चेव, दुवे य खलु मंडलाइं सइं चरति तं०-सव्वब्भंतरं चेव मंडलं सव्वबाहिरं चेव।१०। जइ खलु तस्सेव आदिच्चस्स संवच्छरस्स सइं अट्ठारसमुंहुत्ते दिवसे भवति सइं अट्ठारसमुहुत्ता राती भवति सइं दुवालसमुहुत्ते दिवसे भवति सइं दुवालसमुहुत्ता राती भवति, ता पढमे छम्मासे अत्थि अट्ठारसमुहुत्ता राती णत्थि अट्ठारसमुहुत्ते दिवसे अत्थि दुवालसमुहुत्ते दिवसे णत्थि दुवालसमुहुत्ता राती भवति, दोच्चे छम्मासे अत्थि अट्ठारसमुहुत्ते दिवसे णत्थि अट्ठारसमुहुत्ता राती अत्थि दुवालसमुहुत्ता राती णत्थि दुवालसमुहुत्ते दिवसे भवति, पढमे वा दोच्चे वा छम्मासे नत्थि पण्णरसमुहुत्ते दिवसे णत्थि पण्णरसमुहुत्ता राती भवति, जं णं पढमे वा छम्मासे दोच्चे वा छम्मासे णत्थि पण्णरसमुहुत्ते दिवसे भवति णत्थि पण्णरसमुहुत्ता राती भवति तत्थ णं कं हेतुं वदेज्जा ?, ता अयण्णं जंबुद्दीवे सव्वदीवसमुद्दाणं सव्वब्भंतराए जाव परिक्खेवेणं पं०, ता जता णं सूरिए सव्वब्भंतरमंडलं

सौजन्य :- अं. सौ. श्रीमति कल्पनाबेन धीरज गंगर मेराउ (कच्छ)

For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

उवसंकमित्ता चारं चरति तदा णं उत्तमकट्ठपत्ते उक्को० अट्ठारसमुहुत्ते दिवसे भवति जहण्णिया दुवालसमुहुत्ता राती भवति, से निक्खममाणे सूरिए नवं संवच्छरं अयमाणे पढमंसि अहोरत्तंसि अब्भिंतराणंतरं मंडलं उवसंकमित्ता चारं चरति, ता जया णं सूरिए अब्भिंतरांणतरं मंडलं उवसंकमित्ता चारं चरति तदा णं अट्ठारसमुहुत्ते दिवसे भवति दोहिं एगट्ठिभागमुहुत्तेहिं ऊणे दुवालसमुहुत्ता राती भवति दोहिं एगट्ठिभागमुहुत्तेहिं अधिया, से णिक्खममाणे सूरिए दोच्चंसि अहोरत्तंसि अब्भंतरं तच्चं मंडलं उवसंकमित्ता चारं चरति, ता जया णं सूरिए अब्भिंतरं तच्चं मंडलं उवसंकमित्ता चारं चरति तदा णं अट्ठारसमुहुत्ते दिवसे भवति चउहिं एगट्ठिभागमुहुत्तेहिं ऊणे दुवालसमुहुत्ता राती भवति चउहिं एगट्ठिभागमुहुत्तेहिं अहिया, एवं खलु एएणं उवाएणं णिक्खममाणे सूरिए तदाणंतराओ तयाणंतरं मंडलातो मंडलं संकममाणे २ दो दो एगट्ठीभागे मुहुत्ते एगमेगे मंडले दिवसखेत्तस्स णिवुड्ढेमाणे रतणिक्खेत्तस्स अभिवुड्ढेमाणे २ सव्वबाहिरमंडलं उवसंकमित्ता चारं चरति, ता जया णं सूरिए सव्वब्भंतरातो मंडलाओ सव्वबाहिरं मंडलं उवसंकमित्ता चारं चरति तता णं सव्वब्भंतरमंडलं पणिधाय एगेणं तेसीतेणं राइंदियसतेणं तिण्णि छावट्ठे एगट्ठिभागमुहुत्तसते दिवसखेत्तस्स णिवुडिढत्ता रतणिक्खेत्तस्स अभिवुडिढत्ता चारं चरति तदा णं उत्तमकट्ठपत्ता उक्कोसिया अट्ठारसमुहुत्ता राती भवति जहण्णए बारसमुहुत्ते दिवसे भवति, एस णं पढमे छम्मासे एस णं पढमस्स छम्मासस्स पज्जवसाणे, से पविसमाणे सूरिए दोच्चं छम्मासं अयमीणे (आयमाणे) पढमंसि अहोरत्तंसि बाहिराणंतरं मंडलं उवसंकमेत्ता चारं चरति, ता जया णं सूरिए बाहिराणंतरं मंडलं उवसंकमित्ता चारं चरति तदा णं अट्ठारसमुहुत्ता राती भवति दोहिं एगट्ठिभागमुहुत्तेहिं ऊणा दुवालसमुहुत्ते दिवसे भवति दोहिं एगट्ठिभागमुहुत्तेहिं अहिए, से पविसमाणे सूरिए दोच्चंसि अहोरत्तंसि बाहिरं तच्चं मंडलं उवसंकमित्ता चारं चरति, ता जया णं सूरिए बाहिरं तच्चं मंडलं उवसंकमित्ता चारं चरति तदा णं अट्ठारसमुहुत्ता राती भवति चउहिं एगट्ठिभागमुहुत्तेहिं ऊणा दुवालसमुहुत्ते दिवसे भवति चउहिं एगट्ठिभागमुहुत्तेहिं अहिए, एवं खलु एतेणुवाएणं पविसमाणे सूरिए तदाणंतरातो मंडलातो तयाणंतरं मंडलं संकममाणे दो दो एगट्ठिभागमुहुत्ते एगमेगे मंडले रतणिखेत्तस्स णिवुड्ढेमाणे २ दिवसखेत्तस्स अभिवुड्ढेमाणे २ सव्वब्भंतरं मंडलं उवसंकमित्ता चारं चरति, ता जया णं सूरिए सव्वबाहिराओ मंडलाओ सव्वब्भंतरं मंडलं उवसंकमित्ता चारं चरति तदा णं सव्वबाहिरं मंडलं पणिधाय एगेणं तेसीएणं राइंदियसतेणं तिन्नि छावट्ठे एगट्ठिभागमुहुत्तसते रयणिखेत्तस्स निवुड्ढित्ता दिवसखेत्तस्स अभिवड्ढित्ता चारं चरति तया णं उत्तमकट्ठपत्ते उक्कोसए अट्ठारसमुहुत्ते दिवसे भवति जहण्णिया दुवालसमुहुत्ता राती भवति, एस णं दोच्चे छम्मासे एस णं दुच्चस्स छम्मासस्स पज्जवसाणे एस णं आदिच्चे संवच्छरे एस णं आदिच्चस्स संवच्छरस्स पज्जवसाणे, इति खलु तस्सेवं आदिच्चस्स संवच्छरस्स सइं अट्ठारसमुहुत्ते दिवसे भवति सइं अट्ठारसमुहुत्ता राती भवति सइं दुवालसमुहुत्ते दिवसे भवति सइं दुवालसमुहुत्ता राती भवति, पढमे छम्मासे अत्थि अट्ठारसमुहुत्ता राई नत्थि अट्ठारसमुहुत्ते दिवसे अत्थि दुवालसमुहुत्ते दिवसे नत्थि दुवालसमुहुत्ता राई, दोच्चे छम्मासे अत्थि अट्ठारसमुहुत्ते दिवसे भवति णत्थि अट्ठारसमुहुत्ता राई अत्थि दुवालसमुहुत्ता राई नत्थि दुवालसमुहुत्ते दिवसे भवति, पढमे वा छम्मासे दोच्चे वा छम्मासे णत्थि पण्णरसमुहुत्ते दिवसे भवति णत्थि पण्णरसमुहुत्ता राई भवति, नन्नत्थ रातिंदियाणं वड्ढोवड्ढीए मुहुत्ताण वा चयोवचएणं, णण्णत्थ वा अणुवायगईए, 'पुव्वेण दुन्नि भागा० पाहुडियगाधाओ भाणितव्वाओ ☆☆☆।११॥

पढमस्स पाहुडस्स पढमं पाहुडपाहुडं १-१॥ ☆☆☆ ता कहं ते अद्धमंडलसंठिती आहि० ?, तत्थ खलु इमा दुविहा अद्धमंडलसंठिती पं० तं०-दाहिणा चेव उत्तरा चेव, ता कहं ते दाहिणअद्धमंडलसंठिती आहि० ?, ता अयण्णं जंबुद्दीवे दीवे सव्वदीवसमुद्दाणं जाव परिक्खेवेणं, ता जया णं सूरिए सव्वब्भंतरं दाहिणं अद्धमंडलसंठितिं उवसंकमित्ता चारं चरति तदा णं उत्तमकट्ठपत्ते उक्को० अट्ठारसमुहुत्ते दिवसे भवति जहण्णिया दुवालसमुहुत्ता राती भवति, से णिक्खममाणे सूरिए णवं संवच्छरं अयमाणे पढमंसि अहोरत्तंसि दाहिणाए अंतराए भागाते तस्सादिपदेसाते अब्भिंतराणंतरं उत्तरं अद्धमंडलसंठितिं उवसंकमित्ता चारं चरति तदा णं अट्ठारसमुहुत्ते दिवसे भवति दोहिं एगट्ठिभागमुहुत्तेहिं ऊणे दुवालसमुहुत्ता राती भवति दोहिं एगट्ठिभागमुहुत्तेहिं अधिया, से णिक्खममाणे सूरिए दोच्चंसि अहोरत्तंसि

Jain Education International 2010_03 For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

उत्तराए अंतराए भागाते तस्सादिपदेसाए अब्भिंतरं तच्चं दाहिणं अद्धमंडलसंठितिं उवसंकमित्ता चारं चरति तदा णं अट्ठारसमुहुत्ते दिवसे भवति चउहिं एगट्ठिभागमुहुत्तेहिं ऊणे दुवालसमुहुत्ता राई भवति चउहिं एगट्ठिभागमुहुत्तेहिं अधिया, एवं खलु एएणं उवाएणं णिक्खममाणे सूरिए तदणंतरातोऽणंतरं तंसि २ देसंसि तं तं अद्धमंडलसंठितिं संकममाणे २ दाहिणाए अंतराए भागाते तस्सादिपदेसाते सव्वबाहिरं उत्तरं अद्धमंडलसंठितिं उवसंकमित्ता चारं चरति, ता जया णं सूरिए सव्वबाहिरं उत्तरं अद्धमंडलसंठितिं उवसंकमित्ता चारं चरति तदा णं उत्तमकट्ठपत्ता उक्कोसिया अट्ठारसमुहुत्ता राई भवति जहण्णए दुवालसमुहुत्ते दिवसे भवति, एस णं पढमे छम्मासे एस णं पढमस्स छम्मासस्स पज्जवसाणे, से पविसमाणे सूरिए दोच्चं छम्मासं अयमाणे पढमंसि अहोरत्तंसि उत्तराते जाव पदेसाते बाहिराणंतरं दाहिणं अद्धमंडलसंठितिं उवसंकमित्ता चारं चरति, ता जया णं सूरिए बाहिराणंतरं दाहिणं अद्धमंडलसंठितिं उवसंकमित्ता चारं चरति तदा राइदिवसपमाणं तं चेव भाणियव्वं, एवं खलु एतेणं उवाएणं पविसमाणे सूरिए तदाणंतराओ तदाणंतरं तंसि २ देसंसि तं तं अद्धमंडलसंठितिं संकममाणे उत्तराए जाव पदेसाए सव्वब्भंतरं दाहिणं अद्धमंडलसंठितिं उवसंकमित्ता चारं चरति, ता जया णं सूरिए सव्वब्भंतरं दाहिणं अद्धमंडलसंठितिं उवसंकमित्ता चारं चरति तदा णं उत्तमकट्ठपत्ते उक्कोसए जाव दिवसे भवति जहण्णिया दुवालसमुहुत्ता राई भवति, एस णं दोच्चे छम्मासे एस णं दोच्चस्स छम्मासस्स पज्जवसाणे एस णं आदिच्चे संवच्छरे एस णं आदिच्चस्स संवच्छरस्स पज्जवसाणे।१२। ता कहं ते उत्तरा अद्धमंडलसंठिती आहि० ?, ता जता णं सूरिए सव्वब्भंतरे उत्तरं अद्धमंडलसंठितिं उवसंकमित्ता चारं चरति तदा णं उत्तमकट्ठपत्ते उक्कोसए अट्ठारसमुहुत्ते दिवसे भवति जहण्णिया दुवालसमुहुत्ता राई भवति, से णिक्खममाणे सूरिए णवं संवच्छरं अयमाणे पढमंसि अहोरत्तंसि उत्तराए जाव पएसाए अब्भंतरं दाहिणं अद्धमंडलसंठितिं उवसंकमित्ता चारं चरति, ततो जया णं सूरिए अब्भिंतराणंतरं दाहिणं जाव चारं चरति तया णं अट्ठारसमुहुत्ते दिवसे भवति दोहिं एगट्ठिभागमुहुत्तेहिं ऊणे दुवालसमुहुत्ता राती भवति दोहिं एगट्ठिभागमुहुत्तेहिं अहिया, से णिक्खममाणे सूरिए दोच्चंसि अहोरत्तंसि दाहिणाए जाव पदेसाए अब्भिंतरं तच्चं उत्तरं अद्धमंडलसंठितिं उवसंकमित्ता चारं चरति, ततो जंया णं अब्भिंतरं तच्चं उत्तरं जाव चारं चरति तता णं दिवसराइपमाणं तं चेव भाणियव्वं, एवं खलु एएणं उवाएणं णिक्खममाणे सूरिए तताणंतराओ तदाणंतरं मंडलाओ मंडलं संकममाणे तंसि २ देसंसि तं तं अद्धमंडलसंठितिं जाव चारं चरति, ता जया णं सूरिए सव्वबाहिरं दाहिणं अद्धमंडल जाव चारं चरति तदा णं उत्तमकट्ठपत्ता उक्कोसिया अट्ठारसमुहुत्ता राई भवति जहण्णए दुवालस जाव दिवसे भवइ, एस णं पढमे छम्मासे एस णं पढमस्स छम्मासस्स पज्जवसाणे, से पविसमाणे सूरिए दोच्चं छम्मासं अयमाणे पढमंसि अहोरत्तंसि दाहिणाए जाव पदेसाए बाहिराणंतरं उत्तरं अद्धमंडलसंठितिं उवसंकमित्ता चारं चरति, ततो जदा णं सूरिए बाहिराणंतरं अद्धमंडल जाव चारं चरति तता णं अट्ठारसमुहुत्ता राती भवति दोहिं एगट्ठिभागमुहुत्तेहिं ऊणा दुवालसमुहुत्ते दिवसे भवति दोहिं एगट्ठिभागमुहुत्तेहिं अहिये, से पविसमाणे सूरिए दोच्चंसि अहोरत्तंसि उत्तराए जाव पदेसाए बाहिरं तच्चं दाहिणं अद्धमंडलसंठितिं उव जाव चारं चरति, ता जया णं सूरिए बाहिरं तच्चं दाहिणं जाव चारं चरति तता णं अट्ठारसमुहुत्ता राती भवति चउहिं एगट्ठिभागमुहुत्तेहिं ऊणा दुवालसमुहुत्ते दिवसे भवति चउहिं एगट्ठिभागमुंहुत्तेहिं अहिए, एवं खलु एएणं उवाएणं पविसमाणे सूरिए तयाणंतराओ तताणंतरं० तंसि २ देसंसि तं तं अद्धमंडलसंठितिं संकममाणे दाहिणाए जाव पएसाए सव्वब्भंतरं उत्तरं अद्धमंडलसंठितिं उवसंकमित्ता चारं चरति, जेता णं सूरिए सव्वब्भंतरं उत्तरं अद्धमंडलसंठितिं जाव चारं चरति तदा णं उत्तमकट्ठपत्ते उक्कोसए अट्ठारसमुहुत्ते दिवसे भवति जहण्णिया दुवालसमुहुत्ता राती भवति, (राई, सूर्य० जहा दाहिणा तहा चेव णवरं उत्तरट्ठिओ अब्भिंतराणंतरं दाहिणं उवसंकमइ, दाहिणातो अब्भिंतरं तच्चं उत्तरं उवसंकमति, एवं खलु एएणं उवाएणं जाव सव्वबाहिरं दाहिणं उवसंकमति, (सव्वबाहिरातो) बाहिराणंतरं उत्तरं उवसंकमति उत्तरातो बाहिरं तच्चं दाहिणं तच्चातो दाहिणातो संकममाणे २ जाव सव्वब्भंतरं उवसंकमति तहेव) एस णं दोच्चे छम्मासे एस णं दोच्चस्स छम्मासस्स पज्जवसाणे एस णं आदिच्चे संवच्छरे एस णं आदिच्चस्स संवच्छरस्स पज्जवसाणे, गाहाओ ☆☆☆।१३॥१-२॥☆☆☆

Jain Education International 2010_03 For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

ता के ते चिन्नं पडिचरंति आहि० ?, तत्थ खलु इमे दुवे सूरिया पं० तं०-भारहे चेव सूरिए एरवए चेव सूरिए, ता एते णं दुवे सूरिया पत्तेयं २ तीसाए २ मुहुत्तेहिं एगमेगं अद्धमंडलं चरंति, सट्ठीए २ मुहुत्तेहिं एगमेगं मंडलं संघातंति, ता णिक्खममाणा खलु एते दुवे सूरिया णो अण्णमण्णस्स चिण्णं पडि चरंति, पविसमाणा खलु एते दुवे सूरिया अण्णमण्णस्स चिण्णं पडिचरंति, तं सतमेगं चोतालं, तत्थ कं हेउं वदेज्जा ?, ता अयण्णं जंबुद्दीवे दीवे जाव परिक्खेवेणं, तत्थ णं अयं भारहए चेव सूरिए जंबुद्दीवस्स पाईणपडीणायतउदीणदाहिणायताए जीवाए मंडलं चउवीसएणं सतेणं छेत्ता दाहिणपुरत्थिमिल्लंसि चउभागमंडलंसि बाणउतियसूरियगताइं जाइं सूरिए अप्पणा चेव चिण्णाइं पडिचरति उत्तरपच्चत्थिमिल्लंसि चउभागमंडलंसि एक्काणउतिं सूरियगताइं जाइं सूरिए अप्पणा चेव चिण्णाइं पडिचरति, तत्थ अयं भारहे सूरिए एरवतस्स सूरियस्स जंबुद्दीवस्स पाईणपडीणायताए उदीणदाहिणायताए जीवाए मंडलं चउवीसएणं सतेणं छेत्ता उत्तरपुरच्छिमिल्लंसि चउभागमंडलंसि बाणउतिं सूरियगताइं जाइं सूरिए परस्स चिण्णाइं पडिचरति दाहिणपच्चच्छिमिल्लंसि चउब्भागमंडलंसि एक्कणउतिं सूरियगताइं जाइं सूरिए परस्स चेव चिण्णाइं पडिचरति, तत्थ अयं एरवए सूरिए जंबुद्दीवस्स पाईणपडीणायताए उदीणदाहिणायताए जीवाए मंडलं चउवीसएणं सतेणं छेत्ता उत्तरपुरत्थिमिल्लंसि चउब्भागमंडलंसि बाणउतिं सूरियगयाइं जाइं सूरिए अप्पणा चिण्णाइं पडियरति दाहिणपुरत्थिमिल्लंसि चउभागमंडलंसि एक्काणउतिसूरियगताइं जाइं सूरिए अप्पणा चेव चिण्णाइं पडिचरति, तत्थ णं एयं एरवतिए सूरिए भारहस्स सूरियस्स जंबुद्दीवस्स पाईणपडीणायताए उदीणदाहिणायताए जीवाए मंडलं चउवीसएणं सतेणं छित्ता दाहिणपच्चत्थिमिल्लंसि चउभागमंडलंसि बाणउतिं सूरियगताइं जाइं सूरिए परस्स चिण्णाइं पडिचरति उत्तरपुरत्थिमिल्लंसि चउब्भागमंडलंसि एक्काणउतिं सूरियगताइं जाइं सूरिए परस्स चेव चिण्णाइं पडिचरति, ता निक्खममाणे खलु एते दुवे सूरिया णो अण्णमण्णस्स चिण्णं पडिचरंति, पविसमाणा खलु एते दुवे सूरिया अण्णमण्णस्स चिण्णं पडिचरंति, तं०-'सतमेगं चोतालं० गाहाओ ☆☆☆ ।१४॥१-३॥९ ☆☆☆ ता केवइयं एए दुवे सूरिया अण्णमण्णस्स अतरं कट्टु चारं चरंति आहि० ?, तत्थ खलु इमातो छ पडिवत्तीओ पं०, तत्थ एगे एव०-ता एगं जोयणसहस्स एगं च तेत्तीसं जोयणसतं अण्णमण्णस्स अंतरं कट्टु सूरिया चारं चरंति आहि० एगे एव०, एगे पुण०-ता एगं जोयणसहस्सं एगं चउतीसं जोयणसयं अन्नमन्नस्स अंतरं कट्टु सूरिया चारं चरंति आहि० एगे एव०, एगे पुण०-ता एगं जोयणसहस्सं एगं च पणतीसं जोयणसयं अण्णमण्णस्सं अंतरं कट्टु सूरिया चारं चरंति आहि० एगे एव०, एवं एगं दीवं एगं समुद्दं अण्णमण्णस्स अंतरं कट्टु०, एगे० दो दीवे दो समुद्दे०, एगे० तिण्णि दीवे तिण्णि समुद्दे०, वयं पुण एवं वयामो-ता पंच २ जोयणाइं पणतीसं च एगट्ठिभागे जोयणस्स एगमेगे मण्डले अण्णमण्णस्स अंतरं अभिवड्ढेमाणा वा निवड्ढेमाणा वा सूरिया चारं चरंति०, तत्थ णं को हेऊ आहि० ?, ता अंयण्णं जंबुद्दीवे जाव परिक्खेवेणं, ता जया णं एते दुवे सूरिया सव्वब्भंतरं मंडलं उवसंकमित्ता चारं चरंति तदा णं णवणउतिजोयणसहस्साइं छच्च चत्ताले जोयणसते अण्णमण्णस्स अंतरं कट्टु चारं चरंति आहि० तता णं उत्तमकट्ठपत्ते उक्कोसए अट्ठारसमुहुत्ते दिवसे भवति जहण्णिया दुवालसमुहुत्ता राई भवति, ते निक्खममाणा सूरिया णवं संवच्छरं अयमाणा पढमंसि अहोरत्तंसि अब्भिंतराणंतरं मंडलं उवसंकमित्ता चारं चरंति, ता जता णं एते दुवे सूरिया जाव चारं चरंति तदा णं नवनवतिं जोयणसहस्साइं छच्च पणताले जोयणसते पणतीसं च एगट्ठिभागे जोयणस्स अण्णमण्णस्स अंतरं कट्टु चारं चरंति आहि०, तता णं अट्ठारसमुहुत्ते दिवसे भवति दोहिं एगट्ठिभागमुहुत्तेहिं ऊणे दुवालसमुहुत्ता राती भवति दोहिं एगट्ठिभागमुहुत्तेहिं अधिया, ते णिक्खममाणा सूरिया दोच्चंसि अहोरत्तंसि अब्भिंतरं तच्चं मंडलं उवसंकमित्ता चारं चरंति, ता जता एते दुवे सूरिया अब्भिंतरं तच्चं मंडलं जाव चारं चरंति तया णं नवनवई जोयणसहस्साइं छच्च इक्कावण्णे जोयणसए नव य एगट्ठिभागे जोयणस्स अण्णमण्णस्स अंतरं कट्टु चारं चरंति० तदा णं अट्ठारसमुहुत्ते दिवसे भवइ चउहिं एगट्ठिभागमुहुत्तेहिं ऊणे दुवालसमुहुत्ता राई भवइ चउहिं एगट्ठिभागमुहुत्तेहिं अधिया, एवं खलु एतेणुवाएणं णिक्खममाणा एते दुवे सूरिया ततोणंतरातो तदाणंतरं मंडलाओ मंडलं संकममाणा २ पंच जोयणाइं पणतीसं च एगट्ठिभागे जोयणस्स एगमेगे मंडले अण्णमण्णस्स अंतरं अभिवड्ढेमाणा २ सव्वबाहिरं मंडलं उवसंकमित्ता चारं चरंति, ता जया णं एते दुवे सूरिया सव्वबाहिरं मंडलं उवसंकमित्ता चारं चरंति तता णं

Jain Education International 2010_03 For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

एगं जोयणसतसहस्सं छच्च सट्ठे जोयणसते अण्णमण्णस्स अतरं कट्टु चारं चरंति तता णं उत्तमकट्ठपत्ता जाव राई भवइजहण्णए दुवाल जाव दिवसे भवति, एस णं पढमे छम्मासे एस णं पढमस्स छम्मासस्स पज्जवसाणे, ते पविसमाणा सूरिया दोच्चं छम्मासं अयमाणा पढमंसि अहोरत्तंसि बाहिराणंतरं मंडलं उवसंकमित्ता चारं चरंति, ता जया णं एते दुवे सूरिया बाहिराणंतरं मंडलं उवसंकमित्ता चारं चरंति तदा णं एगं जोयणसयसहस्सं छच्च चउप्पण्णे जोयणसतें छव्वीसं च एगट्ठिभागे जोयणस्स अण्णमण्णस्स अंतरं कट्टु चारं चरंति तदा णं अट्ठारसमुहुत्ता राई भवई दोहिं एगट्ठिभागमुहुत्तेहिं ऊणा दुवालसमुहुत्ते दिवसे भवति दोहिं एगट्ठिभागमुहुत्तेहिं अहिए, ते पविसमाणा सूरिया दोच्चंसि अहोरत्तंसि बाहिरं तच्चं मंडलं उवसंकमित्ता चारं चरंति, ता जता णं एते दुवे सूरिया बाहिरं तच्चं मंडलं उवसंकमित्ता चारं चरंति तता णं एगं जोयणसयसहस्सं छच्च अडयाले जोयणसते बावण्णं च एगट्ठिभागे जोयणस्स अण्णमण्णस्स अंतरं कट्टु चारं चरंति तता णं अट्ठारसमुहुत्ता राई भवइ चउहिं एग जाव ऊणा दुवालसुमुहत्ते दिवसे भवति चउहिं जाव अहिए, एवं खलु एतेणुवाएणं पविसमाणा एते दुवे सूरिया ततोऽणंतरातो तदाणंतरं मंडलाओ मंडलं संकममाणा पंच जोयणाइं पणतीसं च एगट्ठिभागे जोयणस्स एगमेगे मंडले अण्णमण्णस्संतरं णिवुड्ढेमाणा २ सव्वब्भंतरं मंडलं उवसंकमित्ता चारं चरंति, जया णं एते दुवे सूरिया सव्वब्भंतरं मंडलं उवसंकमित्ता चारं चरंति तता णं णवणउतिं जोयणसहस्साइं छच्च चत्ताले जोयणसते अण्णमण्णस्स अंतरं कट्टु चारं चरंति तता णं उत्तमकट्ठपत्ते जाव दिवसे भवति जहण्णिया दुवालसमुहुत्ता राई भवति, एसणं दोच्चे छम्मासे एस णं दोच्चस्स छम्मासस्स पज्जवसाणे एस णं आइच्चे संवच्छरे एस णं आइच्चस्स संवच्छरस्स पज्जवसाणे ☆☆☆।१५॥१-४॥☆☆☆ ता केवतियं ते दीवं वा समुद्दं वा ओगाहित्ता सूरिए चारं चरति आहि० ?, तत्थ खलु इमाओ पंच पडिवत्तीओ पं०, एगे एव०-ता एगं जोयणसहस्सं एगं च तेत्तीसं जोयणसतं दीवं वा समुद्दं वा ओगाहित्ता सूरिए चारं (२०४) चरति एगे एव०, एगे पुण०-ता एगं जोयणसहस्सं एगं च चउत्तीसं जोयणसयं दीवं वा समुद्दं वा ओगाहित्ता सूरिए चारं चरति एगे एव०, एगे पुण०-ता एगं जोयणसहस्सं एगं च पणतीसं जोयणसतं दीवं वा समुद्दं वा ओगाहित्ता सूरिए चारं चरति एगे एव०, एगे पुण०-ता अवड्ढं दीवं वा समुद्दं वा ओगाहित्ता सूरिए चारं चरति एगे एव०, एगे पुण०-ता नो किंचि दीवं वा समुद्दं वा ओगाहित्ता सूरिए चारं चरति, तत्थ जे ते एवमाहंसु-ता एगं जोयणसहस्सं एगं च तेत्तीसं जोयणसतं दीवं वा समुद्दं वा ओगाहित्ता सूरिए चारं चरति ते एवमाहंसु-जता णं सूरिए सव्वब्भंतरं मंडलं उवसंकमित्ता चारं चरति तया णं जंबुद्दीवं एगं जोयणसहस्सं एगं च तेत्तीसं जोयणसतं ओगाहित्ता सूरिए चारं चरति तता णं उत्तमकट्ठपत्ते उक्कोसए अट्ठारसमुहुत्ते दिवसे भवति जहण्णिया दुवालसमुहुत्ता राई भवई, ता जया णं सूरिए सव्वबाहिरं मंडलं उवसंकमित्ता चारं चरइ तया णं लवणसमुद्दं एगं जोयणसहस्सं एगं च तेत्तीसं जोयणसयं ओगाहित्ता चारं चरइ तया णं उत्तमकट्ठपत्ता उक्कोसिया अट्ठारसमुहुत्ता राई भवति जहण्णए दुवालसमुहुत्ते दिवसे भवइ, एवं चोत्तीसेऽवि, पणतीसेऽवि एवं चेव भाणियव्वं, तत्थ जे ते एव० ता अवड्ढं दीवं वा समुद्दं वा ओगाहित्ता सूरिए चारं चरति ते एवमा०-जता णं सूरिए सव्वब्भंतरं मंडलं उवसंकमित्ता चारं चरति तता णं अवड्ढं जंबुद्दीवं० ओगाहित्ता चारं चरति, तता णं उत्तमकट्ठपत्ते उक्कोसए अट्ठारसमुहुत्ते दिवसे भवति जहण्णिया दुवालसमुहुत्ता राई भवति, एवं सव्वबाहिरएवि, णवरं अवड्ढं लवणसमुद्दं, तता णं राइंदियं तहेव, तत्थ जे ते एव०-ता णो किञ्चि दीवं वा समुद्दं वा ओगाहित्ता सूरिए चारं चरति ते एव०-ता जता णं सूरिए सव्वब्भंतरं मंडलं उवसंकमित्ता चारं चरति तता णो किंचि दीवं वा समुद्दं वा ओगाहित्ता सूरिए चारं चरति तता णं उत्तमकट्ठपत्ते उक्कोसए अट्ठारसमुहुत्ते दिवसे भवति तहेव, एवं सव्वबाहिरए मंडले, णवरं णो किंचि लवणसमुद्दं ओगाहित्ता चारं चरति, रातिंदियं तहेव एगे एव० ।१६। वयं पुण एवं वदामो-ता जया णं सूरिए सव्वब्भंतरं मंडलं उवसंकमित्ता चारं चरति तता णं जंबुद्दीवं असीतं जोयणसतं ओगाहित्ता चारं चरति, तदा णं उत्तमकट्ठपत्ते उक्कोसए अट्ठारसमुहुत्ते दिवसे भवति जहण्णिया दुवालसमुहुत्ता राई भवति, एवं सव्वबाहिरेवि, णवरं लवणसमुद्दं तिण्णि तीसे जोयणसते ओगाहित्ता चारं चरति तता णं उत्तमकट्ठपत्ता उक्कोसिया अट्ठारसमुहुत्ता राई भवइ जहण्णए दुवालसमुहुत्ते दिवसे भवति, गाथाओ भाणितव्वाओ ☆☆☆।१७॥१-५॥☆☆☆ ता केवतियं ते एगमेगेणं रातिंदिएणं विकंपइत्ता २ सूरिए चारं चरति आहि० ?, तत्थ खलु इमाओ सत्त पडिवत्तीओ पं०, तत्थेगे

Jain Education International 2010_03 For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

एव०-ता दो जोयणाइं अद्धदुचत्तालीसं तेसीतसयभागे जोयणस्स एगमेगेणं रातिदिएणं विकंपइत्ता २ सूरिए चारं चरति एगे एव०, एगे पुण०-ता अड्ढातिज्जाइं जोयणाइं एगमेगेणं राइंदिएणं विकंपइत्ता २ सूरिए चारं चरति एगे एव०, एगे पुण०-ता तिभागूणाइं तिन्नि जोयणाइं एगेमेगेणं राइंदिएणं विकंपइत्ता २ सूरिए चारं चरति एगे एव०, एगे पुण०-ता तिण्णि जोयणाइं अद्धसीतालीसं च तेसीतिसयभागे जोयणस्स एगमेगेणं राइंदिएणं विकंपइत्ता २ सूरिए चारं चरति एगे एव०, एगे पुण०-ता अद्धुट्ठाइं जोयणाइं एगमेगेणं राइंदिएणं विकंपइत्ता सूरिए चारं चरति एगे एव०, एगे०-ता चउब्भागूणाइं चत्तारि जोयणाइं एगमेगेणं राइंदिएणं विकंपइत्ता सूरिए चारं चरति एगे एव०, एगे पुण०-ता चत्तारि जोयणाइं अद्धबावण्णं च तेसीतिसतभागे जोयणस्स एगमेगेणं राइंदिएणं विकंपइत्ता सूरिए चारं चरति एगे०, वयं पुण एवं वदामो-ता दो जोयणाइं अडतालीसं च एगट्ठिभागे जोयणस्स एगमेगं मंडलं एगमेगेणं राइंदिएणं विकंपइत्ता सूरिए चारं चरति, तत्थ णं को हेतू इति वदेज्जा ?, ता अंयण्णं जंबुद्दीवे जाव परिक्खेवेणं, ता जता णं सूरिए सव्वब्भंतरं मंडलं उवसंकमित्ता चारं चरति तता णं उत्तमकट्ठपत्ते उक्कोसए अट्ठारसमुहुत्ते दिवसे भवति जंहण्णिया दुवालसमुहुत्ता राई भवइ, से णिक्खममाणे सूरिए णवं संवच्छरं अंयमाणे पढमंसि अहोरत्तंसि अब्भिंतराणंतरं मंडलं उवसंकमित्ता चारं चरति, ता जया णं सूरिए अब्भिंतराणंतरं मंडलं उवसंकमित्ता चारं चरति तदा णं दो जोयणाइं अडयालीसं च एगट्ठिभागे जोयणस्स एगेणं राइंदिएणं विकंपइत्ता सूरिए चारं चरति तता णं अट्ठारसमुहुत्ते दिवसे भवति दोहिं एगट्ठिभागमुहुत्तेहिं ऊणे दुवालसमुहुत्ता राई भवति दोहिं एगट्ठिभागमुहुत्तेहिं अहिया, से णिक्खममाणे सूरिए दोच्चंसि अहोरत्तंसि अब्भितरं तच्चं मंडलं उवसंकमित्ता चारं चरति, ता जया णं सूरिए अब्भिंतरं तच्चं मंडलं उवसंकमित्ता चारं चरति तता णं पंच जोयणाइं पणतीसं च एगट्ठिभागे जोयणस्स दोहिं राइंदिएहिं विकंपइत्ता चारं चरति, तता णं अट्ठारसमुहुत्ते दिवसे भवति चउहिं एगट्ठिभागमुहुत्तेहिं ऊणे दुवालसमुहुत्ता राई भवति चउहिं एगट्ठिभागमुहुत्तेहिं अधिया, एवं खलु एतेणं उवाएणं णिक्खममाणे सूरिए तताणंतराओ मंडलातो तदाणंतरं मंडलं संकममाणे दो २ जोयणाइं अडतालीसं च एगटिठभागे जोयणस्स एगमेगं मंडलं एगमेगेणं राइंदिएणं विकम्पमाणे २ सव्वबाहिरं मंडलं उवसंकमित्ता चारं चरति ता जया णं सूरिए सव्वब्भंतरातो मंडलातो सव्वबाहिरं मंडलं उवसंकमित्ता चारं चरति तया णं सव्वब्भंतरं मंडलं पणिहाय एगेणं तेसीतेणं राइंदियसतेणं पंच दसुत्तरजोयणसते विकंपइत्ता चारं चरति, तता णं उत्तमकट्ठपत्ता उक्कोसिया अट्ठारसमुहुत्ता राई भवइ जहण्णए दुवालसमुहुत्ते दिवसे भवति, एस णं पढमे छम्मासे एस णं पढमस्स छम्मासस्स पज्जवसाणे, से य पविसमाणे सूरिए दोच्चं छम्मासं अयमाणे पढमंसि अहोरत्तंसि बाहिराणंतरं मंडलं उवसंकमित्ता चारं चरति, ता जता णं सूरिए बाहिराणंतरं मंडलं उवसंकमित्ता चारं चरति तया णं दो दो जोयणाइं अडयालीसं च एगट्ठिभागे जोयणस्स एगेणं राइंदिएणं विकम्पइत्ता चारं चरति तता णं अट्ठारसमुहुत्ता राई भवति दोहिं एगट्ठिभागमुहुत्तेहिहं ऊणा दुवालसमुहुत्ते दिवसे भवति दोहिं एगट्ठिभागमुहुत्तेहिं अहिए, से पविसमाणे सूरिए दोच्चंसि अहोरत्तंसि बाहिरं तच्चं मंडलं उवसंकमित्ता चारं चरति, ता जया णं सूरिए बाहिरं तच्चं मंडलं उवसंकमित्ता चारं चरति तया णं पंच २ जोयणाइं पणतीसं च एगट्ठिभागे जोयणस्स दोहिं राइंदिएहिं विकंपइत्ता चारं चरति, राइंदिए तहेव, एवं खलु एतेणुवाएणं पविसमाणे सूरिए तताऽणंतरातो तयाणंतरं मंडलाओ मंडलं संकममाणे २ दो २ जोयणाइं अडयालीसं च एगट्ठिभागे जोयणस्स एगमेगेणं राइंदिएणं विकंपमाणे २ सव्वब्भंतरं मंडलं उवसंकमित्ता चारं चरति, ता जया णं सूरिए सव्वबाहिरातो मंडलातो सव्वब्भंतरं मंडलं उवसंकमित्ता चारं चरति तता णं सव्वबाहिरं मंडलं पणिधाय एगेणं तेसीएणं राइंदियसतेणं पंचदसुत्तरे जोयणसते विकंपइत्ता चारं चरति तता णं उत्तमकट्ठपत्ते उक्कोसए अट्ठारसमुहुत्ते दिवसे भवति जहण्णिया दुवालसमुहुत्ता राई भवइ, एस णं दोच्चे छम्मासे एस णं दोच्चस्स छम्मासस्स पज्जवसाणे एस णं आदिच्चे संवच्छरे एस णं आदिच्चस्स संवच्छरस्स पज्जवसाणे ☆☆☆।१८।१-६॥ ☆☆☆ ता कहं ते मंडलसंठिती आहि० ?, तत्थ खलु इमातो अट्ठ पडिवत्तीओ पं०, तत्थेगे एव०-ता सव्वावि मंडलवता समचउरंससंठाणसंठिता पं० एगे एव०, एगे पुण०-ता सव्वावि णं मंडलवता विसमचउरंससंठाणसंठिया पं० एगे एव०, एगे पुण०-सव्वावि

Jain Education International 2010_03 For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

णं मंडलवया समचदुक्कोणसंठिता पं० एगे ए०, एगे पुण०-सव्वावि मंडलवता विसमचउक्कोणसंठिया पं० एगे एव०, एगे पुण०-ता सव्वावि मंडलवया समचक्कवालसंठिया पं० एगे एव०, एगे पुण०-ता सव्वावि मंडलवता विसमचक्कवालसंठिया पं० एगे एव०, एगे पुण०-ता सव्वावि मंडलवता चक्कद्धचक्कवालसंठिया पं०, एगे पुण०-ता सव्वावि मंडलवता छत्तागारसंठिया पं० एगे एव०, तत्थ जे ते एवमाहंसु-ता सव्वावि मंडलवता छत्ताकारसंठिता पं० एतेणं णएणं णायव्वं, णो चेव णं इतरेहिं, पाहुडगाहाओ भाणियव्वाओ ☆☆☆ ।१९॥१-७॥☆☆☆ ता सव्वावि णं मंडलवया केवतियं बाहल्लेणं केवतियं आयामविक्खंभेणं केवतियं परिक्खेवेणं आहि० ?, तत्थ खलु इमा तिण्णि पडिवत्तीओ पं०, तत्थेगे एव०-ता सव्वावि णं मंड़लवता जोयणं बाहल्लेणं एगं जोयणसहस्सं एगं तेत्तीसं च जोयणसतं आयामविक्खंभेणं तिण्णि जोयणसहस्साइं तिण्णि य नवणउए जोयणसते परिक्खेवेणं पं० एगे एव०, एगे पुण०-ता सव्वावि णं मंडलवता जोयणं बाहल्लेणं एगं जोयणसहस्सं एगं च चउत्तीसं जोयणसयं आयामविक्खंभेणं तिण्णि जोयणसहस्साइं चत्तारि बिउत्तरे जोयणसते परिक्खेवेणं पं० एगे एव०, एगे पुण०-ता जोयणं बाहल्लेणं एगं जोयणसहस्सं एगं च पणतीसं जोयणसतं आयामविक्खंभेणं तिन्नि जोयणसहस्साइं चत्तारि पंचुत्तरे जोयणसते परिक्खेवेणं पं० एगे एव०, वयं पुण०-ता सव्वावि मंडलवता अडतालीसं एगट्ठिभागे जोयणस्स बाहल्लेणं अणियता आयामविक्खंभेणं परिक्खेवेणं च आहि०, तत्थ णं को हेऊत्ति वदेज्जा ?, ता अयण्णं जंबुद्दीवे जाव परिक्खेवेणं, ता जया णं सूरिए सव्वब्भंतरं मंडलं उवसंकमित्ता चारं चरति तया णं सा मंडलवता अडतालीसं एगट्ठिभागे जोयणस्स बाहल्लेणं णवणउई जोयणसहस्साइं छच्च चत्ताले जोयणसते आयामविक्खंभेणं तिण्णि जोयणसतसहस्साइं पण्णरस जोयणसहस्साइं एगूणणउती जोयणाइं किंचिविसेसाहिए परिक्खेवेणं तता णं उत्तमकट्ठपत्ते उक्कोसए अट्ठारसमुहुत्ते दिवसे भवति जहण्णिया दुवालसमुहुत्ता राई भवति, से णिक्खममाणे सूरिए णवं संवच्छरं अयमाणे पढमंसि अहोरत्तंसि अब्भिंतराणंतरं मंडलं उवसंकमित्ता चारं चरति, ता जया णं सूरिए अब्भितराणंतरं मंडलं उवसंकमित्ता चारं चरति तदा णं सा मंडलवता अडयालीसं एगट्ठिभागे जोयणस्स बाहल्लेणं णवणवई जोयणसहस्साइं छच्च पणताले जोयणसते पणतीसं च एगट्ठिभागे जोयणस्स आयामविक्खंभेणं तिण्णि जोयणसतसहस्साइं पन्नरसं च सहस्साइं एगं सत्तउत्तरं जोयणसतं किंचिविसेसूणं परिक्खेवेणं तदा णं दिवसरातिप्पमाणं तहेव, से णिक्खममाणे सूरिए दोच्चंसि अहोरत्तंसि अब्भिंतरं तच्चं मंडलं उवसंकमित्ता चारं चरति, ता जया णं सूरिए अब्भिंतरं तच्चं मंडलं उवसंकमित्ता चारं चरति तया णं सा मंडलवता अडतालीसं एगट्ठिभागे जोयणस्स बाहल्लेणं णवणवती जोयणसहस्साइं छच्च एक्कावण्णे जोयणसते णव य एगट्ठिभागा जोयणस्स आयामविक्खंभेणं तिण्णि जोयणसयसहस्साइं पन्नरस य सहस्साइं एगं च पणवीसं जोयणसयं परिक्खेवेणं पं० तता णं दिवसराई तहेव, एवं खलु एतेण उवाएणं निक्खममाणे सूरिए तताणंतरातो तदाणंतरं मंडलातो मंडलं उवसंकममाणे २ पंच २ जोयणाइं पणतीसं च एगट्ठिभागे जोयणस्स एगमेगे मंडले विक्खंभं अभिवड्ढेमाणे २ अट्ठारस २ जोयणाइं परिरयवुड्ढिं अभिवड्ढेमाणे २ सव्वबाहिरं मंडलं उवसंकमित्ता चारं चरति, ता जया णं सूरिए सव्व जाव चारं चरति तता णं सा मंडलवता अडतालीसं एगट्ठिभागा जोयणस्स बाहल्लेणं एगं च जोयणसयसहस्सं छच्च सद्धे जोयणसते आयामविक्खंभेणं तिन्नि जोयणसयसहस्साइं अट्ठारस सहस्साइं तिण्णि य पण्णरसुत्तरे जोयणसते परिक्खेवेणं तदा णं उक्कोसिया अट्ठारसमुहुत्ता राई भवति जहण्णए दुवालसमुहुत्ते दिवसे भवति, एस णं पढमे छम्मासे एस णं पढमस्स छम्मासस्स पज्जवसाणे, से पविसमाणे सूरिए दोच्चं छम्मासं अयमाणे पढमंसि अहोरत्तंसि बाहिराणंतरं मंडलं उवसंकमित्ता चारं चरति ता जया णं सूरिए बाहिराणंतरं मंडलं उवसंकमित्ता चारं चरति तता णं सा मंडलवता अडतालीसं एगट्ठिभागे जोयणस्स बाहल्लेणं एगं जोयणसयसहस्सं छच्च चउप्पण्णे जोयणसते छव्वीसं च एगट्ठिभागे जोयणस्स आयामविक्खंभेणं तिन्नि जोयणसतसहस्साइं अट्ठारससहस्साइं दोण्णि य सत्ताणउते जोयणसते परिक्खेवेणं पं०, तता णं राइंदियं तहेव, से पविसमाणे सूरिए दोच्चंसि अहोरत्तंसि बाहिरं तच्चं मंडलं उवसंकमित्ता चारं चरंति, ता जया णं सूरिए बाहिरं तच्चं मंडलं उवसंकमित्ता चारं चरति तता णं सा मंडलवता अडयालीसं एगट्ठिभागे जोयणस्स बाहल्लेणं एगं जोयणसतसहस्सं छच्च अडयाले जोयणसए बावण्णं च एगट्ठिभागे जोयणस्स आयामविक्खंभेणं

Jain Education International 2010_03 For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

तिण्णि जोयणसतसहस्साइं अट्ठारस सहस्साइं दोण्णि अउणासीते जोयणसते परिक्खेवेणं पं०, दिवसराई तहेव, एवं खलु एतेणुवाएणं पविसमाणे सूरिए तताणंतरातो तदाणंतरं मंडलातो मंडलं संकममाणे २ पंच २ जोयणाइं पणतीसं च एगट्ठिभागे जोयणस्स एगमेगे मंडले विक्खंभवुड्ढि णिवुड्ढेमाणे २ अट्ठारस जोयणाइं परिरयवुड्ढि णिवुड्ढेमाणे २ सव्वब्भंतरं मंडलं उवसंकमित्ता चारं चरति, ता जता णं सूरिए सव्वब्भंतरं मंडलं उवसंकमित्ता चारं चरति तता णं सा मंडलवया अडयालीसं एगट्ठिभागे जोयणस्स बाहल्लेणं णवणउतिं जोयणसहसाइं छच्च चत्ताले जोयणसए आयामविक्खंभेणं तिण्णि जोयणसयसहस्साइं पण्णरस य सहस्साइं अउणाणउतिं च जोयणाइं किंचिविसेसाहियाइं परिक्खेवेणं पं०, तता णं उत्तमकट्ठपत्ते उक्कोसए अट्ठारसमुहुत्ते दिवसे भवति जहण्णिया दुवालसमुहुत्ता राई भवति, एस णं दोच्चे छम्मासे एस णं दोच्चस्स छम्मासस्स पज्जवसाणे एस णं आदिच्चे संवच्छरे एस णं आदिच्चस्स संवच्छरस्स पज्जवसाणे, ता सव्वावि णं मंडलवता अडतालीसं एगट्ठिभागे जोयणस्स बाहल्लेणं, सव्वावि णं मंडलंतरिया दो जोयणाइं विक्खंभेणं, एस णं अद्धा तेसीयसतपडुप्पण्णो पंच दसुत्तरे जोयणसते आहि०, ता अब्भिंतरातो मंडलवताओ बाहिरं मंडलवतं बाहिराओ वा अब्भिंतरं मंडलवतं एस णं अद्धा केवतियं आहि० ?, ता पंच दसुत्तरजोयणसते आहि०, अब्भिंतराते मंडलवताते बाहिरा मंडलवया बाहिराओ मंडलवतातो अब्भिंतरा मंडलवता एस णं अद्धा केवतियं आहि० ?, ता पंच दसुत्तरे जोयणसते अडतालीसं च एगट्ठिभागे जोयणस्स आहि०, ता अब्भंतरातो मंडलवतातो बाहिरमंडलवता बाहिरातो० अब्भंतरमंडलवता एस णं अद्धा केवतियं आहि० ?, ता पंच णवुत्तरे जोयणसते तेरस य एगट्ठिभागे जोयणस्स आहि०, अब्भिंतराते मंडलवताए बाहिरा मंडलवया बाहिराते मंडलवताते अब्भंतरमंडलवया एस णं अद्धा केवतियं आहि० ?, ता पंच दसुत्तरे जोयणसए आहि० 卐卐卐 ।२०॥१-८ **पढमं पाहुडं १॥** 卐卐卐 ता कहं ते तेरिच्छगती आहि० ?, तत्थ खलु इमाओ अट्ठ पडिवत्तीओ पं०, तत्थेगे एव०-ता पुरच्छिमातो लोअंतातो पादो मरीची आगासंसि उट्ठेति, से णं इमं लोयं तिरियं करेइ त्ता पच्चत्थिमंसि लोगन्तंसि सायं सूरिए आगासंसि विद्धंसति एगे एव०, एगे पुण०-ता पुरच्छिमातो लोअंतातो पातो सूरिए आगासंसि उट्ठेति, से णं इमं लोयं तिरियं करेति त्ता पच्चत्थिमंसि लोयंतंसि सायं सूरिए आगासंसि विद्धंसति एगे एव०, एगे पुण०-ता पुरत्थिमाओ लोयंतातो पादो सूरिए आगासंसि उत्तिट्ठति, से णं इमं लोयं तिरियं करेति त्ता पच्चत्थिमंसि लोयंतंसि सायं सूरिए आगासं अणुपविसति त्ता अहे पडियागच्छति त्ता पुणरवि अवरभूपुरत्थिमातो लोयंतातो पातो सूरिए आगासंसि उत्तिट्ठति एगे एव०, एगे पुण०-ता पुरत्थिमाओ लोगंताओ पाओ सूरिए पुढवीओ उत्तिट्ठति, से णं इमं लोयं तिरियं करेति त्ता पच्चत्थिमिल्लंसि लोयंतंसि सायं सूरिए पुढवीकायंसि विद्धंसइ एगे एव०, एगे पुण०-पुरत्थिमाओ लोयंताओ पाओ सूरिए पुढवीओ उत्तिट्ठइ, से णं इमं तिरियं लोयं करेइ त्ता पच्चत्थिमंसि लोयंतंसि सायं सूरिए पुढवीकायं अणुपविसइ त्ता अहे पडियागच्छइ त्ता पुणरवि अवरभूपुरत्थिमाओ लोगंताओ पाओ सूरिए पुढवीओ उत्तिट्ठइ एगे एव०, एगे पुण०-ता पुरत्थिमिल्लाओ लोयंताओ पाओ सूरिए आउकायंसि उत्तिट्ठइ, से णं इमं तिरयं लोयं तिरियं करेइ त्ता पच्चत्थिमंसि लोयंतंसि सायं सूरिए आउकायंसि विद्धंसति एगे एव०, एगे पुण०-ता पुरत्थिमातो लोगंतातो पाओ सूरिए आउओ उत्तिट्ठत्ति, से णं इमं तिरियं लोयं तिरियं करेति त्ता पच्चत्थिमंसि लोयंतंसि सायं सूरिए आउकायंसि पविसइ त्ता अहे पडियागच्छति त्ता पुणरवि अवरभूपुरत्थिमातो लोयंतातो पादो सूरिए आउओ० एगे एव०, एगे पुण एव०-ता पुरत्थिमातो लोयंताओ बहूइं जोयणाइं बहूइं जोयणसताइं बहूइं जोयणसहस्साइं उड्ढं दूरं उप्पतित्ता एत्थ णं पातो सूरिए आगासंसि उत्तिट्ठति, से णं इमं दाहिणड्ढं लोयं तिरियं करेति त्ता उत्तरद्धलोयं तमेव रातो, से णं इमं उत्तरद्धलोयं तिरियं करेइ त्ता दाहिणद्धलोयं तमेव राओ, से णं इमाइं दाहिणुत्तरड्ढलोयाइं तिरियं करेइ त्ता पुरत्थिमाओ लोयंतातो बहूइं जोयणाइं तं चेव उड्ढं दूरं उप्पतित्ता एत्थ णं पातो सूरिए आगासंसि उत्तिट्ठति एगे एव०, वयं पुण एवं वयामो-ता जंबुद्दीवस्स पाईणपडीणायतउदीणदाहिणायताए जीवाए मंडलं चउव्वीसेणं सतेणं छेत्ता दाहिणपुरच्छिमंसि उत्तरपच्चत्थिमंसि य चउब्भागमंडलंसि इमीसे रयणप्पभाए पुढवीए बहुसमरमणिज्जातो भूमिभागातो अट्ठ जोयणसताइं उड्ढं

Jain Education International 2010_03 For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

उप्पतित्ता एत्थ णं पादो दुवे सूरिया आगासाओ उत्तिट्ठंति, ते णं इमाइं दाहिणुत्तराइं जंबुद्दीवभागाइं तिरियं करेंति त्ता पुरत्थिमपच्चत्थिमाइं जंबुद्दीवभागाइं तमेव रातो, ते णं इमाइं पुरच्छिमपच्छत्थिमाइं जंबुद्दीवभागाइं तिरियं करेंति त्ता दाहिणुत्तराइं जंबुद्दीवभागाइं तमेव रातो, ते णं इमाइं दाहिणुत्तराइं पुरच्छिमपच्चत्थिमाणिय जंबुद्दीवभागाइं तिरियं करेंति त्ता जंबुद्दीवस्स पाईणपडीणायत जाव एत्थ णं पादो दुवे सूरिया आगासंसि उत्तिट्ठंति ☆☆☆ ।२१॥२-१॥ ☆☆☆ ता कहं ते मंडलाओ मंडलं संकममाणे २ सूरिए चारं चरति आहि० ?, तत्थ खलु इमातो दुवे पडिवत्तीओ पं०, तत्थेगे एव०-ता मंडलाओ मंडलं संकममाणे २ सूरिए भेयघाएणं संकामइ एगे एव०, एगे पुण०-ता मंडलातो मंडलं संकममाणे सूरिए कण्णकलं णिव्वेढेति, तत्थ जे ते एव०-ता मंडलातो मंडलं संकममाणे २ सूरिए भेयघाएणं संकामइ तेसिं णं अयं दोसे-ता जेणंतरेणं मंडलातो मंडलं संकममाणे २ सूरिए भेयघाएणं संकमति एवतियं च णं अद्धं पुरतो न गच्छति, पुरतो अगच्छमाणे मंडलकालं परिहवेति, तेसिं णं अयं दोसे, तत्थ जे ते एव०-ता मंडलातो मंडलं संकममाणे सूरिए कण्णकलं णिव्वेढेति तेसिं णं अयं विसेसे-ता जेणंतरेणं मंडलातो मंडलं संकममाणे सूरिए कण्णकलं णिव्वेढेति एवतियं च णं अद्धं पुरतो गच्छति, पुरतो गच्छमाणे मंडलकालं ण परिहवेति, तेसिं णं अयं विसेसे, तत्थ जे ते एव०-मंडलातो मंडलं संकममाणे सूरिए कण्णकलं णिव्वेढेति एतेणं णएणं णेतव्वं, णो चेव णं इतरेणं ☆☆☆ ।२२॥ २.२॥ ☆☆☆ ता केवतियं ते खेत्तं सूरिए एगमेगेणं मुहुत्तेणं गच्छति आहि० ?, तत्थ खलु इमातो चत्तारि पडिवत्तीओ पं० तं०-तत्थ एगे एव०-ता छ छ जोयणसहस्साइं सूरिए एगमेगेणं मुहुत्तेणं गच्छति०, एगे पुण०-ता पंच २ जोयणसहस्साइं सूरिए एगमेगेणं मुहुत्तेणं गच्छति एगे०, एगे पुण०-ता चत्तारि २ जोयणसहस्साइं सूरिए एगमेगेणं मुहुत्तेणं गच्छति एगे एव०, एगे पुण०-ता छवि पंचवि चत्तारिवि जोयणसहस्साइं सूरिए एगमेगेणं मुहुत्तेणं गच्छति एगे०, तत्थ जे ते एवमाहंसु ता छ छ जोयणसहस्साइं सूरिए एगमेगेणं मुहुत्तेणं गच्छति ते एव०-जता णं सूरिए सव्वब्भंतरं मंडलं उवसंकमित्ता चारं चरति तया णं उत्तमकट्ठपत्ते उक्कोसे अट्ठारसमुहुत्ते दिवसे भवति जहण्णिया दुवालसमुहुत्ता राई भवति, तंसि च णं दिवसंसि एगं जोयणसतसहस्सं अट्ठ य जोयणसहस्साइं तावक्खेत्ते पं०, ता जया णं सूरिए सव्वबाहिरं मंडलं उवसंकमित्ता चारं चरति तया णं उत्तमकट्ठपत्ता उक्कोसिया अट्ठारसमुहुत्ता राई भवति जहण्णए दुवालसमुहुत्ते दिवसे भवति, तंसि च णं दिवसंसि बावत्तरिं जोयणसहस्साइं तावक्खेत्ते पं०, तया णं छ छ जोयणसहस्साइं सूरिए एगमेगेणं मुहुत्तेणं गच्छति, तत्थ जे ते एवमाहंसु-ता पंच पंच जोयणसहस्साइं सूरिए एगमेगेणं मुहुत्तेणं गच्छति ते एव०, ता जता णं सूरिए सव्वब्भंतरं मंडलं उवसंकमित्ता चारं चरति तहेव दिवसराइप्पमाणं, तंसि च णं दिवसंसि तावखेत्ते नउइजोयणसहस्साइं, ता जया णं सव्वबाहिरं मंडलं उवसंकमित्ता चारं चरति तता णं तं चेव राइंदियप्पमाणं तंसि च णं दिवसंसि सट्ठिं जोयणसहस्साइं तावक्खेत्ते पं०, तता णं पंच २ जोयणसहस्साइं सूरिए एगमेगेणं मुहुत्तेणं गच्छति, तत्थ जे ते एव०-ता चत्तारि जोयणसहस्साइं सूरिए एगमेगेणं मुहुत्तेणं गच्छति ते एवमा०-ता जया णं सूरिए सव्वब्भंतरं मंडलं उवसंकमित्ता चारं चरति तता णं दिवसराई तहेव, तंसि च णं दिवसंसि बावत्तरिं जोयणसहस्साइं तावक्खेत्ते पं०, ता जया णं सूरिए सव्वबाहिरं मंडलं उवसंकमित्ता चारं चरति तता णं राइंदियं तथेव, तंसि च णं दिवसंसि अडयालीसं जोयणसहस्साइं तावक्खेत्ते पं०, तता णं चत्तारि जोयणसहस्साइं सूरिए एगमेगेणं मुहुत्तेणं गच्छति, तत्थ जे ते एवमाहंसु छवि पंचवि चत्तारिवि जोयणसहस्साइं सूरिए एगमेगेणं मुहुत्तेणं गच्छति ते एव०, ता सूरिए णं उग्गमणमुंहुत्तंसि य अत्थमणमुहुत्तंसि य सिग्घगती भवति तता णं छ छ जोयणसहस्साइं एगमेगेणं मुहुत्तेणं गच्छति, मज्झिमतावखेत्तं समासादेमाणे २ सूरिए मज्झिमगती भवति तता णं पंच २ जोयणसहस्साइं एगमेगेणं मुहुत्तेणं गच्छति, मज्झिमं तावखेत्तं संपत्ते सूरिए मंदगती भवति तता णं चत्तारि जोयणसहस्साइं एगमेगेणं मुहुत्तेणं गच्छति, तत्थ को हेऊत्ति वदेज्जा ?, ता अयण्णं जंबुद्दीवे २ जाव परिक्खेवेणं, ता जया णं सूरिए सव्वब्भंतरं मंडलं उवसंकमित्ता चारं चरति तता णं दिवसराई तहेव, तंसि च णं दिवसंसि एक्काणउति जोयणसहस्साइं तावखेत्ते पं०, ता जया णं सूरिए सव्वबाहिरं मंडलं उवसंकमित्ता चारं चरति तता णं राइंदियं तहेव, तस्सिं च णं दिवसंसि एगट्ठिजोयणसहस्साइं तावखेत्ते पं०, तता

Jain Education International 2010_03 For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

णं छवि पंचवि चत्तारिवि जोयणसहस्साइं सूरिए एगमेगेणं मुहुत्तेणं गच्छति एगे एव०, वयं पुण एवं वदामो-ता सातिरेगाइं पंच जोयणसहस्साइं सूरिए एगमेगेणं मुहुत्तेणं गच्छति, तत्थ को हेतूत्ति वदेज्जा ?, ता अयण्णं जंबुद्दीवे० परिक्खेवेणं, ता जता णं सूरिए सव्वब्भंतरं मंडलं उवसंकमित्ता चारं चरति तता णं पंच २ जोयणसहस्साइं दोण्णि य एकावण्णे जोयणसए एगूणतीसं च सट्ठिभागे जोयणस्स एगमेगेणं मुहुत्तेणं गच्छति, तता णं इधगतस्स मणुस्सस्स सीतालीसाए जोयणसहस्सेहिं दोहि य तेवट्ठेहिं जोयणसतेहिं एक्कवीसाए य सट्ठिभागेहिं जोयणस्स सूरिए चक्खुप्फासं हव्वमागच्छति, तया णं दिवसराई तहेव, से णिक्खममाणे सूरिए णवं संवच्छरं अयमाणे पढमंसि अहोरत्तंसि अब्भिंतराणंतरं मंडलं उवसंकमित्ता चारं चरति, ता जया णं सूरिए अब्भिंतराणंतरं मंडलं उवसंकमित्ता चारं चरति तता णं पंच २ जोयणसहस्साइं दोण्णि य एकावण्णे जोयणसते सीतालीसं च सट्ठिभागे जोयणस्स एगमेगेणं मुहुत्तेणं गच्छति, तता णं इहगयस्स मणूसस्स सीतालीसाए जोयणसहस्सेहिं अउणासीते य जोयणसतेण सत्तावण्णाए य सट्ठिभागेहिं जोयणस्स सट्ठिभागं च एगट्ठिहा छेत्ता अउणावीसाए चुण्णिरयाभागेहिं सूरिए चक्खुप्फासं हव्वमागच्छति, तता णं दिवसराई तहेव, (१८-१/६१ १२-२/६२), से णिक्खममाणे सूरिए दोच्चंसि अहोरत्तंसि अब्भिंतरं तच्चं मंडलं उवसंकमित्ता चारं चरति, ता जया णं सूरिए अब्भिंतरं तच्चं मंडलं उवसंकमित्ता चारं चरति तता णं पंच २ जोयणसहस्साइं दोण्णि य वावण्णे जोयणसते पंच य सट्ठिभागे जोयणस्स एगमेगेणं मुहुत्तेणं गच्छति तता णं इहगतस्स मणू० सीतालीसाए जोयणसहस्सेहिं छण्णउतीए य जोयणेहिं तेत्तीसाए य सट्ठिभागेहिं जोयणस्स सट्ठिभागं च एगट्ठिधा छेत्ता दोहिं चुण्णियाभागेहिं सूरिए चक्खुफासं हव्वमागच्छति, तता णं दिवसराई तहेव, एवं खलु एतेणं उवाएणं णिक्खममाणे सूरिए तताणंतराओ तदाणंतरं मंडलातो मंडलं संकममाणे २ अट्ठारस २ सट्ठिभागे जोयणस्स एगमेगे मंडले मुहुत्तगतिं अभिवुड्ढेमाणे २ चुलसीतिं २ सताइं जोयणाइं पुरिसच्छायं णिवुड्ढेमाणे २ सव्वबाहिरं मंडलं उवसंकमित्ता चारं चरति, ता जया णं सूरिए सव्वबाहिरं मंडलं उवसंकमित्ता चारं चरति तता णं पंच २ जोयणसहस्साइं तिन्नि य पंचुत्तरे जोयणसते पण्णरस य सट्ठिभागे जोयणस्स एगमेगेणं मुहुत्तेणं गच्छति, तता णं इहगतस्स मणूसस्स एक्कतीसाए जोयणसहस्सेहिं अट्ठहिं एक्कतीसेहिं जोयणसतेहिं तीसाए य सट्ठिभागेहिं जोयणस्स सूरिए चक्खुफासं हव्वमागच्छति तता णं उत्तमकट्ठपत्ता उक्कोसिया अट्ठारसमुहुत्ता राई भवइ जहण्णए दुवालसमुहुत्ते दिवसे भवति, एस णं पढमे छम्मासे एस णं पढमस्स छम्मासस्स पज्जवसाणे, से पविसमाणे सूरिए दोच्चं छम्मासं अयमाणे पढमंसि अहोरत्तंसि बाहिराणंतरं मंडलं उवसंकमित्ता चारं चरति, ता जता णं सूरिए बाहिराणंतरं मंडलं उवसंकमित्ता चारं चरति तता णं पंच २ जोयणसहस्साइं तिण्णि य चउरूत्तरे जोयणसते सत्तावण्णं च सट्ठिभाए जोंयणस्स एगेमेगेणं मुहुत्तेणं गच्छति, तता णं इधगतस्स मणूसस्स एक्कतीसाए जोयणसहस्सेहिं नवहि य सोलेहिं जोयणसएहिं एगूणचालीसाए य सट्ठिभागेहिं जोयणस्स सट्ठिभांगं च एगट्ठिहा छेत्ता सट्ठीए चुण्णियाभागेहिं सूरिए चक्खुफासं हव्वमागच्छति, तता णं राइंदियं तहेव, से पविसमाणे सूरिए दोच्चंसि अहोरत्तंसि बाहिरं तच्चं मंडलं उवसंकमित्ता चारं चरति, ता जया णं सूरिए बाहिरं तच्चं मंडलं उवसंकमित्ता चारं चरति तता णं पंच पंच जोयणसहस्साइं तिन्नि य चउरूत्तरे जोयणसते ऊतालीसं च सट्ठिभागे जोयणस्स एगमेगेणं मुहुत्तेणं गच्छति, तता णं इहगतस्स मणूसस्स एगाधिगेहिं वत्तीसाए जोयणसहस्सेहिं एकूणवण्णाए य सट्ठिभागेहिं जोयणस्स सट्ठिभागं च एगट्ठिधा छेत्ता तेवीसाए चुण्णियाभागेहिं सूरिए चक्खुप्फासं हव्वमागच्छति, राइंदियं तहेव, एवं खलु एतेणुवाएणं पविसमाणे सूरिए तताणंतरातो तताणंतरं मंडलातो मंडलं संकममाणे २ अट्ठारस २ सट्ठिभागे जोयणस्स एगमेगे मंडले मुहुत्तगतिं णिवुड्ढेमाणे २ सातिरेगाइं पंचासीतिं २ जोयणाइं पुरिसच्छायं अभिवुड्ढेमाणे २ सव्वब्भंतरं मंडलं उवसंकमित्ता चारं चरति, ता जता णं सूरिए सव्वब्भंतरं मंडलं उवसंकमित्ता चारं चरति तता णं पञ्च २ जोयणसहस्साइं दोण्णि य एक्कावण्णे जोयणसए अगुणतीसं च सट्ठिभागे जोयणस्स एगमेगेणं मुहुत्तेणं गच्छति, तता णं इहगयस्स मणूसस्स सीतालीसाए जोयणसहस्सेहिं तेवट्ठेहिं जोयणसतेहिं य एक्कवीसाए य सट्ठिभागेहिं जोयणस्स सूरिए चक्खुफासं हव्वमागच्छति, तता णं उत्तमकट्ठपत्ते उक्कोसए अट्ठारसमुहुत्ते दिवसे भवति जहण्णिया दुवालसमुहुत्ता राई भवति, एस णं दोच्चे छम्मासे एस णं दोच्चस्स छम्मासस्स पज्जवसाणे एस णं आदिच्चे संवच्छरे एस णं आदिच्चस्स

Jain Education International 2010_03 For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

संवच्छरस्स पज्जवसाणे ☆☆☆ ।२३॥२-३ **बितियं पाहुडं** ॥☆☆☆ ता केवतियं खेत्तं चंदिमसूरिया ओभासंति उज्जोवेंति तवेंति पगासंति आहि० ?, तत्थ खलु इमाओ बारस पडिवत्तीओ पं०, तत्थेगे एवमा०-ता एगं दीवं एगं समुद्दं चंदिमसूरिया ओभासेंति०, एगे पुण एव०-ता तिण्णि दीवे तिण्णि समुद्दे चंदिमसूरिया ओभासंति० एगे एव०, एगे पुण०-ता अद्धचउत्थे (प्र आहुट्ठे दीवसमुद्दे चंदिमसूरिया ओभासंति० एगे एव०, एगे पुण०-ता सत्त दीवे सत्त समुद्दे चंदिमसूरिया ओभासिंति० एगे एव०, एगे पुण०-ता दस दीवे दस समुद्दे चंदिमसूरिया ओभासंति० एगे एव०, एगे पुण०-ता बारस दीवे बारस समुद्दे चंदिमसूरिया ओभासंति० एगे०, एगे पुण० बायालीसं दीवे बायालीसं समुद्दे चंदिमसूरिया ओभासंति० एगे०, एगे पुण०-बावत्तरि दीवे बावत्तरिं समुद्दे चंदिमसूरिया ओभासंति० एगे०, एगे पुण०-ता बायालीसं दीवसतं बायालं समुद्दसतं चंदिमसूरिया ओभासंति० एगे०, एगे पुण०-ता बावत्तरिं दीवसतं बावत्तरिं समुद्दसतं चंदिमसूरिया ओभासंति० एगे०, एगे पुण०-ता बायालीसं दीवसहस्सं बायालं समुद्दसहस्सं चंदिमसूरिया ओभासंति० एगे०, एगे पुण०-ता बावत्तरं दीवसहस्सं बावत्तरं समुद्दसहस्सं चंदिमसूरिया ओभासंति० एगे०, वयं पुण एवं वदामो-अयण्णं जंबुद्दीवे जाव परिक्खेवेणं पं०, से णं एगाए जगतीए सव्वतो समंता संपरिक्खित्ते, सा णं जगती अट्ठ जोयणाइं उड्ढं उच्चत्तेणं एवं जहा जंबुद्दीवपन्नत्तीए जाव एवामेव सपुव्वावरेणं जंबुद्दीवे चोद्दस सलिलासयसहस्सा छप्पन्नं च सलिलासहस्सा भवन्तीतिमक्खाता, जंबुद्दीवे णं दीवे पंचचक्कभागसंठिते आहितात्ति वदेज्जा, ता कहं ते जंबुद्दीवे० पंचचक्कभागसंठिते आहि० ?, ता जता णं एते सूरिया सव्वब्भंतरं मंडलं उवसंकमित्ता चारं चरंति तदा णं जंबुद्दीवस्स० तिण्णि पंचचक्कभागे ओभासंति तं०-एगेवि एगं दिवड्ढं पंचचक्कभागं ओभासेति एगेवि एगं दिवड्ढं पंचचक्कभागं ओभासेति तता णं उत्तमकट्ठपत्ते उक्को० अट्ठारसमुहुत्ते दिवसे भवति जहण्णिया दुवालसमुहुत्ता राई भवइ, ता जता णं एते दुवे सूरिया सव्वबाहिरं मंडलं उवसंकमित्ता चारं चरंति तदा णं जंबुद्दीवस्स दोण्णि चक्कभागे ओभासंति, ता एगेवि एगं पंचच-(२०५) क्कवालभागं ओभासति एगेवि एक्कं पंचचक्कवालभागं ओभासइ, तता णं उत्तमेकट्ठपत्ता उक्को० अट्ठारसमुहुत्ता राई भवइ जहण्णए दुवालसमुहुत्ते दिवसे भवति ☆☆☆।२४॥ **ततियं पाहुडं ३**॥☆☆☆ ता कहं ते सेआते संठिई आहि० ?, तत्थ खलु इमा दुविहा संठिती पं० तं०-चंदिमसूरियसंठिती य तावक्खेत्तसंठिती य, ता कहं ते चंदिमसूरियसंठिती आहि० ?, तत्थ खलु इमातो सोलस पडिवत्तीओ पं०, तत्थेगे एव०-ता समचउरंससंठिता चंदिमसूरियसंठिती एगे एव०, एगे पुण०-ता विसमचउरससंठिता चंदिमसूरियसंठिती पं०, एवं एएणं अभिलावेणं समचउक्कोणसंठिता विसमचउक्कोणसंठिया समचक्कवालसंठिता विसमचक्कवालसंठिता चक्कद्धचक्कवालसंठिता पं० एगे एव०, एगे पुण०-ता छत्तागारसंठिता चंदिमसूरियसंठिता पं० गेहसंठिता गेहावणसंठिता पासादसंठिता गोपुरसंठिया पेच्छाघरसंठिता वलभीसंठिता हम्मियतलसंठिता वालग्गपोतियासंठिता चंदिमसूरियसंठिती पं०. तत्थ जे ते एवमा०- ता समचउरंससंठिता चंदिमसूरियसंठिती पं० एतेणं णएणं णेतव्वं णो चेव णं इतरेहिं, ता कहं ते तावक्खेत्तसंठिती आहि० ?, तत्थ खलु इमाओ सोलस पडिवत्तीओ पं०, तत्थ णं एगे एव०-ता गेहसंठिता तावखित्तसंठिती पं०,एवं जाव वालग्गपोतियासंठिता तावक्खेत्तसंठिती०, एगे एव०-ता जस्संठिते जंबुद्दीवे तस्संठिता तावक्खेत्तसं० पं०, एगे पुण०-ता जस्संठिते भारहे वासे तस्सं०, एवं उज्जाणसंठिया निज्जाणसंठिता एगतो णिसधसंठिता दुहतो णिसहसंठिता सेयणगसंठिता एगे एव०, एगे पुण०-ता सेयणगपट्टसंठिता तावखेत्त० एगे एव०, वयं पुण एवं वदामो-ता उद्धीमुहकलंबुआपुप्फसंठिता तावक्खेत्तसंठिती पं० अंतो संकुडा वाहिं वित्थडा अंतो वट्टा बाहिं पिधुला अंतो अंकमुहसंठिता बाहिं सत्थिमुहसंठिता अउभतो पासेणं तीसे दुवे वाहाओ अवट्ठिताओ भवंति पणतालीसं २ जोयणसहस्साइं आयामेणं, दुवे य णं तीसे बाहाओ अणवट्ठिताओ भवंति, तं०-सव्वब्भंतरिया चेव बाहा सव्वबाहिरिया चेव बाहा, तत्थ को हेतूत्ति वदेज्जा ?. ता अयण्णं जंबुद्दीवे जाव परिक्खेवेणं, ता जया णं सूरिए सव्वब्भंतरं मंडलं उवसंकमित्ता चारं चरति तता णं उद्धीमुहकलंबुआपुप्फसंठिता तावक्खेत्तसंठिती आहि० अंतो संकुडा जाव बाहिरिया चेव बाहा, तीसे णं सव्वब्भंतरिया बाहा मंदरपव्वयंतेणं णव जोयणसहस्साइं चत्तारि य छलसीते जोयणसते

Jain Education International 2010_03 For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

णव य दसभागे जोयणस्स परिक्खेवेणं आहि०, ता से णं परिक्खेवविसेसे कतो आहि० ?, ता जे णं मंदरस्स पव्वयस्स परिक्खेवे तं परिक्खेवं तिहिं गुणित्ता दसहिं छित्ता दसहिं भागे हीरमाणे एस णं परिक्खेववविसेसे आहि०, तीसे णं सव्वबाहिरिया बाहा लवणसमुद्दंतेणं चउणउतिं जोयणसहस्साइं अट्ठ यं अट्ठसट्ठे जोयणसते चत्तारि य दसभागे जोयणस्स परिक्खेवेणं आहिता०, ता से णं परिक्खेवविसेसे कतो आहिता० ?, ता जे णं जंबुद्दीवस्स परिक्खेवे तं परिक्खेवं तिहिं गुणित्ता दसहिं छेत्ता दसहिं भागे हीरमाणे एस णं परिक्खेवविसेसे आहि०, ता से णं तावक्खेत्ते केवतियं आयामेणं आहि० ?, ता अट्ठत्तरिं जोयणसहस्साइं तिण्णि य तेत्तीसे जोयणसते जोयणतिभागे य आयामेणं आहि०, तया णं किंसंठिया अंधगारसंठिई आहि० ?, उद्धीमुंहकलंबुआपुप्फसंठिता तहेव जाव बाहिरिया चेव बाहा, तीसे णं सव्वब्भंतरिया बाहा मंदरपव्वतंतेणं छज्जोयणसहस्साइं तिण्णि य चउवीसे जोयणसते छच्च दसभागे जोयणस्स परिक्खेवेणं आहि०, ता से णं परिक्खेवविसेसे कतो आहि० ?, ता जे णं मंदरस्स पव्वयस्स परिक्खेवे तं परिक्खेवं दोहिं गुणेत्ता सेसं तहेव, तीसे णं सव्बाहिरिया बाहा लवणसमुद्दंतेणं तेवट्ठि जोयणसहस्साइं दोण्णि य पणयाले जोयणसते छच्च दसभागे जोयणस्स परिक्खेवेणं आहि०, ता से णं परिक्खेवविसेसे कत्तो आहि० ?, ता जे णं जंबुद्दीवस्स परिक्खेवे तं परिक्खेवं दोहिं गुणित्ता दसहिं छेत्ता दसहिं भागे हीरमाणे एस णं परिक्खेवविसेसे आहि०, ता से णं अंधकारे केवतियं आयामेणं आहि० ?, ता अट्ठत्तरिं जोयणसहस्साइं तिण्णि य तेत्तीसे जोयणसते जोयणतिभागं च आयामेणं आहि०, तता णं उत्तमकट्ठपत्ते अट्ठारसमुहुत्ते दिवसे भवइ जहण्णिया दुवालसमुहुत्ता राई भवइ, ता जया णं सूरिए सव्वबाहिरं मंडलं उवसंकमित्ता चारं चरति तता णं किंसंठिता तावखेत्तसंठिती आहि० ?, ता उद्धीमुहकलंबुयापुप्फसंठिता तावक्खेत्तसंठिती आहि०, एवं जं अब्भिंतरमंडले अंधकारसंठितीए पमाणं तं बाहिरमंडले तावक्खेत्तसंठितीए जं तहिं तावक्खेत्तसंठितीए तं बाहिरमंडले अंधकारसंठितीए भाणियव्वं, जाव तता णं उत्तमकट्ठपत्ता उक्कोसिया अट्ठारसमुहुत्ता राई भवति जहण्णए दुवालसमुहुत्ते दिवसे भवति, ता जंबुद्दीवे० सूरिया केवतियं खेत्तं उड्ढं तवंति केवतियं खेत्तं अहे तवंति केवतियं खेत्तं तिरियं तवंति ?, ता जंबुद्दीवे णं दीवे सूरिया एगं जोयणसतं उड्ढं तवंति अट्ठारस जोयणसताइं अधे तवंति सीतालीसं जोयणसहस्साइं दुन्नि य तेवट्ठे जोयणसते एक्कवीसं च सट्ठिभागे जोयणस्स तिरियं तवंति ☆☆☆ ।२५॥ **चउत्थं पाहुडं ४॥** ☆☆☆ ता कंसि णं सूरियस्स लेस्सा पडिहताति वदेज्जा ?, तत्थ खलु इमाओ वीसं पडिवत्तीओ पं०, तत्थेगे एव०-ता मंदरंसि णं पव्वतंसि सूरियस्स लेस्सा पडिहता आहि० एगे एव०, एगे पुण०-ता मेरूंसि णं पव्वतंसि सूरियस्स लेस्सा पडिहता आहिं० एगे एव०, एवं एतेणं अभिलावेणं भाणियव्वं, ता मणोरमंसि णं पव्वयंसि ता सुदंसणंसि णं पव्वयंसि ता सयंपभंसि णं पव्वतंसि ता गिरिरायंसि णं पव्वतंसि ता रतणुच्चयंसि णं पव्वतंसि ता सिलुच्चयंसि णं पव्वयंसि ता लोअमज्झंसि णं पव्वतंसि ता लोयणाभिंसि णं पव्वतंसि ता अच्छंसि णं पव्वंतंसि ता सूरियावत्तंसि णं पव्वतंसि ता सूरियावरणंसि णं पव्वतंसि ता उत्तमंसि णं पव्वंयंसि ता दिसादिम्मि णं पव्वतंसि ता अवतंसंसि णं पव्वतंसि ता धरणिखीलंसि णं पव्वयंसि ता धरणीसिंगसि णं पव्वयंसि ता पव्वतिदंसिणं पव्वतंसि ता पव्वयरायंसि णं पव्वयंसि सूरियस्स लेसा पडिहता आहि० एगे एव० वयं पुण एवं वदामो-जंसि णं पव्वयंसि सूरियस्स लेसा पडिहता से मंदरेवि पवुच्चति मेरूवि पवुच्चइ जाव पव्वयरायावि पवुच्चति, ता जे णं पुग्गला सूरियस्स लेसं फुसंति ते णं पुग्गला सूरियस्स लेसं पडिहणंति, अदिट्ठावि णं पोग्गला सूरियस्स लेस्सं पडिहणंति, चरिमलेसंतरगतावि णं पोग्गला सूरियस्स लेस्सं पडिहणंति ☆☆☆।२६॥ **पंचमं पाहुडं ५॥**☆☆☆ ता कहं ते ओयसंठिती आहि० ?, तत्थ खलु इमाओ पणवीसं पडिवत्तीओ पं०, तत्थेगे एव० ता अणुसमयमेव सूरियस्स ओया अण्णा उप्पज्जति अण्णा अवेति एगे एव०, एगे पुण०-ता अणुमुहुत्तमेव सूरियस्स ओया अण्णा उप्पज्जति अण्णा अवेति, एतेणं अभिलावेणं णेतव्वा, ता अणुराइंदियमेव ता अणुपक्खमेव ता अणुमासमेव ता अणुउडुमेव ता अणुअयणमेव ता अणुसंवच्छरमेव ता अणुजुगमेव ता अणुवाससयमेव ता अणुवाससहस्समेव ता अणुवाससयसहस्समेव ता अणुपुव्वमेव ता अणुपुव्वसयमेव ता अणुपुव्वसहस्समेव ता अणुपुव्वसतसहस्समेव ता अणुपलितोवममेव ता

Jain Education International 2010_03 For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

अणुपलितोवमसतमेव ता अणुपलितोवमसहस्समेव ता अणुपलितोवमसयसहस्समेव ता अणुसागरोवममेव ता अणुसागरोवमसतमेव ता अणुसागरोवमसहस्समेव ता अणुसागरोवमसयसहस्समेव एगे एव०, ता अणुउस्सप्पिणीओसप्पिणिमेव सूरियस्स ओया अण्णा उप्पज्जति अण्णा अवेति एगे एव०, वयं पुण एवं वदामो-ता तीसं २ मुहुत्ते सूरियस्स ओया अवट्ठित्ता भवति, तेण परं सूरियस्स ओया अणवट्ठिता भवति, छम्मासे सूरिए ओयं णिवुड्ढेति छम्मासे सूरिए ओयं अभिवड्ढेति, णिक्खममाणे सूरिए देसं णिवुड्ढेति पविसमाणे सूरिए देसं अभिवुड्ढेइ, तत्थ को हेतू आहि० ?, ता अयण्णं जंबुद्दीवे सव्वदीवसमुद्द जाव परिक्खेवेणं, ता जया णं सूरिए सव्वब्भंतरं मंडलं उवसंकमित्ता चारं चरति तता णं उत्तमकट्ठपत्ते उक्कोसए अट्ठारसमुहुत्ते दिवसे भवति जहण्णिया दुवालसमुहुत्ता राई भवति, से णिक्खममाणे सूरिए णवं संवच्छरं अयमाणे पढमंसि अहोरत्तंसि अब्भिंतराणंतरं मंडलं उवसंकमित्ता चारं चरति, ता जया णं सूरिए अब्भिंतराणंतरं मंडलं उवसंकमित्ता चारं चरति तता णं एगेणं राइंदिएणं एग भागं ओयाए दिवसखित्तस्स णिवुड्ढित्ता रयणिक्खेत्तस्स अभिवड्ढित्ता चारं चरति मंडलं अट्ठारसहिं तीसेहिं सतेहिं छित्ता, तता णं अट्ठारसमुहुत्ते दिवसे भवति दोहिं एगट्ठिभागमुहुत्तेहिं ऊणे दुवालसमुहुत्ता राई भवति दोहिं एगट्ठिभागमुहुत्तेहिं अहिया, से णिक्खममाणे सूरिए दोच्चंसि अहोरत्तंसि अब्भिंतरं तच्चं मंडलं उवसंकमित्ता चारं चरति, ता जया णं सूरिए अब्भिंतरं तच्चं मंडलं उवसंकमित्ता चारं चरति तता णं दोहिं राइंदिएहिं दो भागे ओयाए दिवसखेत्तस्स णिवुड्ढित्ता रयणिखित्तस्स अभिवड्ढेत्ता चारं चरति मंडलं अट्ठारसतीसेहिं सएहिं छेत्ता, तता णं अट्ठारसमुहुत्ते दिवसे भवति चउहिं एगट्ठिभागमुहुत्तेहिं ऊणे दुवालसमुहुत्ता राई भवति चउहिं एगट्ठिभागमुहुत्तेहिं अहिया, एवं खलु एतेणुवाएणं निक्खममाणे सूरिए तयाणंतराओ तदाणंतरं मंडलातो मंडलं संकममाणे २ एगमेगे मंडले एगमेगेणं राइंदिएणं एगमेगं भागं ओयाए दिवसखेत्तस्स णिवुड्ढेमाणे २ रयणिखेत्तस्स अभिवड्ढेमाणे २ सव्वबाहिरं मंडलं उवसंकमित्ता चारं चरति, ता जया णं सूरिए सव्वब्भंतरातो मंडलातो सव्वबाहिरं मंडलं उवसंकमित्ता चारं चरति तता णं सव्वब्भंतरं मंडलं पणिधाय एगेणं तेसीतेणं राइंदियसतेणं एगं तेसीतं भागसतं ओयाए दिवसखेत्तस्स णिव्वुड्ढेत्ता रयणिखेत्तस्स अभिवुड्ढेत्ता चारं चरति मंडलं अट्ठारसहिं तीसेहिं सएहिं छेत्ता, तता णं उत्तमकट्ठपत्ता उक्को० अट्ठारसमुहुत्ता राई भवति जहण्णए दुवालसमुहुत्ते दिवसे भवति, एस णं पढमे छम्मासे एस णं पढमस्स छम्मासस्स पज्जवसाणे, से पविसमाणे सूरिए दोच्चं छम्मासं अयमाणे पढमंसि अहोरत्तंसि बाहिराणंतरं मंडलं उवसंकमित्ता चारं चरति, ता जया णं सूरिए बाहिराणंतरं मंडलं उवसंकमित्ता चारं चरति तता णं एगेणं राइंदिएणं एगं भागं ओयाए रतणिक्खेत्तस्स णिव्वुड्ढेत्ता दिवसखेत्तस्स अभिवुड्ढेत्ता चारं चरति मंडलं अट्ठारसहिं तीसेहिं सएहिं छेत्ता, तता णं अट्ठारसमुहुत्ता राई भवति दोहिं एगट्ठिभागमुहुत्तेहिं ऊणा दुवालसमुहुत्ते दिवसे भवति दोहिं एगट्ठिभागमुहुत्तेहिं अधिए, से पविसमाणे सूरिए दोच्चंसि अहोरत्तंसि बाहिरं तच्चं मंडलं उवसंकमित्ता चारं चरति, ता जया णं सूरिए बाहिरं तच्चं मंडलं उवसंकमित्ता चारं चरति तता णं दोहिं राइंदिएहिं दो भाए ओयाए रयणिखेत्तस्स णिव्वुड्ढेत्ता दिवसखेत्तस्स अभिवुड्ढेत्ता चारं चरति मंडलं अट्ठारसहिं तीसेहिं सएहिं छेत्ता, तया णं अट्ठारसमुहुत्ता राई भवति चउहिं एगट्ठिभागमुहुततेहिं ऊणा दुवालसमुहुत्ते दिवसे भवति चउहिं एगट्ठिभागमुहुत्तेहिं अधिए, एवं खलु एतेणुवाएणं पविसमाणे सूरिए तताणंतरातो तदाणंतरं मंडलातो मंडलं संकममाणे २ एगमेगे मंडले एगमेगेणं राइंदिएणं एगमेगं भागं ओयाए रयणिखेत्तस्स णिव्वुड्ढेमाणे २ दिवसखेत्तस्स अभिवड्ढेमाणे २ सव्वब्भंतरं मंडलं उवसंकमित्ता चारं चरति, ता जया णं सूरिए सव्वबाहिरातो मंडलातो सव्वब्भंतरं मंडलं उवसंकमित्ता चारं चरति तता णं सव्वबाहिरं मंडलं पणिधाय एगेणं तेसीतेणं राइंदियसएणं एगं तेसीतं भागसतं ओयाए रयणिखित्तस्स णिवुड्ढेत्ता दिवसखेत्तस्स अभिवड्ढेत्ता चारं चरति मंडलं अट्ठारसतीसेहिं सएहिं छेत्ता, तता णं उत्तमकट्ठपत्ते उक्को० अट्ठारसमुहुत्ते दिवसे भवति जहण्णिया दुवालसमुहुत्ता राई भवति, एस णं दोच्चे छम्मासे एस णं दोच्चस्स छम्मासस्स पज्जवसाणे एस णं आदिच्चे संवच्छरे एस णं आदिच्चस्स संवच्छरस्स पज्जवसाणे

☆☆☆ **।२७॥ छट्ठं पाहुडं ६॥** ☆☆☆ ता के ते सूरियं वरंति आहि० ?, तत्थ खलु इमाओ वीसं पडिवत्तीओ पं०, तत्थेगे एव०-ता मंदरे णं पव्वते सूरियं वरयति आहि०, एगे पुण०-ता मेरू णं पव्वते सूरियं वरति आहि०, एवं एएणं अभिलावेणं णेतव्वं जाव पव्वतराये णं पव्वते सूरियं वरयति आहि० एगे एव०, वयं

Jain Education International 2010_03 For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

पुण एवं वदामो-ता मंदरेवि पवुच्चति तहेव जाव पव्वतराएवि पवुच्चति, ता जे णं पोग्गला सूरियस्स लेसं फुसंति ते पोग्गला सूरियं वरयंति, अदिट्ठावि णं पोग्गला सूरियं वरयंति, चरमलेसंतरगतावि णं पोग्गला सूरियं वरयति ☆☆☆ ।२८।। **सत्तमं पाहुडं ७।।** ☆☆☆ ता कहं ते उदयसंठिती आहि० ?, तत्थ खलु इमाओ तिण्णि पडिवत्तीओ पं०, तत्थेगे एव०-ता जया णं जंबुद्दीवे दाहिणड्ढे अट्ठारसमुहुत्ते दिवसे भवति तता णं उत्तरड्ढेवि अट्ठारसमुहुत्ते दिवसे भवति, जया णं उत्तरड्ढे अट्ठारसमुहुत्ते दिवसे भवति तया णं दाहिणड्ढेऽवि अट्ठारसमुहुत्ते दिवसे भवति, जदा जंबुद्दीवे दाहिणड्ढे सत्तरसमुहुत्ते दिवसे भवति तया णं उत्तरड्ढे सत्तरसमुहुत्ते दिवसे भवति, जया णं उत्तरड्ढे सत्तरसमुहुत्ते दिवसे भवति तदा णं दाहिणड्ढेवि सत्तरसमुहुत्ते दिवसे भवति, एवं परिहावेतव्वं, सोलसमुहुत्ते पण्णरस० चउद० तेरस० दिवसे जाव ता जया णं जंबुद्दीवे० दाहिणड्ढे बारसमुहुत्ते दिवसे भवति तया णं उत्तरद्धेवि बारसमुहुत्ते दिवसे भवति, जता णं उत्तरद्धे बारसमुहुत्ते दिवसे भवति तता णं दाहिणद्धेवि बारसमुहुत्ते दिवसे भवति, जता णं दाहिणद्धे बारसमुहुत्ते दिवसे भवति तता णं जंबुद्दीवे मंदरस्स पव्वयस्स पुरच्छिमपच्चत्थिमेणं सता पण्णरसमुहुत्ते दिवसे भवति सदा पण्णरसमुहुत्ता राई भवति, अवट्ठित्ता णं तत्थ राइंदिया समणाउसो ! पं० एगे एव०, एगे पुण०-जता णं जंबुद्दीवे दाहिणद्धे अट्ठारसमुहुत्ताणंतरे दिवसे भवति तया णं उत्तरद्धेवि अट्ठारसमुहुत्ताणंतरे दिवसे भवइ, जया णं उत्तरद्धे अट्ठारसमुहुत्ताणंतरे दिवसे भवइ तता णं दाहिणड्ढेवि अट्ठारसमुहुत्ताणंतरे दिवसे भवइ, एवं परिहावेतव्वं, सत्तरसमुहुत्ताणंतरे दिवसे भवति, सोलसमुहुत्ताणंतरे० पण्णरसमुहुत्ताणंतरे चोद्दसमुहुत्ताणंतरे० तेरसमुहुत्ताणंतरे०, जया णं जंबुद्दीवे दाहिणद्धे बारसमुहुत्ताणंतरे दिवसे भवति तदा णं उत्तरद्धेवि बारसमुहुत्ताणंतरे दिवसे भवति, जता णं उत्तरद्धे बारसमुहुत्ताणंतरे दिवसे भवइ तया णं दाहिणद्धेवि बारसमुहुत्ताणंतरे दिवसे भवति तदा णं जंबुद्दीवे मंदरस्स पव्वयस्स पुरत्थिमपच्चत्थिमेणं णो सदा पण्णरसमुहुत्ते दिवसे भवति णो सदा पण्णरसमुहुत्ता राई भवति, अणवट्ठिता णं तत्थ राइंदिया समणाउसो ! एगे एव०, एगे पुण०-ता जया णं जंबुद्दीवे दाहिणड्ढे अट्ठारसमुहुत्ते दिवसे भवति तदा णं उत्तरद्धे दुवालसमुहुत्ता राई भवति जया णं उत्तरड्ढे अट्ठारसमुहुत्ते दिवसे भवति तदा णं दाहिणड्ढे बारसमुहुत्ता राई भवइ, जया णं दाहिणड्ढे अट्ठारसमुहुत्ताणंतरे दिवसे भवति तदा णं उत्तरद्धे बारसमुहुत्ता राई भवइ, जता णं उत्तरद्धे अट्ठारसमुहुत्ताणंतरे दिवसे भवति तदा णं दाहिणद्धे बारसमुहुत्ता राई भवति, एवं सत्तरसमुहुत्ते दिवसे सत्तरसमुहुत्ताणंतरे० सोलसमुहुत्ते सोलसमुहुत्ताणंतरे पण्णरसमुहुत्ते पन्नरसमुहुत्ताणंतरे चोद्दसमुहुत्ते चोद्दसमुहुत्ताणंतरे तेरसमुहुत्ते तेरसमुहुत्ताणंतरे बारसमुहुत्ते, ता जता णं जंबुद्दीवे दाहिणद्धे बारसमुहुत्ताणंतरे दिवसे भवति तदा णं उत्तरद्धे दुवालसमुहुत्ता राई भवति, जया णं उत्तरद्धे दुवालसमुहुत्ताणंतरे दिवसे भवति तदा णं दाहिणद्धे दुवालसमुहुत्ता राई भवति, तता णं जंबुद्दीवे मन्दरस्स पव्वयस्स पुरत्थिमपच्चत्थिमेणं णेवत्थि पण्णरसमुहुत्ते दिवसे भवति णेवत्थि पण्णरसमुहुत्ता राई भवति, वोच्छिण्णा णं तत्थ राइंदिया पं० समणाउसो ! एगे एव०, वयं पुण वदामो-ता जंबुद्दीवे सूरिया उदीणपाईणमुग्गच्छ पाईणदाहिणमागच्छंति पाईणदाहिणमुग्गच्छ दाहिणपडीणमागच्छंति दाहिणपडिणमुग्गच्छ पडीणउदीणमागच्छन्ति पडीणउदीणमुग्गच्छ उदीणपाईणमागच्छन्ति, ता जता णं जंबुद्दीवे दाहिणद्धे दिवसे भवति तदा णं उत्तरद्धे दिवसे भवति, जदा णं उत्तरद्धे दिवसे भवति तदा णं जंबुद्दीवे मंदरस्स पव्वयस्स पुरच्छिमपच्चच्छिमेणं राई भवति, ता जया णं जंबुद्दीवे मंदरस्स पव्वयस्स पुरत्थिमेणं दिवसे भवति तदा णं पच्चत्थिमेणवि दिवसे भवति, जया णं पच्चत्थिमेणं दिवसे भवति तदा णं जंबुद्दीवे मंदरस्स पव्वयस्स उत्तरदाहिणेणं राई भवति, ता जया णं दाहिणद्धेवि उक्कोसए अट्ठारसमुहुत्ते दिवसे भवति तया णं उत्तरद्धे उक्कोसए अट्ठारसमुहुत्ते दिवसे भवति, जदा उत्तरद्धे० तदा णं जंबुद्दीवे मंदरस्स पव्वयस्स पुरत्थिमेणं जहण्णिया दुवालसमुहुत्ता राई भवति, ता जया णं जंबुद्दीवे मन्दरस्स पव्वतस्स पुरच्छिमेणं उक्कोसए अट्ठारसमुहुत्ते दिवसे भवति तता णं पच्चत्थिमेणवि उक्कोसए अट्ठारसमुहुत्ते दिवसे भवति, जता णं पच्चत्थिमेणं उक्कोसए अट्ठारसमुहुत्ते दिवसे भवति तता णं जंबुद्दीवे मंदरस्स पव्वयस्स उत्तरदाहिणेणं जहण्णिया दुवालसमुहुत्ता राई भवति, एवं एएणं गमेणं णेतव्वं, अट्ठारसमुहुत्ताणंतरे दिवसे सातिरेगदुवालसमुहुत्ता राई भवति, सत्तरसमुहुत्ते दिवसे तेरसमुहुत्ता

Jain Education International 2010_03 For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

राई, सत्तरसमुहुत्ताणंतरे दिवसे भवति सातिरेगतेरसमुहुत्ता राई भवति सोलसमुहुत्ते दिवसे चोद्दसमुंहुत्ता राई भवति सोलसमुहुत्ताणंतरे दिवसे सातिरेगचोद्दसमुहुत्ता राई भवति, पण्णरसमुहुत्ते दिवसे पण्णरसमुहुत्ता राई पण्णरसमुहुत्ताणंतरे दिवसे सातिरेगपण्णरसमुहुत्ता राई भवइ चउद्दसमुहुत्ते दिवसे सोलसमुहुत्ता राई चोद्दसमुहुत्ताणंतरे दिवसे सातिरेगसोलसमुहुत्ता राई तेरसमुहुत्ते दिवसे सत्तरसमुहुत्ता राई तेरसमुहुत्ताणतरे दिवसे सातिरेगसत्तरसमुहुत्ता राई जहण्णए दुवालसमुहुत्ते दिवसे भवति उक्कोसिया अट्ठारसमुहुत्ता राई, तता णं उत्तरद्धे जहन्नए दुवालसमुहुत्ते दिवसे भवति, जता णं उत्तरड्ढे जह० दुवालस० दिवसे तता णं जंबुद्दीवे मंदरस्स पुरच्छिमपच्चच्छिमेणं उक्कोसिया अट्ठारस० राती भवति, ता जया णं जंबुद्दीवे मंदरस्स पुरच्छिमेणं जह० दुवालस० दिवसे भवति तता णं पच्चच्छिमेणं जह० दुवालस० दिवसे भवति, जता णं पच्चच्छिमेणं जह० दुवालस०दिवसे तता णं जंबुद्दीवे दीवे मंदरस्स उत्तरदाहिणेणं उक्कोसिया अट्ठारस० राती भवति, ता जया णं जंबुद्दीवे दाहिणद्धे वासाणं पढमे समए पडिवज्जति तता णं उत्तरद्धेवि वासाणं पढमे समए पडिवज्जति, जता णं उत्तरद्धे वासाणं पढमे समए पडिवज्जति तता णं जंबुद्दीवे मंदरस्स पव्वयस्स पुरच्छिमपच्चत्थिमेणं अणंतरपुरक्खडकालसमयंसि वासाणं पढमे समए पडिवज्जइ, ता जया णं जंबुद्दीवे मंदरस्स पव्वयस्स पुरच्छिमेणं वासाणं पढमे समए पडिवज्जइ तता णं पच्चत्थिमेणवि वासाणं पढमे समए पडिवज्जइ, जया णं पच्चत्थिमेणं वासाणं पढमे समए पडिवज्जइ तता णं जंबुद्दीवे मंदरस्स उत्तरदाहिणेणं अणंतरपच्छाकयकालसमयंसि वासाणं पढमे समए पडिवण्णे भवति, जहा समओ एवं आवलिया आणापाणू थोवे लवे मुहुत्ते अहोरत्ते पक्खे मासे उऊ, एवं दस आलावगा वासाणं भाणियव्वा, ता जया णं जंबुद्दीवे० दाहिणड्ढे हेमंताणं पढमे समए पडिवज्जति तता णं उत्तरड्ढेवि हेमंताणं पढमे समए पडिवज्जति, एतस्सवि वासस्स आलावगा जाव उऊओ, ता जया णं जंबुद्दीवे दाहिणद्धे गिम्हाणं पढमे समए पडिवज्जति तता णं उत्तरड्ढे एतस्सवि वासागमो भाणियव्वो जाव उऊओ, ता जता णं जंबुद्दीवे दाहिणद्धे पढमे अयणे पडिवज्जति तदा णं उत्तरद्धेवि पढमे अयणे पडिवज्जइ, जता णं उत्तरद्धे पढमे अयणे पडिवज्जति तदा णं दाहिणद्धेवि पढमे अयणे पडिवज्जइ, जता णं उत्तरद्धे पढमे अयणे पडिवज्जति तता णं जंबुद्दीवे मंदरस्स पव्वयस्स पुरत्थिमपच्चत्थिमेणं अणंतरपुरक्खडकालसमयंसि पढमे अयणे पडिवज्जति, ता जया णं जंबुद्दीवे मन्दरस्स पव्वयस्स पुरत्थिमेणं पढमे अयणे पडिवज्जति तता णं पच्चत्थिमेणवि पढमे अयणे पडिवज्जइ, जया णं पच्चत्थिमेणं पढमे अयणे पडिवज्जइ तदा णं जंबुद्दीवे मंदरस्स पव्वयस्स उत्तरदाहिणेणं अणंतरपच्छाकडकालसमयंसि पढमे अंयणे पडिवण्णे भवति, एवं संवच्छरे जुगे वाससते, एवं वाससहस्से वाससयसहस्से पुव्वंगे पुव्वे एवं जाव सीसपहेलिया पलितोवमे सागरोवमे, ता जया णं जंबुद्दीवे दाहिणड्ढे ओसप्पिणी तता णं उत्तरद्धेवि ओसप्पिणी पउवज्जति पडिवज्जति, जता णं उत्तरद्धे ओसप्पिणी पडिवज्जति तता णं जंबुद्दीवे मंदरस्स पव्वयस्स पुरत्थिमपच्चत्थिमेणं णेवत्थि ओसप्पिणी णेव अत्थि उस्सप्पिणी, अवट्ठिते णं तत्थ काले पं० समणाउसो !, एवं उस्सप्पिणीवि, ता जया णं लवणे समुद्दे दाहिणद्धे दिवसे भवति तता णं लवणसमुद्दे उत्तरद्धे दिवसे भवति, जता णं उत्तरद्धे दिवसे भवति तता णं लवणसमुद्दे पुरच्छिमपच्चत्थिमेणं राई भवति, जहा जंबुद्दीवे तहेव जाव उस्सप्पिणी, तहा धायइसंडे णं दीवे सूरिया उदीण० तहेव, ता जता णं धायइसंडे दीवे दाहिणद्धे दिवसे भवति तता णं उत्तरद्धेवि दिवसे भवति, जता णं उत्तरद्धे दिवसे भवति तता णं धायइसंडे दीवे मंदराणं पव्वताणं पुरत्थिमपच्चत्थिमेणं राई भवति, एवं जंबुद्दीवे जहा तहेव जाव उस्सप्पिणी, कालोए णं जहा लवणे समुद्दे तहेव, ता अब्भंतरपुक्खरद्धे णं सूरिया उदीणपाईणमुग्गच्छ तहेव ता जया णं अब्भंतरपुक्खरद्धे णं दाहिणद्धे दिवसे भवति तदा णं उत्तरद्धेवि दिवसे भवति, जता णं उत्तरद्धे दिवसे भवति तता णं अब्भिंतरपुक्खरद्धे मंदराणं पव्वताणं पुरत्थिमपच्चत्थिमेणं राई भवति सेसं तहा जंबुद्दीवे तहेव जाव ओसप्पिणीउस्सप्पिणीओ ☆☆☆ ।२९॥**अट्ठमं पाहुडं ८॥**

☆☆☆ ता कतिकट्ठं ते सूरिए पारिसीच्छायं णिव्वत्तेति आहि० ?, तत्थ खलु इमाओ तिण्णि पडिवत्तीओ पं०, तत्थेगे एव०-जे णं पोग्गला सूरियस्स लेसं फुसंति ते णं पोग्गला संतप्पंति, ते णं पोग्गला संतप्पमाणा तदणंतराइं बाहिराइं पोग्गलाइं संतावेंतीति एस णं से समिते तावक्खेत्ते एगे एव०, एगे पुण०-ता जे णं

Jain Education International 2010_03 For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

पोग्गला सूरियस्स लेसं फुसंति ते णं पोग्गला नो संतप्पंति, ते णं पोग्गला असंतप्पमाणा तदणंतराइं बाहिराइं पोग्गलाइं णो संतावेंतीति एस णं से समिते तावक्खेत्ते एगे एव०, एगे पुण०-ता जे णं पोग्गला सूरियस्स लेसं फुसंति ते णं पोग्गला अत्थेगतिया संतप्पंति अत्थेगतिया णो संतप्पंति, तत्थ अत्थेगइआ संतप्पमाणा तदणंतराइं बाहिराइं पोग्गलाइं अत्थेगतियाइं संतावेंति अत्थेगतियाइं णो संतावेंति एस णं से समिते तावक्खेत्ते एगे एव०, वयं पुण एवं वदामो-ता जाओ इमाओ चंदिमसूरियाणं देवाणं विमाणेहिंतो लेसाओ बहिया उच्छूढा अभिणिसट्ठाओ पतावंति एतासि णं लेसाणं अंतरेसु अण्णतरीओ छिण्णलेसाओ संमुच्छंति, तते णं ताओ छिण्णलेस्साओ संमुच्छियाओ समाणीओ तदणंतराइं बाहिराइं पोग्गलाइं संतावेंतीति एस णं से समिते तावक्खेत्ते।३०। ता कतिकट्ठं ते सूरिए पोरिसीच्छायं णिव्वत्तेति आहि० ?, तत्थ खलु इमाओ पणवीसं पडिवत्तीओ पं०, तत्थेगे एव०-ता अणुसमयमेव सूरिए पोरिसिच्छायं णिव्वत्तेइ आहि० एगे एव०, एगे पुण०-ता अणुमुहुत्तमेव सूरिए पोरिसिच्छायं णिव्वत्तेति आहि०, एतेण अभिलावेणं णेतव्वं, ता जाओ चेव ओयसंठितीए पणवीसं पडिवत्तीओ ताओ चेव णेतव्वाओ जाव अणुउस्सप्पिणीमेव सूरिए पोरिसीए छायं णिव्वत्तेति आहि० एगे०, वयं पुण एवं वदामो-ता सूरियस्स णं उच्चत्तं व लेसं च पडुच्च छाउद्देसे उच्चत्तं च छायं च पडुच्च लेसुद्देसे लेसं च छायं च पडुच्च उच्चत्तोद्देसे, तत्थ खलु इमाओ दुवे पडिवत्तीओ पं०, तत्थेगे एवमाहंसु-ता अत्थि णं से दिवसे जंसि णं दिवसंसि सूरिए चउपोरिसीच्छायं निव्वत्तेइ, अत्थि णं से दिवसे जंसि णं दिवसंसि सूरिए दुपोरिसीच्छायं णिव्वत्तेति एगे एव०, एगे पुण०-ता अत्थि णं से दिवसे जंसि णं दिवसंसि सूरिए दुपोरिसीच्छायं णिव्वत्तेति अत्थि णं से दिवसे जंसि णं दिवसंसि सूरिए नो किंचि पोरिसिच्छायं णिव्वत्तेति, तत्थ जे ते एव० ता अत्थि णं से दिवसे जंसि णं दिवसंसि सूरिए चउपोरिसियं छायं णिव्वत्तेति अत्थि णं से दिवसे जंसि णं दिवसंसि सूरिए दोपोरिसियं छायं निव्वत्तेइ ते एव०-ता जता णं सूरिए सव्वब्भंतरं मंडलं उवसंकमित्ता चारं चरति तता णं उत्तमकट्ठपत्ते उक्कोसए अट्ठारसमुहुत्ते दिवसे भवति जहण्णिया दुवालसमुहुत्ता राई भवति, तंसि च णं दिवसंसि सूरिए चउपोरिसीयं छायं निव्वत्तेति, ता उग्गमणमुहुत्तंसि य अत्थमणमुहुत्तंसि य लेसं अभिवड्ढेमाणे नो चेव णं णिव्वुड्ढेमाणे, ता जता णं सूरिए सव्वबाहिरं मंडलं उवसंकमित्ता चारं चरति तता णं उत्तमकट्ठपत्ता उक्कोसिया अट्ठारसमुहुत्ता राई भवति जहण्णए दुवालसमुहुत्ते दिवसे भवति, तंसि च णं दिवसंसि सूरिए दुपोरिसियं छायं निव्वत्तेइ, तं०-उग्गमणमुहुत्तंसि य अत्थमणमुहुत्तंसि य लेसं अभिवड्ढेमाणे नो चेव णं निवुड्ढेमाणे, तत्थ णं जे ते एव०-ता अत्थि णं से दिवसे जंसि णं दिवसंसि सूरिए दुपोरिसियं छायं णिव्वत्तेइ अत्थि णं से दिवसे जंसि णं दिवसंसि सूरिए णो किंचि पोरिसियं छायं णिव्वत्तेति ते एव०-ता जता णं सूरिए सव्वब्भंतरं मंडलं उवसंकमित्ता चारं चरति तता णं उत्तमकट्ठपत्ते उक्कोसए अट्ठारसमुहुत्ते दिवसे भवति जहण्णिया दुवालसमुहुत्ता राई भवति तंसि च णं दिवसंसि सूरिए दुपोरिसियं छायं णिव्वत्तेति, तं०-उग्गमणमुहुत्तंसि य अत्थमणमुहुत्तंसि य लेसं अभिवड्ढेमाणे णो चेव णं णिव्वुड्ढेमाणे, ता जया णं सूरिए सव्वबाहिरं मंडलं उवसंकमित्ता चारं चरति तता णं उत्तमकट्ठपत्ता उक्कोसिया अट्ठारसमुहुत्ता राई भवति जहण्णए दुवालसमुहुत्ते दिवसे भवति तंसि च णं दिवसंसि सूरिए णो किंचि पोरिसीछायं णिव्वत्तेति, तं०-उग्गमणमुहुत्तंसि य अत्थमणमुहुत्तंसि य, नो चेव णं लेसं अभिवुड्ढेमाणे वा निवुड्ढेमाणे वा, ता कइकट्ठं ते सूरिए पोरिसीच्छायं निव्वत्तेइ आहि० ?, तत्थ इमाओ छण्णउई पडिवत्तीओ पं०, तत्थेगे एव०-अत्थि णं से देसे जंसि णं देसंसि सूरिए एगपोरिसीछायं निव्वत्तेइ एगे एव०, एगे पुण०-ता अत्थि णं से देसे जंसि देसंसि सूरिए दुपोरिसियं छायं णिव्वत्तेति, एवं एतेणं अभिलावेणं णेतव्वं, जाव छण्णउतिपोरिसियं छायं णिव्वत्तेति, तत्थ जे ते एव०-ता अत्थि णं से देसे जंसि णं देसंसि सूरिए एगपोरिसियं छायं णिव्वत्तेति ते एव०-ता सूरियस्स णं सव्वहेट्ठिमातो सूरप्पडिहितो बहिया अभिणिसट्ठाहिं लेसाहिं ताडिज्जमाणीहिं इमीसे रयणप्पभाए पुढवीए बहुसमरमणिज्जाओ भूमिभागाओ जावतियं सूरिए उड्ढंउच्चत्तेणं एवतियाए एगाए अद्धाए छायाणुमाणप्पमाणेणं उमाए तत्थ से सूरिए एगपोरिसीयं छायं णिव्वत्तेति, तत्थ जे ते एव०-ता अत्थि णं से देसे जंसि णं देसंसि सूरिए दुपोरिसिच्छायं णिव्वत्तेति ते एव०-ता सूरियस्स णं सव्वहेट्ठिमातो सूरियपडिधीतो बहिया अभिणिसट्ठिताहिं लेसाहिं ताडिज्जमाणीहिं इमीसे रयणप्पभाए पुढवीए बहुसमरमणिज्जातो भूमिभागातो जावतियं सूरिए

Jain Education International 2010_03 For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

उड्ढंउच्चत्तेणं एवतियाहिं दोहिं अद्धाहिं दोहिं छायाणुमाणप्पमाणेहिं उमाए एत्थ णं से सूरिए दुपोरिसियं छायं णिव्वत्तेति, एवं एक्केक्काए पडिवत्तीए भाणितव्वं जाव छण्णउतिमा पडिवत्ती एगे०, वयं पुण एवं वदामो-सातिरेगअउणट्ठिपोरिसीणं सूरिए पोरिसीछायं णिव्वत्तेति, अवड्ढपोरिसी णं छाया दिवसस्स किं गते वा सेसे वा ?, ता तिभागे गते वा सेसे वा, पोरिसीणं छाया दिवसस्स किं गते वा सेसे वा ?, ता चउब्भागे गते वा सेसे वा, ता दिवड्ढपोरिसीणं छाया दिवसस्स किं गते वा सेसे वा ?, ता पंचमभागे गते वा सेसे वा, एवं अद्धपोरिसिं छोढुं पुच्छा दिवसस्स भागं छोढुं वाकरणं जाव ता अद्धअउणासट्ठिपोरिसीछाया दिवसस्स किं गते वा सेसे वा ?, ता एगूणवीससतभागे गते वा सेसे वा, ता अउणसट्ठिपोरिसीणं छाया दिवसस्स किं गते वा सेसे वा ?, वीससयभागे गते वा सेसे वा, ता सातिरेगअउणसट्ठिपोरिसीणं छाया दिवसस्स किं गते वा सेसे वा ?, णत्थि किंचि गते वा सेसे वा, तत्थ खलु इमा पणवीसनिविट्ठा छाया पं० तं०-खंभच्छाया रज्जु० पागार० पासाय० उत्तर० उच्चत्त० अणुलोम० पडिलोम० आरूभिता उवहिता समा पडिहता खीलच्छाया पक्खच्छाया पुरतोउदग्गा पिट्ठओउदग्गा पुरिमकंठभागोवगता पच्छिमकंठभाओवगता छायाणुवादिणी किट्ठाणुवादिणीछाया छायछाया छायाविकप्पो वेहासच्छाया सगड० (कडच्छाया) गोलच्छाया, तत्थ णं गोलच्छाया अट्ठविहा पं० तं०-गोलच्छाया अवड्ढगोलच्छाया गोलगोल० अवड्ढगोलगोल० गोलावलि० अवड्ढगोलावलि० गोपुंज० अवड्ढगोलपुंज० ☆☆☆।३१। **णवमं पाहुडं ९॥** ☆☆☆ ता जोगेति वत्थुस्स आवलियाणिवाते आहि०, तां कहं ते जोगेति वत्थुस्स आवलियाणिवाते आहि० ?, तत्थ खलु इमाओ पंच पडिवत्तीओ पं०, तत्थेगे एव०-ता सव्वेवि णं णक्खत्ता कत्तियादिया भरणिपज्जवसाणा एगे एव० एगे पुण०-ता सव्वेवि णं णक्खत्ता महादीया अस्सेसापज्जवसाणा पं० एगे एव०, एगे पुण०-ता सव्वेवि णं णक्खत्ता धणिट्ठादीया सवणपज्जवसाणा पं० एगे एव०, एगे पुण०-ता सव्वेवि णं णक्खत्ता अस्सिणीआदीया रेवतिपज्जवसाणा पं० एगे एव०, एगे पुण०-सव्वेवि णं णक्खत्ता भरणीआदिया अस्सिणीपज्जवसाणा एगे एव०, वयं पुण एवं वदामो-सव्वेवि णं णक्खत्ता अभिइआदीया उत्तरासाढापज्जवसाणा पं० तं०-अभिई सवणो धणिट्ठा सतभिसया पुव्वभद्दवता उत्तरभद्दवया रेवती अस्सिणी भरणी कत्तिया रोहिणी मिगसिरं अद्दा पुणव्वसू पुस्सो असिलेसा महा पुव्वा फग्गुणी उत्तरा फग्गुणी हत्थो चित्ता साती विसाहा अनुराहा जेट्ठा मूलो पुव्वासाढा उत्तरासाढा।३२॥१०-१॥ (२०६) ता कहं ते मुहुत्तग्गे आहि० ?, ता एतेसिं णं अट्ठावीसाए णक्खत्ताणं अत्थि णक्खत्ते जे णं णव मुहुत्ते सत्तावीसं च सत्तट्ठिभागे मुहुत्तस्स चंदेणं सद्धिं जोयं जोएति, अत्थि णक्खत्ता जे णं पण्णरसमुहुत्ते चंदेणं सद्धिं जोयं जोएंति, अत्थि णक्खत्ता जे णं तीसं०, अत्थि णक्खत्ता जे णं पणतालीसं मुहुत्ते चंदेणं सद्धिं जोयं जोएंति, ता एएसिं णं अट्ठावीसाए नक्खत्ताणं कयरे नक्खत्ते जे णं नव मुहुत्ते सत्तावीसं च सत्तट्ठिभाए मुहुत्तस्स चंदेणं सद्धिं जोएन्ति ?, कयरे नक्खत्ता जे णं पण्णरसमुहुत्ते० कतरे नक्खत्ता जे णं तीसं मुहुत्ते चंदेण० कतरे नक्खत्ता जे णं पणयालीसं मुहुत्ते० ?, ता एएसिं णं अट्ठवीसाए णक्खत्ताणं तत्थ जे से णक्खत्ते जे णं णव मुहुत्ते सत्तावीसं च सत्तट्ठिभागे मुहुत्तस्स चंदेण० से णं एगे अभीयी, तत्थ जे ते णक्खत्ता जे णं पण्णरस मुहुत्ते चंदेण० ते णं छ, तं०-सतभिसया भरणी अद्दा अस्सेसा साती जेट्ठा, तत्थ जे ते णक्खत्ता जे णं तीसं मुहुत्ते चंदेण० ते पण्णरस, तं०-सवणे धणिट्ठा पुव्वा भद्दवता रेवती अस्सिणी कत्तिया मग्गसिरं पुस्सो महा पुव्वा फग्गुणी हत्थो चित्ता अणुराहा मूलो पुव्वासाढा, तत्थ जे ते णक्खत्ता जे णं पणतालीसं मुहुत्ते चंदेणं सद्धिं जोगं जोएंति ते णं छ, तं०-उत्तरा भद्दपदा रोहिणी पुणव्वसू उत्तरा फग्गुणी विसाहा उत्तरसाढा।३३। ता एतेसिं णं अट्ठावीसाए णक्खत्ताणं अत्थि णक्खत्ते जे णं चत्तारि अहोरत्ते छच्च मुहुत्ते सूरेण सद्धिं जोयं जोएति, अत्थि णक्खत्ता जे णं छ अहोरत्ते एक्कवीसं च मुहुत्ते सूरेण० अत्थि णक्खत्ता जे णं तेरस अहोरत्ते बारस य मुहुत्ते सूरेण० अत्थि णक्खत्ता जे णं वीसं अहोरत्ते तिण्णि य मुहुत्ते०, ता एतेसिं णं अट्ठावीसाए णक्खत्ताणं कतरे णक्खत्ते जे णं चत्तारि अहोरत्ते छच्च मुहुत्ते सूरेण० कतरे णक्खत्ते जे णं छ अहोरत्ते एक्कवीसं मुहुत्ते सूरेणं० कतरे णक्खत्ता जे णं तेरस अहोरत्ते बारस य मुहुत्ते सूरेण० कतरे णक्खत्ता जे णं वीसं अहोरत्ते तिण्णि य मुहुत्ते सूरेण० ?, एतेसिं णं अट्ठावीसाए णक्खत्ताणं तत्थ जे से णक्खत्ते जे णं चत्तारि अहोरत्ते छच्च मुहुत्ते

For Private & Personal Use Only

सूरेण० से णं एगे अभीयी, एवं उच्चारेयव्वाइं जाव तत्थ जे ते णक्खत्ता जे णं वीसं अहोरत्ते तिण्णि य मुहुत्ते सूरेण सद्धिं जोयं जोएंति ते णं छ, तं०-उत्तरा भद्दवता जाव उत्तरासाढा।३४॥१०-२॥ ता कहं ते एवंभागा आहि० ?, ता एतेसिं णं अट्ठावीसाए णक्खत्ताणं अत्थि णक्खत्ता पुव्वंभागा समखेत्ता तीसतिमुहुत्ता पं०, अत्थि णक्खत्ता पच्छंभागा समक्खेत्ता तीसमुहुत्ता पं०, अत्थि णक्खत्ता णत्तंभागा अवड्ढखेत्ता पण्णरसमुहुत्ता पं०, अत्थि णक्खत्ता उभयंभागा दिवड्ढखेत्ता पणतालीसंमुहुत्ता पं०, ता एएसिं णं अट्ठावीसाए णक्खत्ताणं कतरे णक्खत्ता पुव्वंभागा समखेत्ता तीसतिमुहुत्ता पं० कतरे णक्खत्ता पच्छंभाग समक्खेत्ता तीसमुहुत्ता पं० कतरे णक्खत्ता णत्तंभागा अवड्ढखेत्ता पण्णरसमुहुत्ता पं० कतरे नक्खत्ता उभयंभागा दिवड्ढखेत्ता पणतालीसतिमुहुत्ता पं० ?, ता एतेसिं णं अट्ठावीसाए णक्खत्ताणं तत्थ जे ते णक्खत्ता पुव्वंभागा समखेत्ता तीसतिमुहुत्ता पं० ते णं छ, तं०-पुव्वा पोट्ठवता कत्तिया मघा पुव्वा फग्गुणी मूलो पुव्वासाढा, तत्थ जे ते णक्खत्ता पच्छंभागा समखेत्ता तीसतिमुहुत्ता पं० ते णं दस, तं०-अभिई सवणो धणिट्ठा रेवती अस्सिणी मिगसिरं पूसो हत्थो चित्ता अणुराधा, तत्थ जे ते ण णक्खत्ता णत्तंभागा अवद्धखेत्ता पण्णरसमुहुत्ता पं० ते णं छ, तं०-सयभिसया भरणी अद्दा अस्सेसा साती जेट्ठा, तत्थ जे ते णक्खत्ता उभयंभागा दिवड्ढखेत्ता पणतालीसंमुहुत्ता पं० ते णं छ, तं०-उत्तरा पोट्ठवता रोहिणी पुणव्वसू उत्तरा फग्गुणी विसाहा उत्तरासाढा।३५॥१०-३॥ ता कहं ते जोगस्स आदी आहि० ?, ता अभियीसवणा खलु दुवे णक्खत्ता पच्छाभागा समखित्ता सातिरेगऊतालीसतिमुहुत्ता तप्पढमयाए सायं चंदेण सद्धिं जोयं जोएंति, ततो पच्छा अवरं सातिरेयं दिवसं, एवं खलु अभिईवसणा दुवे णक्खत्ता एगराइं एगं च सातिरेगं दिवसं चंदेण सद्धिं जोगं जोएंति त्ता जोयं अणुपरियट्टंति त्ता सायं चंदं धणिट्ठाणं समप्पंति, ता धणिट्ठा खलु णक्खत्ते पच्छंभागे समक्खेत्ते तीसतिमुहुत्ते तप्पढमयाए सायं चंदेण सद्धिं जोगं जोएति त्ता जोयं० त्ता ततो पच्छा राइं अवरं च दिवसं, एवं खलु धणिट्ठाणक्खत्ते एगं च राइं एगं च दिवसं चंदेण सद्धिं जोयं जोएति त्ता जोयं अणुपरियट्टेति त्ता सायं चंदं सतभिसयाणं समप्पेति, ता सयभिसया खलु णक्खत्ते णत्तंभागे अवड्ढखेत्ते पण्णरसमुहुत्ते तप्पढमताए सायं चंदेण सद्धिं जोयं जोएति णो लभति अवरं दिवसं, एवं खलु सयभिसया णक्खत्ते एगं राइं चंदेण सद्धिं जोयं जोएति त्ता जोयं अणुपरियट्टति त्ता ता चंदं पुव्वाणं पोट्ठवताणं समप्पेति, ता पुव्वा पोट्ठवता खलु नक्खत्ते पुव्वंभागे समखेत्ते तीसतिमुहुत्ते तप्पढमताए पातो चंदेणं सद्धिं जोयं जोएति ततो पच्छा अवरराइं, एवं खलु पुव्वा पोट्ठवता णक्खत्ते पुव्वंभागे समखित्ते तीसमुंहुत्ते एगं च दिवसं एगं च राइं चंदेणं सद्धिं जोयं जोएति त्ता जोयं अणुपरियट्टति त्ता पातो चंदं उत्तरापोट्ठवताणं समप्पेति, ता उत्तरापोट्ठवता खलु नक्खत्ते उभयंभागे दिवड्ढखेत्ते पणतालीसमुहुत्ते तप्पढमयाए पातो चंदेणं सद्धिं जोयं जोएति अवरं च रातिं ततो पच्छा अवरं दिवसं, एवं खलु उत्तरापोट्ठवताणक्खत्ते एगं दिवसं एगं च राइं अवरं च दिवसं चंदेण सद्धिं जोयं जोएति त्ता जोयं अणुपरियट्टति त्ता सायं चंदं रेवतीणं समप्पेति, ता रेवती खलु णक्खत्ते पच्छंभागे सम० जहा धणिट्ठा जाव सागं चंदं अस्सिणीणं समप्पेति, ता अस्सिणी खलु णक्खत्ते पच्छिमभागे तमखेत्ते तीसतिमुहुत्ते तप्पढमताए सागं चंदेण सद्धिं जोयं जोएति, ततो पच्छा अवरं दिवसं, एवं खलु अस्सिणीणक्खत्ते एगं च राइं एगं च दिवसं चंदेणं सद्धिं जोयं जोएति त्ता जोगं अणुपरियट्टइ त्ता सांगं चंदं भरणीणं समप्पेति, ता भरणी खलु णक्खत्ते णत्तंभागे अवड्ढखेत्ते जहा सतभिसया जाव पादो चंदं कत्तियाणं समप्पेति, एवं जहा सयभिसया तहा नत्तंभागा नेयव्वा, एवं जहा पुव्वभद्दवता तहेव पुव्वंभागा छप्पि णेयव्वा, जहा धणिट्ठा तहा पच्छंभागा अट्ठ णेयव्वा जाव एवं खलु उत्तरासाढा दो दिवसे एगं च रातिं चंदेणं सद्धिं जोगं जोएति त्ता जोगं अणुपरियट्टति त्ता सायं चंदं अभितिसमणाणं समप्पेति।३६॥१०-४॥ ता कहं ते कुला आहि० ?, तत्थ खलु इमे बारस कुला बारस उवकुला चत्तारि कुलोवकुला पं०, बारस कुला तं०-धणिट्ठाकुलं उत्तराभद्दवता० अस्सिणी० कत्तिया० मगसिरं० पुस्सो० महा० उत्तराफग्गुणी० चित्ता० विसाहा० मूलो० उत्तरासाढाकुलं, बारस उवकुला तं०-सवणो उवकुलं पुव्वपोट्ठवता० रेवती० भरणी० रोहिणी० पुण्णव्वसु० अस्सेसा० पुव्वाफग्गुणी० हत्थो० साती० जेट्ठा० पुव्वा साढा०, चत्तारि कुलोवकुला तं०-'अभीयीकुलोवकुलं सतभिसया० अद्दा० अणुराधाकुलोवकुलं।३७॥१०-५॥ ता कहं ते पुण्णिमासिणी आहि० ?, तत्थ खलु इमाओ बारस पुण्णिमासिणीओ बारस अमावासाओ पं०-सावित्ती

Education International 2010_03 For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

पोट्ठवती आसोई कत्तिया मग्गसिरी पोसी माही फग्गुणी चेत्ती विसाही जेट्ठामूली आसाढी, ता सावित्ठिण्णं पुण्णमासिं कति णक्खत्ता जोएंति ?, ता तिण्णि णक्खत्ता जोइंति, तं०-अभिई सवणो धणिट्ठा, ता पुट्ठवतीण्णं पुण्णिमं कति णक्खत्ता जोएंति ?, ता तिन्नि नक्खत्ता जोयंति, तं०-सतभिसया पुव्वापुट्ठवता उत्तरापुट्ठवता, ता आसोदिण्णं कति णक्खत्ता जोएंति ?, ता दोण्णि णक्खत्ता जोएंति, तं०-रेवती य अस्सिणी य, कत्तियण्णं पुण्णिमं पुच्छा, ता दोण्णि णक्खत्ता जोएंति तं०-भरणी कत्तिया य, एएणं अभिलावेणं मगसिरिं० दोण्णि तं०-रोहिणी मग्गसिरो य, पोसिण्णं तिन्नि तं०-अद्दा पुणव्वसू पुस्सो, माहिण्णं दोण्णिं तं०-अस्सेसा महा य, फग्गुणीण्णं दोण्णिं तं०-पुव्वाफग्गुणी उत्तराफग्गुणी य, चित्तिण्णं दोण्णि तं०-हत्थो चित्ता य, ता विसाहिण्णं दोण्णि साती विसाहा य, जेट्ठामूलिण्णं तिण्णि अणुराहा जेट्ठा मूलो, आसाढिण्णं दोन्नि पुव्वासाढा उत्तरासाढा ।३८। ता सावित्ठिण्णं पुण्णमासिणिं किं कुलं जोएति उवकुलं जो० कुलोवकुलं जोएति ?, ता कुलं वा० उवकुलं वा० कुलोवकुलं वा जोएति, कुलं जोएमाणे धणिट्ठाणक्खत्ते० उवकुलं जोएमाणो सवणे णक्खत्ते० कुलोवकुलं जोएमाणे अभिईणक्खत्ते जोएति, सावित्ठिं पुण्णिमं कुलं वा० उवकुलं वा० कुलोवकुलं वा जोएति, कुलेण वा उवकुलेण वा कुलोवकुलेण वा जुत्ता सावित्ठी पुण्णिमा जुत्ताति वत्तव्वं सिया, ता पोट्ठवतिण्णं पुण्णिमं किं कुलं० ? तहेव पुच्छा, ता कुलं वा० उवकुलं वा० कुलोवकुलं वा जोएति, कुलं जोएमाणे उत्तरा पोट्ठवया णक्खत्ते जोएति उवकुलं जोएमाणे पुव्वा पुट्ठवता णक्खत्ते जोएति कुलोवकुलं जोएमाणे सतभिसया णक्खत्ते जोएति, ता पोट्ठवतिं कुलं वा उवकुलं वा कुलोवकुलं वा जोएति तं चेव जाव पुट्ठवती पुण्णिमा जुत्ताति वत्तव्वं सिया, ता आसोइं णं पुण्णमासिणिं किं कुलं पुच्छा, णो लभति कुलोवकुलं, कुलं जोएमाणे अस्सिणीणक्खत्ते जोएति उवकुलं जोएमाणे रेवतीणक्खत्ते जोएति, आसोइं णं पुण्णिमं च कुलं वा उवकुलं वा जोएति, कुलेण वा जुत्ता उवकुलेण वा जुत्ता अस्सोई पुण्णिमा जुत्ताति वत्तव्वं सिया, एवं एएणं अभिलावेणं णेतव्वाउ पोसं पुण्णिमं जेट्ठामूलिं पुण्णिमं च कुलोवकुलाइं भाणियव्वाइं सेसासु णत्थि कुलोवकुलं, जाव आसाढीपुन्नमासिणी जुत्ताति वत्तव्वं सिया, दुवालस अमावासाओ सावट्ठी जाव आसाढी, ता सावित्ठिं णं अमावासं कति णक्खत्ता जोएंति ?, दुन्नि नक्खत्ता जोएंति, तं०-अस्सेसा य महा य, एवं एतेणं अभिलावेणं णेतव्वं, पोट्ठवतीं दोन्नि तं०-पुव्वा फग्गुणी उत्तरा फग्गुणी, अस्सोइं दोन्नि हत्थो चित्ता य, कत्तिइं दोन्नि साती विसाहा य, मग्गसिरं तिन्नि अणुराधा जेट्ठा मूलो, पोसिं दोन्नि पुव्वासाढा उत्तरासाढा, माहिं तिन्नि अभीयी सवणो धणिट्ठा, फग्गुणीं तिण्णि सतभिसया पुव्वापोट्ठवता उत्तरापोट्ठवता, चेत्तिं तिन्नि उत्तरा भद्दवता रेवती अस्सिणी विसाहिं दोण्णि भरणी कत्तिया य जेट्ठामूलिं रोहिणी मगसिरं च, ता आसाढिं णं अमावासं कति णक्खत्ता जोएंति ?, ता तिण्णि तं०-अद्दा पुणव्वसू पुस्सो, ता सावित्ठिं णं अमावासं किं कुलं पुच्छा ?, कुलं वा० उवकुलं वा० नो लब्भइ कुलोवकुलं, कुलं जोएमाणे महाणक्खत्ते जोएति उवकुलं जोएमाणे असिलेसा जोएइ, कुलेण वा जुत्ता उवकुलेण वा जुत्ता सावित्ठी अमावासा जुत्ताति वत्तव्वं सिया, एवं मग्गसिरीए माहीए फग्गुणीए आसाढीए य अमावासाए कुलोक्कुलं भाणियव्वं, सेसाणं कुलोवकुलं नत्थि ।३९॥१०-६॥ ता कहं ते सण्णिवाते आहि० ?, ता जया णं सावित्ठी पुण्णिमा भवति तता णं माही अमावासा भवति जया णं माही पुण्णिमा भवति तता णं सावित्ठी अमावासा भवति, जता णं पुट्ठवती पुण्णिमा भवति तता णं फग्गुणी अमावासा भवति जया णं फग्गुणी पुण्णिमा भवति तता णं पुट्ठवती अमावासा भवति, एवं एएणं अभिलावेणं आसोइए चेत्तीए य कत्तीए वेसाहीए मगसिराए जेट्ठामूलीए य, जता णं पोसी पुण्णिमा भवति तता णं आसाढी अमावासा भवति जता णं आसाढी पुण्णिमा भवति तता णं पोसी अमावासा भवति ।४०॥१०-७॥ ता कहं ते नक्खत्तसंठिती आहि० ?, ता एएसिं णं अट्ठावीसाए णक्खत्ताणं अभीयी गोसीसावलिसंठिते सवणे काहारसंठिते पं० धणिट्ठा सउणिपलीणगसंठिते सयभिसया पुप्फोवयारसं ठिते, एवं पुव्वापोट्ठवता अवड्ढवाविसंठिते, एवं उत्तरावि, रेवतीणक्खत्ते णावासंठिते अस्सिणीणक्खत्ते आसक्खंधसंठिते भरणीणक्खत्ते भगसंठिए कत्तियाणक्खत्ते छुरघरसंठिते पं० रोहिणीणक्खत्ते सगडुद्धिसंठिते मिगसिराणक्खत्ते मगसीसावलिसंठिते अद्दाणक्खत्ते रूधिरबिंदुसंठिए पुणव्वसू तुलासंठिए पुप्फे वद्धमाण० अस्सेसा पडागसंठिए महा पागारसंठिते पुव्वाफग्गुणी अद्धपलियंकसंठिते, एवं उत्तरावि, हत्थे हत्थसंठिते चित्ता मुहफुल्लसंठिते साती खीलगसंठिते विसाहा दामणिसंठिते अणुराधा एगावलिसंठिते जेट्ठा

Jain Education International 2010_03 For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

गयदंतसंठिते मूले विच्छुयलंगुलसंठिते पुव्वासाढा गयविक्कमसंठिते उत्तरासाढा सीहनिसाइयसंठिते ।४१॥१०-८॥ ता कहं ते णक्खत्ताणं तारग्गे आहि० ?, ता एतेसिं णं अट्ठावीसाए णक्खत्ताणं अभीईणक्खत्ते तितारे पं०, सवणे णक्खत्ते ?, तितारे, धनिट्ठा ?, पणतारे, सतभिसया ?, सततारे, पुव्वा पोट्ठवता ?, दुतारे, एवं उत्तरावि, रेवती० ?, बत्तीसतितारे, अस्सिणी० ?, तितारे, भरणी तितारे कत्तिया छतारे रोहिणी पंचतारे मिगसिरे तितारे अद्दा एगतारे पुणव्वसू पंचतारे पुस्से तितारे अस्सेसा छत्तारे महा सत्ततारे पुव्वा फग्गुणी दुतारे एवं उत्तरावि हत्थे पंचतारे चित्ता एकतारे साती एकतारे विसाहा पंचतारे अणुराहा चउतारे जेट्ठा तितारे मूले एक्कारतारे पुव्वासाढा चउतारे उत्तरासाढाणक्खत्ते चउतारे पं० ।४२॥१०-९॥ ता कहं ते णेता आहि० ?, ता वासाणं पढमं मासं कति णक्खत्ता णेंति ?, ता चत्तारि णक्खत्ता णिंति, तं०-उत्तरासाढा अभिई सवणो धणिट्ठा, उत्तरासाढा चोद्दस अहोरत्ते णेति, अभिई सत्त अहोरत्ते णेति, सवणे अट्ठ अहोरत्ते णेति, धणिट्ठा एगं अहोरत्तं नेइ, तंसि णं मासंसि चउरंगुलपोरिसीए छायाए सूरिए अणुपरियट्टति, तस्स णं मासस्स चरिमे दिवसे दो पादाइं चत्तारि य अंगुलाणि पोरिसी भवति, ता वासाणं दोच्चं मासं कति णक्खत्ता णेंति ?, ता चत्तारि णक्खत्ता णेंति, तं०-धणिट्ठा सतभिसया पुव्वपुट्ठवता उत्तरपोट्ठवया, एवं एएणं अभिलावेणं जहेव जंबुद्दीवपन्नत्तीए तहेव इत्थंपि भाणियव्वं जाव तंसि च णं मासंसि वट्टाए समचउरंससंठिताए णग्गोधपरिमंडलाए सकायमणुरंगिणीए छायाए सूरिए अणुपरियट्टति, तस्स णं मासस्स चरिमे दिवसे लेहट्ठाइं दो पादाइं पोरिसी भवति ।४३॥१०-१०॥ ता कहं ते चंदमग्गा आहि० ?, ता एएसि णं अट्ठावीसाए णक्खत्ताणं अत्थि णक्खत्ता जे णं सता चंदस्स दाहिणेणं जोअं जोएंति, अत्थि णक्खत्ता जे णं सता चंदस्स उत्तरेणं० अत्थि णक्खत्ता जे णं चंदस्स दाहिणेणवि उत्तरेणवि पमद्दंपि० अत्थि णक्खत्ता जे णं चंदस्स दाहिणेणवि पमद्दंपि० अत्थि णक्खत्ता जे णं चंदस्स सदा पमद्दं०, ता एएसिं णं अट्ठावीसाए नक्खत्ताणं कतरे नक्खत्ता जे णं सता चंदस्स दाहिणेणं जोयं जोएंति ?, तहेव जाव कतरे नक्खत्ता जे णं सदा चंदस्स पमद्दं० ?, ता एतेसिं णं अट्ठावीसाए नक्खत्ताणं तत्थ जे णं नक्खत्ता सया चंदस्स दाहिणेणं० ते णं छ, तं०-संठाणा अद्दा पुस्सो अस्सेसा हत्थो मूलो, तत्थ जे ते णक्खत्ता जे णं सदा चंदस्स उत्तरेणं जोयं जोएंति ते णं बारस, तं०-अभिई सवणो धणिट्ठा सतभिसया पुव्वभद्दवया उत्तरा पोट्ठवता रेवती अस्सिणी भरणी पुव्वा फग्गुणी उत्तरा फग्गुणी साती, तत्थ जे ते णक्खत्ता जे णं चंदस्स दाहिणेणवि उत्तरेणवि पमद्दंपि० ते णं सत्त तं०-कत्तिया रोहिणी पुणव्वसू महा चित्ता विसाहा अणुराहा, तत्थ जे ते नक्खत्ता जे णं चंदस्स दाहिणेणवि पमद्दंपि० ताओ णं दो आसाढाओ सव्वबाहिरे मंडले जोयं जोएंसु वा जोएंति वा जोएस्संति वा, तत्थ जे से णक्खत्ते जे णं सदा चंदस्स पमद्दं जोयं जोएति सा णं एगा जेट्ठा ।४४। ता कति ते चंदमंडला पं० ?, ता पण्णरस चंदमंडला ता एएसिं णं पण्णरसण्हं चंदमंडलाणं अत्थि चंदमंडला जे णं सया णक्खत्तेहिं अविरहिया अत्थि चंदमंडला जे णं सया णक्खत्तेहिं विरहिया अत्थि चंदमंडला जे णं रविससिणक्खत्ताणं सामण्णा भवंति अत्थि चंदमंडला जे णं सया आदिच्चेहिं विरहिया, ता एतेसिं णं पण्णरसण्हं चंदमंडलाणं कयरे चंदमंडला जे णं सता णक्खत्तेहिं अविरहिया जाव कयरे चंदमंडला जे णं सदा आदिच्चविरहिता ?, ता एतेसिं णं पण्णरसण्हं चंदमंडलाणं तत्थ जे ते चंदमंडला जे णं सदा णक्खत्तेहिं अविरहिता ते णं अट्ठ, तं०-पढमे चंदमंडले ततिए० छट्ठे० सत्तमे० अट्ठमे० दसमे० एक्कादसे० पण्णरसमे चंदमंडले, तत्थ जे ते चंदमंडला जे णं सदा णक्खत्तेहिं विरहिया ते णं सत्त, तं०-बितिए० चउत्थे० पंचमे० नवमे० बारसमे० तेरसमे० चउदसमे चंदमंडले, तत्थ जे ते चंदमंडला जे णं ससिरविनक्खत्ताणं सामण्णा भवंति ते णं चत्तारि, तं०-पढमे० बीए० इक्कारसमे० पन्नरसमे चंदमंडले, तत्थ जे ते चंदमंडला जे णं सदा आदिच्चविरहिता ते णं पंच, तं०-छट्ठे० सत्तमे० अट्ठमे० नवमे० दसमे चंदमंडले ।४५।१०-११॥ ता कहं ते देवताणं अज्झयणा आहि० ?, ता एएसिं णं अट्ठावीसाए नक्खत्ताणं अभिई णक्खत्ते किंदेवताए पं० ?, बंभदेवयाए पं०, सवणे विण्हुदेवयाए, एवं जहा जंबुद्दीवपन्नत्तीए जाव उत्तरासाढा विस्सदेवयाए पं० ।४६।१०-१२॥ ता कहं ते मुहुत्ताणं नामधेज्जा आहि० ?, ता एगमेगस्स णं अहोरत्तस्स तीसं मुहुत्ता पं० तं०-'रोद्दे सेते मित्ते वायु सुपीए तहेव अभिचंदे। माहिंद बलव बंभो बहुसच्चे १० चेव ईसाणे ॥२०॥ तट्ठेय भावियप्पा वेसमणे वारूणे य आणंदे। विजए य वीससेणे पयावई चेव उवसमे य २० ॥२१॥ गंधव्व अग्गिवेसे सयरिसहे आयवं च अममे य। अणवं च भोम रिसहे

For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

सव्वट्ठे रक्खसे चेव ३० ॥२२॥४७॥१०-१३॥ ता कहं ते दिवसा आहि० ?, ता एगमेगस्स णं पक्खस्स पन्नरस २ दिवसा पं० तं०-पडिवादिवसे बितियादिवसे जाव पण्णरसीदिवसे, ता एतेसिं णं पण्णरसण्हं दिवसाणं पन्नरस नामधेज्जा पं० तं०-पुव्वंगे सिद्धमणोरमे य तत्तो मणोहरो चेव। जसभद्दे य जसोधर सव्वकामसमिद्धेति य ॥२३॥ इंद मुद्धाभिसते य सोमणस धणंजए य बोद्धव्वे। अत्थसिद्धे अभिजाते अच्चसणे य सतंजए ॥२४॥ अग्गिवेसे उवसमे दिवसाणं नामधेज्जाइं ॥ ता कहं ते रातीओ आहि० ?, ता एगमेगस्स णं पक्खस्स पण्णरस राईओ पं० तं०-पडिवा राई जाव पण्णरसी राई, ता एतासिं णं पण्णरसण्हं राईणं पण्णरस नामधेज्जा पं० तं०-उत्तमा य सुणक्खत्ता, एलावच्चा जसोधरा। सोमणसा चेव तधा, सिरिसंभूता य बोद्धव्वा ॥२५॥ विजया य विजयंती जयंति अपराजिया य मच्छा य। समाहारा चेव तधा तेया य तहा य अतितेया ॥२६॥ देवाणंदा निरती रयणीणं णामधेज्जाइं।४८।१०-१४॥ ता कहं ते तिही आहि० ?, तत्थ खलु इमा दुविहा तिही पं० तं०-दिवसतिही राईतिही य, ता कहं ते दिवसतिही आहि० ?, ता एगमेगस्स णं पक्खस्स पण्णरस २ दिवसतिही पं०, तं०-णंदे भद्दे जए तुच्छे पुण्णे पक्खस्स पंचमी पुणरवि णंदे भद्दे जए तुच्छे पुण्णे पक्खस्स दसमी पुणरवि णंदे भद्दे जये तुच्छे पुण्णे पक्खस्स पण्णरसी, एवं ते तिगुणा तिहीओ सव्वेसिं दिवसाणं, कहं ते राईतिधी आहि० ?, एगमेगस्स णं पक्खस्स पण्णरस रातितिधी पं० तं०-उग्गवती भोगवती जसवती सव्वट्ठसिद्धा सुहणामा पुणरवि उग्गवती भोगवती जसवती सव्वट्ठसिद्धा सुहणामा पुणरवि उग्गवती भोगवती जसवती सव्वट्ठसिद्धा सुहणामा, एते तिगुणा तिहीओ सव्वासिं रातीणं।४९।१०-१५॥ ता कहं ते गोत्ता आहि० ?, ता एतेसिं णं अट्ठावीसाए णक्खत्ताणं अभीइणक्खत्ते किंगोत्ते पं० ?, ता मोग्गल्लायणसगोत्ते पं०, सवणे संखायणसगोत्ते, धणिट्ठाणक्खत्ते अग्गितावसगोत्ते पं०, सतभिसयाणक्खत्ते ?, कण्णउ (नो) लोयणसगोत्ते पं०, पुव्वापोट्ठवताणक्खत्ते जाउकण्णियसगोत्ते पं०, उत्तरपोट्ठवताणक्खत्ते धणंजयसगोत्ते पं०, रेवतीणक्खत्ते० ?, पुस्सायणसगोत्ते पं०, अस्सिणीनक्खत्ते अस्सादणसगोत्ते पं०, भरणीणक्खत्ते भग्गवेसायणगोत्ते पं०, कत्तियाणक्खत्ते अग्गिवेससगोत्ते पं०, रोहिणीणक्खत्ते गोतमसगोत्ते पं०, संठाणाणक्खत्ते ?, भारद्दायसगोत्ते पं०, अद्दाणक्खत्ते ?, लोहिच्चायणसगोत्ते पं०, पुणव्वसुणक्खत्ते ?, वासिट्ठसगोत्ते पं०, पुस्से उमज्जायणसगोत्ते पं०, अस्सेसा० ?, मंडव्वायणसगोत्ते पं०, महा० ?, पिंगायणसगोत्ते पं०, पुव्वा फग्गुणी० ?, गोवल्लायणसगोत्ते पं०, उत्तरा फग्गुणी० ?, कासवगोत्ते पं०, हत्थे० ?, कोसियगोत्ते पं०, चित्ता० दब्भियायणसगोत्ते पं०, साई० ?, चामरछाभणगोत्ते पं०, विसाहा० ?, सुंगायणसगोत्ते पं०, अणुराधा० ?, गोलव्वायणसगोत्ते पं०, जेट्ठा० ?, तिगिच्छायणसगोत्ते पं०, मूले० ?, कच्चायणसगोत्ते पं०, पुव्वासाढा० ?, वज्झियायणसगोत्ते पं०, उत्तरासाढाणक्खत्ते किंगोत्ते पं० ?, वग्घावच्चसगोत्ते पं०।५०॥१०-१६॥ ता कहं ते भोयणा आहि० ?, ता एएसिं णं अट्ठावीसाए णक्खत्ताणं कत्तियाहिं दधिणा भोच्चा कज्जं साधिंति, रोहिणीहिं वसभमंसेण भोच्चा कज्जं साधेंति, संठाणाहिं मिगमंसेण अद्दाहिं णवणीतेण भोच्चा पुणव्वसुणा घतेण पुस्सेणं खीरेण अस्सेसाए दीवगमंसेण महाहिं कसरिं पुव्वाहिं फग्गुणीहिं मेढकमंसेण उत्तराहिं फग्गुणीहिं णक्खीमंसेणं हत्थेणं वत्थाणीपण्णेणं चित्ताहिं मुग्गसूवेणं सादिणा फलाइं विसाहाहिं आसित्तियाओ अणुराहाहिं मिस्साकूरं जेट्ठाहिं ओलट्ठिएणं मूलेणं मूलापण्णे (लसाए) णं पुव्वाहिं आसाढाहिं आमलगसरीरेणं उत्तराहिं आसाढाहिं विलेविं अभीयिणा पुप्फेहिं सवणेणं खीरेणं धणिट्ठाहिं जूसेण सयभिसयाए तुवरीओ पुव्वाहिं पुट्ठवयाहिं कारिल्लएहिं उत्तराहिं पुट्ठवताहिं वराहमंसेणं रेवतीहिं जलयरमंसेण अस्सिणीहिं तित्तिरमंसेणं वट्टकमंसं वा भरणीहिं तिलतंदुलकं भोच्चा कज्जं साधेंति।५१।१०-१७॥ ता कहं ते चा (वा) रा आहि० ?, ता तत्थ खलु इमा दुविहा चारा पं० तं०-आदिच्चचारा य चन्दचारा य, ता कहं ते चंदचारा आहि० ?, ता पंचसंवच्छरिए णं जुगे अभीइणक्खत्ते सत्तसट्ठिचारे चंदेण सद्धिं जोयं जोएति, सवणे णं णक्खत्ते सत्तट्ठिं चारे चंदेण सद्धिं जोयं जोएति, एवं जाव उत्तरासाढाणक्खत्ते सत्तट्ठिचारे चंदेणं सद्धिं जोयं जोएति, ता कहं ते आइच्चचारा आहि० ?, ता पंचसंवच्छरिए णं जुगे अभीयीणक्खत्ते पंचचारे सूरेणं सद्धिं जोयं जोएति, एवं जाव उत्तरासाढाणक्खत्ते पंचचारे सूरेण सद्धिं जोयं जोएति।५२।१०-१८॥ ता कहं ते मासा आहि० ?, ता एगमेगस्स णं संवच्छरस्स बारस मासा पं०, तेसिं च दुविहा नामधेज्जा पं० तं०-लोइया लोउत्तरिया य, तत्थ लोइया णामा सावणे भद्दवते आसोए जाव आसाढे,

Jain Education International 2010_03 For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

लोउत्तरियां णामा-अभिणंदे सुपइट्ठे य, विजये पीतिवद्धणे। सेज्जंसे सिवे यावि, सिसिरे य सहेमवं ॥२७॥ नवमे वसंतमासे, दसमे कुसुमसंभवे। एकादसमे णिदाहो, वणविरोही य बारसे ॥२८॥५३॥१०-१९॥ ता कति णं भंते ! संवच्छरा आहि० ?, ता पंच संवच्छरा आहि० तं०-णक्खत्तसंवच्छरे जुग० पमाण० लक्खण० सणिच्छरसंवच्छरे।५४। ता णक्खत्तसंवच्छरे णं दुवालसविहे पं तं०-सावणे भद्दवए जाव आसाढे, जं वा वहस्सती महग्गहे दुवालसहिं संवच्छरेहिं सव्वं णक्खत्तमंडलं समाणेति।५५। ता जुगसंवच्छरे णं पंचविहे पं० तं०-चंदे चंदे अभिवड्ढिए चंदे अभिवड्ढिए चेव, ता पढमस्स णं चंदसंवच्छरस्स चउवीसं पव्वा पं०, दोच्चस्स णं चंदसंवच्छरस्स चउवीसं पव्वा पं०, तच्चस्स णं अभिवड्ढितसंवच्छरस्स छव्वीसं पव्वा पं०, चउत्थस्स णं चंदसंवच्छरस्स चउवीसं पव्वा पं०, पंचमस्स णं अभिवड्ढियसंवच्छरस्स छव्वीसं पव्वा पं०, एवामेव सपुव्वावरेणं पंचसंवच्छरिए जुगे एगे चउवीसे पव्वसते भवतीतिमक्खातं।५६। ता पमाणसंवच्छरे पंचविहे पं० तं०-नक्खत्ते चंदे उडू आइच्चे अभिवड्ढिए।५७। ता लक्खणसंवच्छरे पंचविहे पं० तं०-नक्खत्ते चंदे उडू आइच्चे अभिवड्ढिए, ता णक्खत्ते णं संवच्छरे णं पंचविहे पं० तं०-समगं णक्खत्ता जोयं जोएंति १ समगं उदू परिणमंति २। नच्चुण्हं ३ नाइसीए ४ बहूउदए ५ होइ नक्खत्ते ॥२९॥ ससि समग पुन्निमासिं जोइंता विसमचारिनक्खत्ता। कडुओ बहुउदवओ य तमाहु संवच्छरं चंदं ॥३०॥ विसमं पवालिणो परिणमंति अणुऊसु दिंति पुप्फफलं। वासं न सम्म वासइ तमाहु संवच्छरं कम्मं ॥३१॥ पुढविदगाणं च रसं पुप्फफलाणं च देइ आइच्चे। अप्पेणवि वासेणं संमं निप्फज्जए सस्सं ॥३२॥ आइच्चतेयतविया खणलवदिवसा उऊ परिणमन्ति। पूरेति निण्णथलये तमाहु अभिवड्ढितं जाण ॥३३॥ता सणिच्छरसंवच्छरे णं अट्ठावीसतिविहे पं० तं०-अभियी सवणे जाव उत्तरासाढा, जं वा सणिच्छरे महग्गहे तीसाए संवच्छरेहिं सव्वं णक्खत्तमंडलं समाणेति।५८॥१०-२०॥ ता कहं ते जोतिसस्स दारा आहि० ?, तत्थ खलु इमाओ पंच पडिवत्तीओ पं०, तत्थेगे एव०-ता कत्तियादी णं सत्त नक्खत्ता पुव्वदारिया पं० ते णं एव० तं०-कत्तिया जाव असिलेसा, महादीया सत्त दाहिणदारिया पं० तं०-महा जाव विसाहा, अणुराधादीया सत्त अवरदारिया पं० तं०-अणुराधा जाव सवणो, धणिट्ठादीया सत्त उत्तरदारिया पं० तं०-धणिट्ठा जाव भरणी, तत्थ जे ते एव०-ता महादीया सत्त पुव्व० तं० ते एव० तं०-महा जाव विसाहा, अणुराधादीया सत्त दाहिण० पं० तं०-अणुराधा जाव सवणे, धणिट्ठादीया सत्त अवर० पं० तं०-धणिट्ठा जाव भरणी, कत्तियादीया सत्त उत्तर० पं० तं०-कत्तिया जाव अस्सेसा, तत्थ णं जे ते एव० ता धणिट्ठादीया सत्त पुव्वदा० पं० ते एव० तं०-धणिट्ठा जाव भरणी, कत्तियादीया सत्त दाहिण० पं० तं०-कत्तिया जाव अस्सेसा, महादीया सत्त अवर० पं० तं०-महा जाव विसाहा, अणुराधादीया सत्त उत्तर० पं० तं०-अणुराधा जाव सवणो, तत्थ जे ते एव०-ता अस्सिणीआदीया सत्त णक्खत्ता पुव्व० पं० ते एव० तं०-अस्सिणी जाव पुणव्वसू, पुस्सादिया सत्त दाहिण० पं० तं०-पुस्सो जाव चित्ता, सादीयादीया सत्त अवर० पं० तं०-साती जाव उत्तरासाढा, अभीयीआदिया सत्त उत्तर० पं० तं०-अभिई जाव रेवती, तत्थ जे ते एव० ता भरणिआदीया सत्त पुव्व० पं० ते एव० तं०-भरणी जाव पुस्सो, अस्सेसादीया सत्त दाहिण० पं० तं०-अस्सेसा जाव साई, विसाहादीया सत्त अवर० पं० तं०-विसाहा जाव अभिई, सवणादीया सत्त उत्तर० पं० तं०-सवणो जाव अस्सिणी एगे एव०, वयं पुण एवं वदामो-ता अभिईतादिया सत्त पुव्व० पं० तं०-अभियी जाव रेवती, अस्सिणीआदीया सत्त दाहिण० पं० तं०-अस्सिणी जाव पुणव्वसू, पुस्सादीया सत्त अवर० पं० तं०-पुस्सो जाव चित्ता, सातिआदीया सत्त णक्खत्ता उत्तरदारिया पं० तं०-साती जाव उत्तरासाढा।५९॥१०-२१॥ ता कहं ते णक्खत्तविजये आहि० ?, ता अयण्णं जंबुद्दीवे जाव परिक्खेवेणं, ता जंबुद्दीवे णं दीवे दो चंदा पभासेंसु वा पभासेंति वा पभासिस्संति वा दो सूरिया तविंसु वा तवेंति वा तविस्संति वा छप्पण्णं णक्खत्ता जोयं जोएंसु वा० तं०-दो अभीयी दो सवणा जाव दो उत्तराओ आसाढाओ, ता एएसिं णं छप्पण्णाए नक्खत्ताणं अत्थि णक्खत्ता जे णं णव मुहुत्ते सत्तावीसं च सत्तट्ठिभागे मुहुत्तस्स चंदेणं सद्धिं जोयं जोएंति, पण्णरसमुहुत्ते० तीसमुहुत्ते० पणयालीसं० जोयं जोएंति, ता एतेसिं णं छप्पण्णाए णक्खत्ताणं कतरे णक्खत्ते जे णं णव मुहुत्ते सत्तावीसं च सत्तसट्ठिभागे मुहुत्तस्स चंदेण जाव कतरे णक्खत्ता जे णं पणतालीसं मुहुत्ते चंदेण सद्धिं जोयं जोएंति ?, ता एतेसिं णं छप्पण्णाए णक्खत्ताणं तत्थ जे ते णक्खत्ता जे णं णव मुहुत्ते सत्तावीसं च सत्तट्ठिभागे

Jain Education International 2010_03 For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

मुहुत्तस्स चंदेण० ते णं दो अभीयी, तत्थ जे ते णक्खत्ता जे णं पण्णरस मुहुत्ते चंदेण० ते णं बारस, तं०-दो सतभिसया दो भरणी दो अद्दा दो अस्सेसा दो साती दो जेट्ठा, तत्थ जे णं० तीसं मुहुत्ते चंदेण० ते णं तीसं, तं०-दो सवणा दो धणिट्ठा दो पुव्वभद्दवता दो रेवती दो अस्सिणी दो कत्तिया दो संठाणा दो पुस्सा दो महा दो पुव्वाफग्गुणी दो हत्था दो चित्ता दो अणुराधा दो मूला दो पुव्वासाढा, तत्थ जे ते णक्खत्ता जे णं पणतालीसं मुहुत्ते० ते णं बारस, तं०-दो उत्तरापोट्ठवता दो रोहिणी दो पुणव्वसू दो उत्तराफग्गुणी दो विसाहा दो उत्तरासाढा, ता एएसिं णं छप्पण्णाए णक्खत्ताणं अत्थि णक्खत्ते जे णं चत्तारि अहोरत्ते छच्च मुहुत्ते सूरिएण सद्धिं जोयं जोएंति, अत्थि णक्खत्ता जे णं छ अहोरत्ते एक्कवीसं च मुहुत्ते सूरेण० अत्थि णक्खत्ता जे णं तेरस अहोरत्ते बारस य मुहुत्ते सूरेण०, अत्थि णक्खत्ता जे णं वीसं अहोरत्ते तिन्नि य मुहुत्ते सूरेण०, एएसिं णं छप्पण्णाए णक्खत्ताणं कयरे णक्खत्ता जे णं तं चेव उच्चारेयव्वं, ता एतेसिं णं छप्पण्णाए णक्खत्ताणं तत्थ जे ते णक्खत्ता जे णं चत्तारि अहोरत्ते छच्च मुहुत्ते सूरेणं० ते णं दो अभीयी, तहेव जाव तत्थ जे ते णक्खत्ता जे णं वीसं अहोरत्ते तिण्णि य मुहुत्ते सूरेणं जोयं जोएंति ते णं बारस तं०-दो उत्तरापोट्ठवता जाव दो उत्तरासाढाओ ।६०। ता कहं ते सीमाविक्खंभे आहि० ?, ता एतेसिं णं छप्पण्णाए णक्खत्ताणं अत्थि णक्खत्ता जेसिं णं छ सया तीसा सत्तट्ठिभागतीसतिभागाणं सीमाविक्खंभो, अत्थि णक्खत्ता जेसिं णं सहस्सं पंचोत्तरं सत्तसट्ठिभागतीसतिभागाणं सीमाविक्खंभो, अत्थि णक्खत्ता जेसिं णं दो सहस्सा दसुत्तरा सत्तट्ठिभागतीसतिभागाणं सीमाविक्खंभो, अत्थि णक्खत्ता जेसिं णं तिन्नि सहस्सा पंचदसुत्तरं सत्तट्ठिभागतीसतीभागाणं सीमाविक्खंभो, ता एतेसिं णं छप्पणाए णक्खत्ताणं कतरे णक्खत्ता जेसिं णं छ सया तीसा तं चेव उच्चारेतव्वं जाव तिसहस्सं पंचदसुत्तरं सत्तसट्ठिभागतीसइभागाणं सीमाविक्खंभो ?, ता एतेसिं णं छप्पण्णाए णक्खत्ताणं तत्थ जे ते णक्खत्ता जेसिं णं छ सता तीसा सत्तट्ठिभागतीसतिभागाणं सीमाविक्खंभो ते णं दो अभीयी, तत्थ जे ते णक्खत्ता जेसिं णं सहस्सं पंचुत्तरं सत्तट्ठिभागतीसतिभागाणं सीमाविक्खंभो ते णं बारस, तं०-दो सतभिसया जाव दो जेट्ठा, तत्थ जे ते णक्खत्ता (२०७) जेसिं णं दो सहस्सा दसुत्तरा सत्तट्ठिभागतीसतिभागाणं सीमाविक्खंभो ते णं तीसं, तं०-दो सवणा जाव दो पुव्वाओ आसाढाओ, तत्थ जे ते णक्खत्ता जेसिं णं तिण्णि सहस्सा पण्णरसुत्तरा सत्तट्ठिभागतीसतिभागाणं सीमाविक्खंभो ते णं बारस, तं०-दो उत्तरापोट्ठवता जाव उत्तरासाढा ।६१। एतेसिं णं छप्पण्णाए णक्खत्ताणं किं सता पादो चंदेण सद्धिं जोयं जोएंति ?, किं सया सायं चंदेणं सद्धिं जोयं जोएंति ?, एतेसिं णं छप्पण्णाए णक्खत्ताणं किं सया दुहा पविसिय २ चंदेणं० ?, ता एएसिं णं छप्पण्णाए णक्खत्ताणं न किंपि तं जं सया पादो चंदेण० नो सया सागं चंदेण० नो सया दुहाओ पविसित्ता २ चंदेण सद्धिं जोयं जोएंति, णण्णत्थ दोहिं अभीयीहिं, ता एते णं दो अभीयी पायंचिय २ चोत्तालीसमं अमावासं जोएंति, णो चेव णं पुण्णमासिणिं ।६२। तत्थ खलु इमाओ बावट्ठिं पुण्णमासिणीओ बावट्ठिं अमावासाओ पं०, ता एएसिं णं पंचण्हं संवच्छराणं पढमं पुण्णमासिणिं चंदे कंसि देसंसि० ?, ता जंसि णं देसंसि चंदे चरिमं बावट्ठिं पुण्णमासिणिं जोएति ताए पुण्णमासिणिट्ठाणातो मंडलं चउव्वीसेणं सतेणं छेत्ता दुबत्तीसं भागे उवातिणावित्ता एत्थ णं से चंदे पढमं पुण्णमासिणिं जोएति, ता एएसिं णं पंचण्हं संवच्छराणं दोच्चं पुण्णमासिणिं चंदे कंसि देसंसि जोएति ?, ता जंसि णं देसंसि चंदे पढमं पुण्णमासिणिं जोएति ताते पुण्णमासिणीट्ठाणातो मंडलं चउवीसेणं सएणं छेत्ता दुबत्तीसं भागे उवाइणावेत्ता एत्थ णं से चंदे दोच्चं पुण्णमासिणिं जोएति, ता एएसिं णं पंचण्हं संवच्छराणं तच्चं पुण पुच्छा, ता जंसि णं देसंसि चंदे दोच्चं पुण्णमासिणिं जोएति ताए पुण्णमासिणीठाणातो मंडलं चउव्वीसेणं सतेणं छेत्ता दुबत्तीसं भागे उवाइणावेत्ता एत्थ णं तच्चं चंदे पुण्णमासिणिं जोएति, ता एतेसिं पंचण्हं संवच्छराणं दुवालसमं पुण्णमासिणिं चंदे कंसि देसंसि जोएति ?, ता जंसि णं देसंसि चंदे तच्चं पुण्णमासिणिं जोएति ताते पुण्णमासिणिट्ठाणाते मंडलं चउव्वीसेणं सतेणं छेत्ता दोण्णि अट्ठरसीते भागसते उवायिणावेत्ता एत्थ णं से चंदे दुवालसमं पुण्णमासिणिं जोएति, एवं खलु एतेणुवाएणं ताते २ पुण्णमासिणिट्ठाणाते मंडलं चउवीसेणं सतेणं छेत्ता दुबत्तीसभागे उवातिणावेत्ता तंसि २ देसंसि तं तं पुण्णमासिणिं चंदे जोएति, ता एतेसिं णं पंचण्हं संवच्छराणं चरमं बावट्ठिं पुण्णमासिणिं चंदे कंसि देसंसि जोएति ?, ता जंबुद्दीवस्स णं पाईणपडीणायताए उदीणदाहिणायताए जीवाए मंडलं चउव्वीसेणं सतेणं छेत्ता दाहिणिल्लंसि चउब्भागमंडलंसि सत्तावीसं भागे उवायणावेत्ता

Jain Education International 2010_03 For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

अट्ठावीसतिभागं वीसहा छेत्ता अट्ठारसभागे उवातिणावेत्ता तिहिं भागेहिं दोहि य कलाहिं पच्चत्थिमिल्लं चउब्भागमंडलं असंपत्ते एत्थ णं चंदे चरिमं बावट्ठिं पुण्णमासिणिं जोएति ।६३। ता एएसिं णं पंचण्हं संवच्छराणं पढमं पुण्णमासिणिं सूरे कंसि देसंसि जोएति ?, ता जंसि णं देसंसि सूरे चरिमं बावट्ठिं पुण्णमासिणिं जोएति ताते पुण्णमासिणिट्ठाणातो मंडलं चउव्वीसेणं सतेणं छेत्ता चउणवतिं भागे उवातिणावेत्ता एत्थ णं से सूरिए पढमं पुण्णमासिणिं जोएइ, ता एएसिं णं पंचण्हं संवच्छराणं दोच्चं पुण पुच्छा, ता जंसि णं देसंसि सूरे पढमं पुण्णमासिणिं जोएइ ताए पुण्णमासिणीठाणाओ मंडलं चउवीसेणं सएणं छेत्ता चउणवइभागे उवाइणावित्ता एत्थ णं से सूरे दोच्चं पुण्णमासिणिं जोएइ, एवं तच्चंपि नवरं दोच्चाओ एत्थ णं से सूरे तच्चं पुण्णमासिणिं जोएति, ता एतेसिं णं पंचण्हं संवच्छराणं दुवालसं पुण्णमासिणिं० पुच्छा, जंसि णं देसंसि तच्चं पुण्णमासिणिं जोएति ताते पुण्णमा सिणिट्ठाणाते० अद्धछत्ताले भागसते उवाइणावेत्ता एत्थ णं से सूरे दुवालसमं पुण्णमासिणिं जोएति, एवं खलु एतेणुवाएणं ताते २ पुण्णमासिणिट्ठाणाते मंडलं चउवीसेणं सतेण छेत्ता चउणउतिं २ भागे उवातिणावेत्ता तंसि २ णं देसंसि तं तं पुण्णमासिणिं सूरे जोएति, ता एतेसिं णं पंचण्हं संवच्छराणं चरिमं बावट्ठिं पुच्छा, ता जंबुद्दीवस्स णं पाईणपडीणायताए उदीणदाहिणायताए जीवाए मंडलं चउव्वीसेणं सएणं छेत्ता पुरच्छिमिल्लंसि चउभागमंडलंसि सत्तावीसं भागे उवातिणावेत्ता अट्ठावीसतिभागं वीसधा छेत्ता अट्ठारसभागे उवादिणावेत्ता तिहिं भागेहिं दोहि य कलाहिं दाहिणिल्लं चउभागमंडलं असंपत्ते एत्थ णं सूरे चरिमं बावट्ठि पुण्णिमं जोएति ।६४। ता एएसिं णं पंचण्हं संवच्छराणं पढमं अमावासं चंदे कंसि देसंसि जोएति ?, ता जंसि णं देससि चंदे चरिमं बावट्ठिं अमावासं जोएति ताते अमावासट्ठाणाते मंडलं चउव्वीसेणं सतेणं छेत्ता दुबत्तीसं भागे उवादिणावेत्ता एत्थ णं से चंदे पढमं अमावासं जोएति, एवं जेणेव अभिलावेणं चंदस्स पुण्णमासिणीओ भणियाओ तेणेव अभिलावेणं अमावासाओ भणितव्वाओ बिइया ततिया दुवालसमी, एवं खलु एतेणुवाएणं ताते २ अमावासट्ठाणाते मंडलं चउव्वीसेणं सतेणं छेत्ता दुबत्तीसं २ भागे उवादिणावेत्ता तंसि २ देसंसि तं तं अमावासं चंदेणं जोएति, ता एतेसिं णं पंचण्हं संवच्छराणं चरमं बावट्ठि अमावासं पुच्छा ?, ता जंसि णं देसंसि चंदे चरिमं बावट्ठि पुण्णमासिणिं जोएति ताते पुण्णमासिणिट्ठाणाए मंडलं चउव्वीसेणं सतेणं छेत्ता सोलसभागं ओसक्कइत्ता एत्थ णं से चंदे चरिमं बावट्ठिं अमावासं जोएति ।६५। ता एतेसिं णं पंचण्हं संवच्छराणं पढमं अमावासं सूरे कंसि देसंसि जोएति ?, ता जंसि णं देसंसि सूरे चरिमं बावट्ठि अमावासं जोएति ताते अमावासट्ठाणाते मंडलं चउव्वीसेणं सतेणं छेत्ता चउणउतिभागे उवायिणावेत्ता एत्थ णं से सूरे पढमं अमावासं जोएति, एवं जेणेव अभिलावेणं सूरियस्स पुण्णमासिणीओ तेणेव अमावासाओवि, तं०-बिदिया तइया दुवालसमी, एवं खलु एतेणुवाएणं ताते २ *अमावासट्ठाणाते मंडलं चउव्वीसेणं सतेणं छेत्ता चउणउतिं २ भागे उवायिणावेत्ता तंसि २ देसंसि तं तं अमावासं सूरिए जोएति, ता एतेसिं णं पंचण्हं २ संवच्छराणं* चरिमं बावट्ठि अमावासं पुच्छा, ता जंसि णं देसंसि सूरे चरिमं बावट्ठिं पुण्णमासिणिं जोएति ताते पुण्णमासिणिट्ठाणाते मंडलं चउव्वीसेणं सतेणं छेत्ता सत्तालीसं भागे उसक्कावइत्ता एत्थ णं से सूरे चरिमं बावट्ठि अमावासं जोएति ।६६। ता एएसिं णं पंचण्हं संवच्छराणं पढमं पुण्णमासिणिं चंदे केणं णक्खत्तेणं जोएति ?, ता धणिट्ठाहिं, धणिट्ठाणं तिण्णि मुहुत्ता एकूणवीसं च बावट्ठिभागा मुहुत्तस्स बावट्ठिभागं च सत्तट्ठिधा छेत्ता पण्णट्ठी चुण्णिया भागा सेसा, तंसमयं च णं सूरिए केणं णक्खत्तेणं जोएति ?, ता पुव्वाफग्गुणीहिं, ता पुव्वाफग्गुणीणं अट्ठावीसं मुहुत्ता अट्ठतीसं च बावट्ठिभागा मुंहुत्तस्स बावट्ठिभागं च सत्तट्ठिधा छेत्ता दुवत्तीसं चुण्णिया भागा सेसा, ता एएसिं णं पंचण्हं संवच्छराणं दोच्चं पुण्णमासिणिं चंदे केणं णक्खत्तेणं जोएति ?, ता उत्तराहिं पोट्ठवताहिं, उत्तराणं पोट्ठवताणं सत्तावीसं मुहुत्ता चोद्दस य बावट्ठिभागा मुहुत्तस्स बावट्ठिभागं च सत्तट्ठिधा छेत्ता बावट्ठी चुण्णिया भागा सेसा, तंसमयं च णं सूरे केणं णक्खत्तेणं जोएति ?, ता उत्तराहिं फग्गुणीहिं, उत्तराफग्गुणीणं सत्त मुहुत्ता तेत्तीसं च बावट्ठिभागा मुंहुत्तस्स बावट्ठिभागं च सत्तट्ठिधा छेत्ता एक्कतीसं चुण्णिया भागा सेसा, ता एतेसिं णं पंचण्हं संवच्छराणं तच्चं पुण्णमासिणीं चंदे केणं णक्खत्तेणं जोएति ?, ता अस्सिणीहिं, अस्सिणीणं एक्कवीसं मुहुत्ता णव य बावट्ठिभागा मुहुत्तस्स बावट्ठिभागं च सत्तट्ठिधा छेत्ता तेवट्ठी चुण्णिया भागा सेसा, तंसमयं च णं सूरे केण णक्खत्तेणं जोएति ?, ता चित्ताहिं, चित्ताणं एक्को मुहुत्तो अट्ठावीसं च बावट्ठिभागा मुहुत्तस्स बावट्ठिभागं च सत्तट्ठिधा

Jain Education International 2010_03 For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

छेत्ता तीसं चुण्णिया भागा सेसा, ता एतेसिं णं पंचण्हं संवच्छराणं दुवालसमं पुण्णामासिणिं पुच्छा, ता उत्तराहिं आसाढाहिं, उत्तराणं च आसाढाणं छव्वीसं मुहुत्ता छव्वीसं च बावट्ठिभागा मुहुत्तस्स बावट्ठिभागं च सत्तट्ठिधा छेत्ता चउप्पण्णं०, तंसमयं च सूरे केणं पुच्छा, ता पुणव्वसुणा, पुणव्वसुस्स सोलस मुहुत्ता अट्ठ य बावट्ठिभागा मुहुत्तस्स बावट्ठिभागं च सत्तट्ठिधा छेत्ता वीसं चुण्णिया भागा सेसा, ता एतेसिं णं पंचण्हं संवच्छराणं चरमं बावट्ठि पुण्णमासिणिं चंदे केणं णक्खत्तेणं जोएंति ? ता उत्तराहिं आसाढाहिं उत्तराणं आसाढाणं चरमसमए, तंसमयं च णं सूरे केणं णक्खत्तेणं जोएति ?, ता पुस्सेणं, पुस्सस्स एकूणवीसं मुहुत्ता तेतालीसं च बावट्ठिभागा मुहुत्तस्स बावट्ठिभागं च सत्तट्ठिधा छेत्ता तेत्तीसं चुण्णिया भागा सेसा ।६७। एतेसिं णं पंचण्हं संवच्छराणं पढमं अमावासं चंदे केणं णक्खत्तेणं जोएति ?, ता अस्सेसाहिं, अस्सेसाणं एक्को मुहुत्तो चत्तालीसं च बावट्ठिभागा मुहुत्तस्स बावट्ठिभागं च सत्तट्ठिधा छेत्ता छावट्ठी चुण्णिया० भागा० सेसा, तंसमयं च णं सूरे केणं णक्खत्तेणं जोएति ?, ता अस्सेसाहिं चेव, अस्सेसाणं एक्को मुहुत्तो चत्तालीसं च बावट्ठिभागा मुहुत्तस्स बावट्ठिभागं च सत्तट्ठिधा छेत्ता छावट्ठी चुण्णिया भागा सेसा, ता एएसिं णं पंचण्हं० दोच्चं अमावासं चंदे पुच्छा, उत्तराहिं फग्गुणीहिं, उत्तराणं फग्गुणीणं चत्तालीसं मुहुत्ता पणतीसं बावट्ठिभागा मुहुत्तस्स बावट्ठिभागं च सत्तट्ठिधा छेत्ता पण्णट्ठी चुण्णिया भागा सेसा, तंसमयं च णं सूरे केणं पुच्छा, ता उत्तराहिं चेव फग्गुणीहिं, उत्तराणं फग्गुणीणं तं चेव जाव पण्णट्ठी चुण्णिया भागा सेसा, ता एतेसिं णं पंचण्हं संवच्छराणं तच्चं अमावासं चंदे पुच्छा, ता हत्थेणं, हत्थस्स चत्तारि मुहुत्ता तीसं च बावट्ठिभागा मुहुत्तस्स बावट्ठि भागं च सत्ताट्ठिधा छेत्ता बावट्ठी चुण्णिया भागा सेसा, तंसमयं च णं सूरे केणं पुच्छा, हत्थेणं चेव, जं चेव चंदस्स, ता एएसिं णं पंचण्हं संवच्छराणं दुवालसमं अमावासं चंदे केणं पुच्छा, ता अद्दाहिं, अद्दाणं चत्तारिं मुहुत्ता दस य बावट्ठिभागा मुहुत्तस्स बावट्ठिभागं च सत्तट्ठिधा छेत्ता चउपण्णं चुण्णिया भागा सेसा, तंसमयं च णं सूरे केणं पुच्छा, ता अद्दाहिं चेव, जं चेव चंदस्स, ता एएसिं णं पंचण्हं संवच्छराणं चरिमं बावट्ठिं अमावासं चंदे केणं पुच्छा ?, पुणव्वसुणा, पुणव्वसुस्स बावीसं मुहुत्ता छायालीसं च बासट्ठिभागा मुहुत्तस्स सेसा, तंसमयं च णं सूरे केणं पुच्छा ?, ता पुणव्वसुणा चेव, पुणव्वसुस्स णं जहा चंदस्स ।६८। ता जेणं अज्ज णक्खत्तेणं चंदे जोयं जोएति जंसि देसंसि से णं इमाणि अट्ठ एकूणवीसाणि मुहुत्तसताइं चउवीसं च बावट्ठिभागे मुंहुत्तस्स बावट्ठिभागं च सत्तट्ठिधा छेत्ता बावट्ठिं चुण्णियाभागे उवायिणावेत्ता पुणरवि से चंदे अण्णेणं तारिसएणं चेव णक्खत्तेणं जोयं जोएति अण्णंसि देसंसि, ता जेणं अज्ज णक्खत्तेणं चंदे जोयं जोएति जंसि देसंसि से णं इमाइं सोलसअट्ठतीस मुहुत्तसताइं अउणापण्णं च बावट्ठिभागे मुहुत्तस्स बावट्ठिभागं च सत्तट्ठिधा छेत्ता पण्णट्ठी चुण्णियाभागे उवायिणावेत्ता पुणरवि से णं चंदे तेणं चेव णक्खत्तेणं जोयं जोएति अण्णंसि देसंसि, ता जेणं अज्ज णक्खत्तेणं चंदे जोयं जोएति जंसि देसंसि से णं इमाइं चउप्पण्णमुहुत्तसहस्साइं णव य मुहुत्तसताइं उवादिणावित्ता पुणरवि से चंदे अण्णेणं तारिसएणं नक्खत्तेणं जोयं जोएति तंसि देसंसि, ता जेणं अज्ज णक्खत्तेणं चंदे जोयं जोएति जंसि २ देसंसि से णं इमं एगं मुहुत्तसयसहस्सं अट्ठाणउतिं च मुहुत्तसताइं उवायिणावित्ता पुणरवि से चंदे तेण चेव णक्खत्तेणं जोयं जोएइ तंसि देसंसि, ता जेणं अज्ज णक्खत्तेणं सूरे जोयं जोएति जंसि देसंसि से णं इमाइं तिण्णि छावट्ठाइं राइंदियसताइं उवादिणावेत्ता पुणरवि से सूरिए अण्णेणं तारिसएणं चेव नक्खत्तेणं जोयं जोएति तंसि देसंसि, ता जेणं अज्ज नक्खत्तेणं सूरे जोयं जोएति तंसि देसंसि से णं इमाइं सत्तदुतीसं राइंदियसताइं उवाइणावेत्ता पुणरवि से सूरे तेणं चेव नक्खत्तेणं जोयं जोएति तंसि देसंसि, ता जेणं अज्ज णक्खत्तेणं सूरे जोयं जोएति जंसि देसंसि से णं इमाइं अट्ठारस वीसाइं राइंदियसताइं उवादिणावेत्ता पुणरवि से सूरे अण्णेणं तारिसएणं चेव णक्खत्तेणं जोयं जोएति तंसि देसंसि, ता जेणं अज्ज णक्खत्तेणं सूरे जोयं जोएति जंसि देसंसि से णं इमाइं छत्तीसं सट्ठाइं राइंदियसयाइं उवाइणावित्ता पुणरवि से सूरे तेणं चेव णक्खत्तेणं जोयं जोएति तंसि देसंसि ।६९। ता जया णं इमे चंदे गतिसमावण्णए भवति तता णं इतरेवि चंदे गतिसमावण्णए भवति जता णं इतरे चंदे गतिसमावण्णए भवति तता णं इमेवि चंदे गतिसमावण्णए भवति, ता जया णं इमे चंदे जुत्ते जोगेणं भवति तता णं इतरेवि चंदे० जया णं इयरे चंदे० तता णं इमेवि चंदे०, एवं सूरेवि गहेवि णक्खत्तेवि, सतावि णं चंदा जुत्ता जोएहिं सतावि णं सूरा जुत्ता जोगेहिं सयावि णं गहा जुत्ता जोगेहिं सयावि णं नक्खत्ता जुत्ता जोगेहिं दुहतोवि णं चंदा जुत्ता जोगेहिं

Jain Education International 2010_03 For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

दुहतोवि णं सूरा० दुहतोवि णं गहा० दुहतोवि णं णक्खत्ता० मंडलं सतसहस्सेणं अट्ठाणउतीए सतेहिं छेत्ता, इच्चेस णक्खत्तखेत्तपरिभागे णक्खत्तविजए नामं पाहुडेत्ति आहितेत्ति वेमि ☆☆☆ ।७०॥१०-२२ **दसमं पाहुडं ॥** ☆☆☆ ता कहं ते संवच्छराणीदी आहि० ? तत्थ खलु इमे पंच संवच्छरा पं० तं०-चंदे चंदे अभिवड्ढिते चंदे अभिवड्ढिते, ता एतेसिं णं पंचण्हं संवच्छराणं पढमस्स चंदस्स संवच्छरस्स के आदी आहि० ?, ता जे णं पंचमस्स अभिवड्ढितसंवच्छरस्स पज्जवसाणे से णं पढमस्स चंदस्स संवच्छरस्स आदी अणंतरपुरक्खडे समए, ता से णं किंपज्जवसिते आहि० ?, ता जे णं दोच्चस्स चंदसंवच्छरस्स आदी से णं पढमस्स चंदसंवच्छरस्स पज्जवसाणे अणंतरपच्छाकडे समये तंसमयं च णं चंदे केणं णक्खत्तेणं जोएति ?, ता उत्तराहिं आसाढाहिं, उत्तराणं आसाढाणं छव्वीसं मुहुत्ता छव्वीसं च बावट्ठिभागा मुहुत्तस्स बावट्ठिभागं च सत्तट्ठिधा छित्ता चउप्पण्णं चुण्णिया भागा सेसा, तंसमयं च णं सूरे केणं णक्खत्तेणं जोएति ?, ता पुणव्वसुणा, पुणव्वसुस्स सोलस मुहुत्ता अट्ठ य बावट्ठिभागा मुहुत्तस्स बावट्ठिभागं च सत्तट्ठिहा छेत्ता वीसं चुण्णिया भागा सेसा, ता एएसिं णं पंचण्हं संवच्छराणं दोच्चस्स चंदसंवच्छरस्स के आदी आहि० ?, ता जे णं पढमस्स चंदसंवच्छरस्स पज्जवसाणे से णं दोच्चस्स णं चंदसंवच्छरस्स आदी अणंतपुरक्खडे समये, ता से णं किंपज्जवसिते आहि० ?, ता जे णं तच्चस्स अभिवड्ढियसंवच्छरस्स आदी से णं दोच्चस्स चंदसंवच्छरस्स पज्जवसाणे अणंतरपच्छाकडे समये, तंसमयं च णं चंदे केणं णक्खत्तेणं जोएति ?, ता पुव्वाहिं आसाढाहिं, पुव्वाणं आसाढाणं सत्त मुहुत्ता तेवण्णं च बावट्ठिभागा मुहुत्तस्स बावट्ठिभागं च सत्तट्ठिधा छेत्ता इगतालीसं चुण्णिया भागा सेसा, तंसमयं च णं सूरे केणं णक्खत्तेणं जोएति ?, ता पुणव्वसुणा, पुणव्वसुस्स णं बायालीसं मुहुत्ता पणतीसं च बावट्ठिभागा मुहुत्तस्स बावट्ठिभागं च सत्तट्ठिधा छेत्ता सत्त चुण्णिया भागा सेसा, ता एतेसिं णं पंचण्हं संवच्छराणं तच्चस्स अभिवड्ढितसंवच्छरस्स के आदी आहि० ?, ता जे णं दोच्चस्स चंदसंवच्छरस्स पज्जवसाणे से णं तच्चस्स अभिवडिढतसंवच्छरस्स आदी अणंतपुरक्खडे समए. ता से णं किंपज्जवसिते आहि० ?, ता जे णं चउत्थस्स चंदसंवच्छरस्स आदी से णं तच्चस्स अभिवडिढतसंवच्छरस्स पज्जवसाणे अणंतरपच्छाकडे समए, तंसमयं च णं चंदे केणं णक्खत्तेणं जोएति ?. ता उत्तराहिं आसाढाहिं, उत्तराणं आसाढाणं तेरस मुहुत्ता तेरस य बावट्ठिभागा मुहुत्तस्स बावट्ठिभागं च सत्तट्ठिधा छेत्ता सत्तावीसं चुण्णिया भागा सेसा, तंसमयं च णं सूरे केणं णक्खत्तेणं जोएति ?, ता पुणव्वसुणा, पुणव्वसुस्स दो मुहुत्ता छप्पण्णं बावट्ठिभागा मुहुत्तस्स बावट्ठिभागं च सत्तट्ठिधा छेत्ता सट्ठी चुण्णिया भागा सेसा, ता एएसिं णं पंचण्हं संवच्छराणं चउत्थस्स चंदसंवच्छरस्स के आदी आहि० ?, ता जे णं तच्चस्स अभिवड्ढितसंवच्छरस्स पज्जवसाणे से णं चउत्थस्स चंदसंवच्छरस्स आदी अणंतरपुरक्खडे समये, ता से णं किंपज्जवसिते आहि० ?, ता जे णं चरिमस्स अभिवड्ढितसंवच्छरस्स आदी से णं चउत्थस्स चंदसंवच्छरस्स पज्जवसाणे अणंतरपच्छाकडे समये, तंसमयं च णं चंदे केणं णक्खत्तेणं जोएति ? ता उत्तराहिं आसाढाहिं उत्तराणं आसाढाणं चत्तालीसं मुहुत्ता चत्तालीसं च बावट्ठिभागा मुहुत्तस्स बावट्ठिभागं च सत्तट्ठिधा छेत्ता चउदस चुण्णिया भागा सेसा, तसमयं च णं सूरे केणं णक्खत्तेणं जोएति ?. ता पुणव्वसुणा, पुणव्वसुस्स अउणतीसं मुहुत्ता एक्कवीसं बावट्ठिभागा मुहुत्तस्स बावट्ठिभागं च सत्तट्ठिधा छेत्ता सीतालीसं चुण्णिया भागा सेसा, ता एतेसिं णं पंचण्हं संवच्छराणं पंचमस्स अभिवड्ढितसंवच्छरस्स के आदी आहि० ?, ता जे णं चउत्थस्स चंदसंवच्छरस्स पज्जवसाणे से णं पंचमस्स अभिवड्ढितसंवच्छरस्स आदी अणंतरपुरक्खडे समये, ता से णं किंपज्जवसिते आहि० ?, ता जे णं पढमस्स चंदसंवच्छरस्स आदी से णं पंचमस्स अभिवड्ढितसंवच्छरस्स पज्जवसाणे अणंतरपच्छाकडे समये, तंसमयं च णं चंदे केणं णक्खत्तेणं जोएति ?. ता उत्तराहिं आसाढाहिं, उत्तराणं आसाढाणं चरमसमए, तंसमयं च णं सूरे केणं णक्खत्तेणं जोएति ?. ता पुस्सेणं, पुस्सस्स णं एक्कवीसं मुहुत्ता तेतालीसं च बावट्ठिभागा मुहुत्तस्स बावट्ठिभागं सत्तट्ठिधा छेत्ता तेत्तीसं चुण्णिया भागा सेसा ☆☆☆ ।७१॥ **एक्कारसमं पाहुडं ११ ॥** ☆☆☆ ता कति णं संवच्छरा आहि० ?, तत्थ खलु इमे पंच संवच्छरा पं० तं०-णक्खत्ते चंदे उडू आदिच्चे अभिवड्ढिते, ता एतेसिं णं पंचण्हं संवच्छराणं पढमस्स नक्खत्तसंवच्छरस्स णक्खत्तमासे तीसतिमुहुत्तेणं

Jain Education International 2010_03 For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

२ अहोरत्तेणं गणिज्जमाणे केवतिए राइंदियग्गेणं आहि० ?, ता सत्तावीसं राइंदियाइं एक्कवीसं च सत्तट्ठिभागा राइंदियस्स राइंदियग्गेणं आहि०, ता से णं केवतिए मुहुत्तग्गेणं आहि० ?, ता अट्ठसए एकूणवीसे मुहुत्ताणं सत्तावीसं च सत्तट्ठिभागे मुहुत्तस्स मुहुत्तग्गेणं आहि०, ता एएसिं णं अद्धा दुवालसक्खुत्तकडा णक्खत्ते संवच्छरे, ता से णं केवतिए राइंदियग्गेणं आहि० ?, ता तिण्णि सत्तावीसे राइंदियसते एक्कावन्नं च सत्तट्ठिभागे राइंदियस्स राइंदियग्गेणं आहि०, ता से णं केवतिए मुहुत्तग्गेणं आहि० ?, ता णव मुहुत्तसहस्सा अट्ठ य बत्तीसे मुहुत्तसए छप्पन्नं च सत्तट्ठिभागे मुहुत्तस्स मुहुत्तग्गेणं आहि०, ता एएसिं णं पंचण्हं संवच्छराणं दोच्चस्स चंदसंवच्छरस्स चंदे मासे तीसतिमुहुत्तेणं २ अहोरत्तेणं गणिज्जमाणे केवतिए राइंदियग्गेणं आहि० ?, ता एगूणतीसं राइंदियाइं बत्तीसं बावट्ठिभागा राइंदियस्स राइंदियग्गेणं आहितेति वदेज्जा, ता से णं केवतिए मुहुत्तग्गेणं आहि० ?, ता अट्ठपंचासीते मुहुत्तसए तीसं च बावट्ठिभागे मुहुत्तग्गेणं आहि०, ता एस णं अद्धा दुवालसखुत्तकडा चंदे संवच्छरे, ता से णं केवतिए राइंदियग्गेणं आहि० ?, ता तिन्नि चउप्पन्ने राइंदियसते दुवालस य बावट्ठिभागा राइंदियग्गेणं आहि०, ता से णं केवतिए मुहुत्तग्गेणं आहि० ?, ता दस मुहुत्तसहस्साइं छच्च पणुवीसे मुहुत्तसए पण्णासं च बावट्ठिभागे मुहुत्तग्गेणं आहि०, ता एएसिं णं पंचण्हं संवच्छराणं तच्चस्स उडुसंवच्छरस्स उडुमासे तीसतिसमुहुत्तेणं गणिज्जमाणे केवतिए राइंदियग्गेणं आहि० ?, ता तीसं राइंदियाणं राइंदियग्गेणं आहि०, ता से णं केवतिए मुहुत्तग्गेणं पुच्छा, ता णव मुहुत्तसताइं मुहुत्तग्गेणं आहि०, ता एस णं अद्धा दुवालसखुत्तकडा उडुसंवच्छरे, ता से णं केवतिए राइंदियग्गेणं आहि० ?, ता तिण्णि सट्ठे राइंदियसते राइंदियग्गेणं आहि०, ता से णं केवतिए मुहुत्तग्गेणं आहि०, ता दस मुहुत्तसहस्साइं अट्ठ य सयाइं मुहुत्तग्गेणं आहि०, ता एएसिं णं पंचण्हं संवच्छराणं चउत्थस्स आदिच्चसंवच्छरस्स आइच्चे मासे तीसतिमुहुत्तेणं अहोरत्तेणं गणिज्जमाणे केवइए राइंदियग्गेण आहि० ?, ता तीसं राइंदियाइं अवद्धभागं च राइंदियस्स राइंदियग्गेणं०, ता से णं केवतिए मुहुत्तग्गेणं पुच्छा, ता णव पण्णरस मुहुत्तसए मुहुत्तग्गेणं आहि०, ता एस णं अद्धा दुवालसखुत्तकडा आदिच्चे संवच्छरे, ता से णं केवतिए राइंदिय० पुच्छा, ता तिन्नि छावट्ठे राइंदियसए राइंदियग्गेणं आहि०, ता से णं केवतिए मुहुत्तग्गेणं पुच्छा, ता दस मुहुत्तसहस्साइं णव असीते मुहुत्तसते मुहुत्त०, ता एएसि णं पंचण्हं संवच्छराणं पंचमस्स अभिवड्ढियसंवच्छरस्स अभिवड्ढिते मासे तीसतिमुहुत्तेणं अहोरत्तेणं गणिज्जमाणे केवतिए राइंदियग्गेणं पुच्छा, ता एक्कतीसं राइंदियाइं एगूणतीसं च मुहुत्ता सत्तरस य बावट्ठिभागे मुहुत्तस्स राइंदियग्गेणं आहि०, ता सेणं केवतिए मुहुत्त० पुच्छा, ता णव एगूणसट्ठे मुहुत्तसते सत्तरस य बावट्ठिभागे मुहुत्तस्स मुहुत्तग्गेणं आहि०, ता एस णं अद्धा दुवालवसखुत्तकडा अभिवड्ढितसंवच्छरे, ता से णं केवतिए राइंदियग्गेणं पुच्छा, तिण्णि तेसीते राइंदियसते एक्कवीसं च मुहुत्ता अट्ठारस बावट्ठिभागा मुहुत्तस्स राइंदियग्गेणं आहि०, ता से णं केवतिए मुहुत्तग्गेणं पुच्छा, ता एक्कारस मुहुत्तसहस्साइं पंच य एक्कारस मुहुत्तसते अट्ठारस बावट्ठिभागा मुहुत्तस्स मुहुत्तग्गेणं आहि० । ७२। ता केवतियं ते नोजुगे राइंदियग्गेणं आहि० ?, ता सत्तरस एक्काणउते राइंदियसते एगूणवीसं च सत्तावण्णे बावट्ठिभागा मुहुत्तस्स बावट्ठिभागं च सत्तट्ठिधा छेत्ता पणपण्णं चुण्णिया भागा राइंदियग्गेणं आहि०, ता से णं केवतिए मुहुत्तग्गेणं आहि० ?, ता तेपण्णं मुहुत्तसहस्साइं सत्त य अउणापन्ने मुहुत्तसते सत्तावण्णं बावट्ठिभागा मुहुत्तस्स बावट्ठिभागं च सत्तट्ठिधा छेत्ता पणपण्णं चुण्णिया भागा मुहुत्तग्गेणं आहि०, ता केवतिए णं ते जुगप्पत्ते राइंदियग्गेणं आहि० ?, ता अट्ठतीसं राइंदियाइं दस य मुहुत्ता चत्तारि य बावट्ठिभागा मुहुत्तस्स बावट्ठिभागं च सत्तट्ठिधा छेत्ता दुवालस चुण्णिया भागा राइंदियग्गेणं आहि०, ता से णं केवतिए मुहुत्तग्गेणं आहि० ?, ता एक्कारस पण्णासे मुहुत्तसए चत्तारि य बावट्ठिभागा बावट्ठिभागं च सत्तट्ठिहा छेत्ता दुवालस चुण्णिया भागा मुहुत्तग्गेणं आहि०, ता केवतियं जुगे राइंदियग्गेणं आहि० ? ता अट्ठारसतीसे राइंदियसते राइंदियग्गेणं आहि०, ता से णं केवतिए मुहुत्तग्गेणं आहि० ?, ता चउप्पणं मुहुत्तसहस्साइं णव य मुहुत्तसताइं मुहुत्तग्गेणं आहि०, ता से णं केवतिए बावट्ठिभागमुहुत्तग्गेणं आहि० ?, ता चउत्तीसं सतसहस्साइं अट्ठतीसं च बावट्ठिभागमुहुत्तसते मुहुत्तग्गेण आहि० ।७३। ता कता णं एते आदिच्चचंदसंवच्छरा समादीया समपज्जवसिया आहि० ?, ता सट्ठिं एए आदिच्चा मासा बावट्ठी एते चंदा मासा एस णं अद्धा छखुत्तकडा दुवालसभयिता तीसं एते आदिच्चसंवच्छरा एक्कतीसं एते चंदसंवच्छरा, तता णं एते आदिच्चचंदसंवच्छरा समादीया

Jain Education International 2010_03 For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

समपज्जवसिया आहि०, ता कता णं एते आदिच्चउडुचंदणक्खत्ता संवच्छरा समादीया समपज्जवसिया आहि० ?, ता सट्ठी एते आदिच्चा मासा एगट्ठी एते उडू मासाण्स बावट्ठी एते चंदमासा सत्तट्ठी एते नक्खत्ता मासा णं अद्धा दुवालसखुत्तकडा दुवालसभयिता सट्ठी एते आदिच्चा संवच्छरा एगट्ठी एते उडुसंवच्छरा बावट्ठी एते चंदा संवच्छरा सत्तट्ठी एते नक्खत्ता संवच्छरा तता णं एते आदिच्चउडुचंदणक्खत्ता संवच्छरा समादीया समपज्जवसिया आहि०, ता कता णं एते अभिवड्ढिआदिच्चउडुचंदणक्खत्ता संवच्छरा समादिया समपज्जवसिता आहि० ?, ता सत्तावण्णं मासा सत्त य अहोरत्ता एक्कारस य मुहुत्ता तेवीसं बावट्ठिभागा मुहुत्तस्स एते णं अभिवड्ढिता मासा सट्ठी एते आदिच्चा मासा एगट्ठी एते उडू मासा बावट्ठी एते चंदा मासा सत्तट्ठी एते नकखत्ता मासा एस णं अद्धा छप्पण्णसत्तखुत्तकडा दुवालसभयिता सत्त सता चोत्ताला एते णं अभिवड्ढिता संवच्छरा, सत्त सता असीता एते णं आदिच्चा संवच्छरा, सत्त सता तेणउता एते णं उडू संवच्छरा, अट्ठ सता छलुत्तरा एते णं चंदा संवच्छरा, एकसत्तरी अट्ठसया एए णं नक्खत्ता संवच्छरा, तता णं एते अभिवड्ढितआदिच्चउडुचंदनक्खत्ता संवच्छरा समादीया समपज्जवसिया आहि०, ता णयट्ठताए णं चंदे संवच्छरे तिण्णि चउप्पण्णे राइंदियसते दुवालस य बावट्ठिभागे राइंदियस्स आहि०, ता अहातच्चेणं चंदे संवच्छरे तिण्णि चउप्पण्णे राइंदियसते पंच य मुहुत्ते पण्णासं च बावट्ठिभागे मुहुत्तस्स आहि० ।७४। तत्थ खलु इमे छ उडू पं० तं०- पाउसे वरिसारत्ते सरते हेमंते वसंते गिम्हे, ता सव्वेवि णं एते चंदउडू दुवे २ मासाति चउप्पण्णेणं २ आदाणेणं गणिज्जमाणा सातिरेगाइं एगूणसट्ठी २ राइंदियाइं राइंदियग्गेणं आहि०, तत्थ खलु इमे छ ओमरत्ता पं० तं०- ततिए पव्वे सत्तमे एक्कारसमे पन्नरसमे एगूणवीसतिमे तेवीसतिमे पव्वे, तत्थ खलू इमे छ अतिरत्ता पं० तं०- चउत्थे पव्वे अट्ठमे बारसमे सोलसमे वीसतिमे चउवीसतिमे पव्वे 'छच्चव य अइरत्ता आइच्चाओ हवंति जाणाइ । छच्चेव ओमरत्ता चंदाउ हवंति माणाहिं ॥३४॥७५। तत्थ खलु इमाओ पंच वासिक्कीओ पंच हेमंतीओ आउट्टीओ पं०, ता एएसिं णं पंचण्हं संवच्छराणं पढमं वासिक्किं आउट्टिं चंदे केणं नक्खत्तेणं जोएति ?, ता अभीयिणा अभीयिस्स पढमसमएणं, तंसमयं च णं सूरे केणं णक्खत्तेणं जोएति ?, ता पूसेणं,पूसस्स एगूणवीसं मुहुत्ता तेत्तालीसं च बावट्ठिभागा मुहुत्तस्स बावाट्ठिभागं च सत्तट्ठिधा छेत्ता तेत्तीसं चुण्णिया भागा सेसा, ता एएसिं पंचण्हं संवच्छराणं दोच्चं वासिक्किं आउट्टिं चंदे केणं० ?, ता संठाणाहिं, संठाणाणं एक्कारस मुहुत्ता ऊतालीसं च बावट्ठिभागा मुहुत्तस्स बावट्ठिभागं च सत्तट्ठिधा छेत्ता तेपण्णं चुण्णिया भागा सेसा, तंसमयं सूरे केणं पुच्छा, ता पूसेणं, पूसस्स णं तं चेव, ता एतेसिं णं पंचण्हं संवच्छराणं तच्चं वासिक्किं आउट्टिं चंदे केणं पुच्छा, ता विसाहाहिं, विसाहाणं तेणं चेव अभिलावेणं तेरस चउप्पण्णा चत्तालीसं चुण्णिया, तंसमयं च णं सूरे केणं० ?, ता पूसेणं, पूसस्स तं चेव, ता एतेसिं णं पंचण्हं संवच्छराणं चउत्थं वासिक्किं आउट्टिं चंदे केणं० ?, ता रेवतीहिं, रेवतीणं पणवीसं मुहुत्ता छत्तीसं च बावट्ठिभागा मुहुत्तस्स बावट्ठिभागं च सत्तट्ठिधा छेत्ता छव्वीसं चुण्णिया भागा सेसा, तंसमयं च णं सूरे केण० ?, ता पूसेणं, पूसस्स तं चेव, ता एएसिं णं पंचण्हं संवच्छराणं पंचमं वासिक्किं आउट्टिं चंदे केणं० ?, ता पुव्वाहिं फग्गुणीहिं, पुव्वाफग्गुणीणं बारस सत्तालीसा तेरस चुण्णिया, तंसमयं च णं सूरे केणंह ?, ता पूसेणं, पूसस्स तं चेव एगूणवीसा तेताली तेत्तीसा ।७६। ता एएसिं णं पंचण्हं संवच्छराणं पढमं हेमंतिं आउट्टिं चंदे केणं णक्खत्तेणं जोएति ?, ता हत्थेणं, हत्थस्स णं पंच मुहुत्ता पण्णासं च बावट्ठिभागा मुहुत्तस्स बावट्ठिभागं च सत्तट्ठिधा छेत्ता सट्ठी चुण्णिया भागा सेसा, तंसमयं च णं सूरे केणं० ?, उत्तराहिं आसाढाहिं, उत्तराणं आसाढाणं चरिमसमए, ता एएसिं णं पंचण्हं संवच्छराणं दोच्चं हेमंति आउट्टिं चंदे केणं० ?, ता सतभिसयाहिं, सतभिसयाणं दुन्नि अट्ठावीसा छत्तालीसं चुण्णिया, तंसमयं च णं सूरे केणं० ?, ता उत्तराहिं आसाढाहिं, उत्तराणं आसाढाणं चरिमसमए, ता एतेसिं णं पंचण्हं संवच्छराणं तच्चं हेमंतिं आउट्टिं चंदे केणं० ?, ता पूसेणं, पूसस्स एकूणवीसं तेताला तेत्तीसं चुण्णिया, तंसमयं च णं सूरे केणं० ?, ता उत्तराहिं आसाढाहिं, उत्तराणं आसाढाणं चरिमसमए, ता एतेसिं णं पंचण्हं संवच्छराणं चउत्थिं हेमंतिं आउट्टिं चंदे केणं० ?, ता मूलेणं, मूलस्स छ चेव अट्ठावन्ना वीसं चुण्णिया, तंसमयं च णं सूरे केणं० ?, ता उत्तराहिं आसाढाहिं, उत्तराणं आसाढाणं चरिमसमए, ता एतेसिं णं पंचण्हं संवच्छराणं पंचमं हेमंति आउट्टिं चंदे केणं० ?, कत्तियाहिं, कत्तियाणं अट्ठारस मुहुत्ता छत्तीसं च बावट्ठिभागा मुहुत्तस्स बावट्ठिभागं च सत्तट्ठिधा छेत्ता छ चुण्णिया भागा सेसा, तंसमयं च णं

Jain Education International 2010_03 For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

सूरे० ?, ता उत्तराहिं आसाढाहिं, उत्तराणं आसाढाणं चरिमसमए ।७७। तत्थ खलु इमे दसविधे जोए पं० तं०- वसभाणुजोए वेणुयाणुजोते मंचे मंचाइमंचे छत्ते छत्तातिच्छत्ते जुअणद्धे घणसंमद्दे (घण) पीणिते मंडकप्पुत्ते णामं दसमे, एतेसिं णं पंचण्हं संवच्छराणं छत्तातिच्छत्तं जोयं चंदे कंसि देसंसि जोएति ?, ता जंबुद्दीवस्स पाईणपडीणायताए उदीणदाहिणायताए जीवाए मंडलं चउव्वीसेणं सतेणं छित्ता दाहिणपुरच्छिमिल्लंसि चउभागमंडलंसि सत्तावीसं भागे उवादिणावेत्ता अट्ठावीसतिभागं वीसधा छेत्ता अट्ठारसभागे उवादिणावेत्ता तीहिं भागेहिं दोहि य कलाहिं दाहिणपुरच्छिमिल्लं चउब्भागमंडलं असंपत्ते एत्थ णं से चंदे छत्तातिच्छत्तं जोयं जोएति, तं०- उप्पिं चंदा मज्झे णक्खत्ते हेट्ठा आदिच्चे, तंसमयं च णं चंदे केणं णक्खत्तेणं जोएति ?, ता चित्ताहिं, चित्ताणं चरमसमए ☆☆☆ ।७८।।

बारसमं पाहुडं १२ ।।☆☆☆ ता कहं ते चंदमसो वड्ढोवड्ढी आहि० ?, ता अट्ठ पंचासीते मुहुत्तसते तीसं च बावट्ठिभागा मुहुत्तस्स, ता दोसिणाप क्खाओ अन्धगारपक्खमयमाणे चंदे चत्तारि बायालसते छत्तालीसं च बावट्ठिभागे मुहुत्तस्स जाइं चंदे रज्जति तं०- पढमाए पढमं भागं जाव पण्णरसीए पन्नरसं भागं, चरिमसमए चंदे रत्ते भवति अवसेसे समए चंदे रत्ते य विरत्ते य भवति, इयण्णं अमावासा, एत्थ णं पढमे पव्वे अमावासे, ता अंधारपक्खातो णं दोसिणापक्खं अयमाणे चंदे चत्तारि बायाले मुहुत्तसते छत्तालीसं च बावट्ठिभागा मुहुत्तस्स जाइं चंदे विरज्जति, तं०- पढमाए पढमं जाव पण्णरसीए पण्णरसमं भागं, चरिमे समये चंदे विरत्ते भवति अवसेससमए चंदे रत्ते य विरत्ते य भवति, इयण्णं पुण्णमासिणी, एत्थ णं दोच्चे पव्वे पुण्णमासिणी ।७९। तत्थ खलु इमाओ बावट्ठी पुण्णमासिणीओ बावट्ठी अमावासाओ पं०, बावट्ठी एते कसिणा रागा बावट्ठी एते कसिणा विरागा, एते चउव्वीसे पव्वसते एते चउव्वीसे कसिणरागविरागसते, जावतियाणं पंचण्हं संवच्छराणं समया एगेणं चउव्वीसेणं समयसतेणूणका एवतिया परित्ता असंखेज्जा देसराग विरागसता भवंतीतिमक्खाता, ता अमावासातो णं पुण्णमासिणी चत्तारि बाताले मुहुत्तसते छत्तालीसं बावट्ठिभागे मुहुत्तस्स आहि०, ता पुण्णमासिणीतो णं अमावासा चत्तारि बायाले मुहुत्तसते छत्तालीसं बावट्ठिभागे मुहुत्तस्स आहि०, ता अमावासातो णं अमावासा अट्ठपंचासीते मुहुत्तसते तीसं च बावट्ठिभागे मुहुत्तस्स आहि०, ता पुण्णमासिकतो णं पुण्णमासिणी अट्ठपंचासीते मुहुत्तसते तीसं बावट्ठिभागे मुहुत्तस्स आहि०, एस णं एवतिए चंदे मासे एस णं एवतिए सगले जुगे ।८०। ता चंदेणं अद्धमासेणं चंदे कति मंडलाइं चरति ?, ता चोद्दस चउब्भागमंडलाइं चरति एगं च चउवीससतभागं मंडलस्स, ता आइच्चेणं अद्धमासेणं चंदे कति मंडलाइं चरति ?, ता सोलस मंडलाइं चरति, सोलसमंडलचारी तदा अवराइं खलु दुवे अट्ठकाइं जाइं चंदे केणइ असामण्णकाइं सयमेव पविट्ठित्ता २ चारं चरति, कतराइं खलु दुवे अट्ठकाइं जाइं चंदे जाव पविट्ठित्ता २ चारं चरति ?, इमाइं खलु ते दुवे अट्ठगाइं जाव चरति तं०- निक्खममाणे चेव अमावासंतेणं पविसमाणे चेव पुण्णमासिंतेणं, एताइं जाव चरइ, ता पढमायणगते चंदे दाहिणाते भागाते पविसमाणे सत्त अद्धमंडलाइं जाइं चंदे दाहिणाते जाव चरति, कतराइं खलु ताइं सत्त अद्धमंडलाइं जाव चरति ?, इमाइं खलु ताइं सत्त अद्धमंडलाइं जाइं जाव चरति ?, तं०- बिदिए अद्धमंडले चउत्थे छट्ठे अट्ठमे दसमे बारसे चउदसमे अद्धमंडले, एताइं खलु ताइं सत्त अद्धमंडलाइं जाव पविसमाणे चारं चरति, ता पढमायणगते चंदे उत्तराते भागाते पविसमाणे छ अद्धमंडलाइं तेरस य सत्तट्ठिभागाइं अद्धमंडलस्स जाइं चंदे उरत्ताते भागाए पविसमाणे चारं चरति, कतराइं खलु ताइं छ अद्धमंडलाइं जाव चारं चरति ?, इमाइं खलु ताइं छ अद्धमंडलाइं० तं०- तईए पंचमे सत्तमे नवमे एक्कारसमे तेरसमे अद्धमंडले पन्नरसममंडलस्स तेरस सत्तट्ठिभागाइं, एताइं खलु ताइं छ अद्धमंडलाइं तेरस य सत्तट्ठिभागाइं अद्धमंडलस्स जाइं चंदे उत्तराते भागाते पविसमाणे चारं चरति, एतावया च पढमे चंदायणे समत्ते भवति, ता णक्खत्ते अद्धमासे नो चंदे अद्धमासे चंदे अद्धमासे नो णक्खत्ते अद्धमासे, ता नक्खत्ताओ अद्धमासानो ते चंदे चंदेणं अद्धमासेणं किमधियं चरति ?, एगं अद्धमंडलं चत्तारि य सत्तट्ठिभागाइं अद्धमंडलस्स सत्तट्ठिभागं च एक्कतीसाए छेत्ता णव भागाइं, ता दोच्चायणगते चंदे पुरच्छिमाते भागाते णिक्खममाणे सत्त चउप्पण्णाइं जाइं चंदे परस्स चिन्नाइं पडिचरति सत्त तेरसकाइं जाइं चंदे अप्पणा चिण्णाइं चरति, ता दोच्चायणगते चंदे पच्चत्थिमाए भागाए निक्खममाणे छ

Jain Education International 2010_03 For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

चउप्पण्णाइं जाइं चंदे परस्स चिण्णाइं पडिचरति छ तेरसगाइं जाइं चंदे अप्पणा चिण्णाइं पडिचरति अवरगाइं खलु दुवे तेरसगाइं जाइं चंदे केणइ असामन्नगाइं सयमेव पविट्ठित्ता २ चारं चरति, कतराइं खलु ताइं दुवे जाव चरति ?, इमाइं खलु ताइं दुवे० तं०- सव्वब्भंतरे चेव मंडले सव्वबाहिरे चेव मंडले, एयाणि खलु ताणि दुवे जाव चरइ, एतावता दोच्चे चंदायणे समत्ते भवति, ता णक्खत्ते मासे नो चंदे मासे चंदे मासे णो णक्खत्ते मासे, ता णक्खत्ताते मासाए चंदे चंदेणं मासेणं किमाधियं चरति ?, ता दो अद्धमंडलाइं चरति अट्ठ य सत्तट्ठिभागाइं अद्धमंडलस्स सत्तट्ठिभागं च एक्कतीसधा छेत्ता अट्ठारस भागाइं, ता तच्चायणगते चंदे पच्चत्थिमाते भागाए पविसमाणे बाहिराणंतरस्स पच्चत्थिमिल्लस्स अद्धमंडलस्स ईतालीसं सत्तट्ठिभागाइं जाइं चंदे अप्पणो परस्स य चिण्णाइं पडिचरति तेरस सत्तट्ठिभागाइं जाइं चंदे परस्स चिण्णाइं पडिचरति तेरस सत्तट्ठिभागाइं चंदे अप्पणो परस्स च चिण्णाइं पडिचरति, एतावयाव बाहिराणंतरे पच्चत्थिमिल्ले अद्धमंडले समत्ते भवति, तच्चायणगते चंदे पुरच्छिमाए भागाए पविसमाणे बाहिरतच्चस्स पुरच्छिमिल्लस्स अद्धमंडलस्स ईतालीसं सत्तट्ठिभागाइं जाइं चंदे अप्पणो परस्सस य चिण्णाइं पडियरति तेरस सत्तट्ठिभागाइं जाइं चंदे परस्स चिण्णाइं पडिचरति तेरस सत्तट्ठिभागाइं जाइं चंदे अप्पणो परस्स य चिण्णाइं पडियरंति, एतावताव बाहिरे तच्चे पुरच्छिमिल्ले अद्धमंडले समत्ते भवति, ता तच्चायणगते चंदे पच्चत्थिमाते भागाते पविसमाणे बाहिरचउत्थस्स पच्चत्थिमिल्लस्स अद्धमंडलस्स अट्ठ सत्तट्ठिभागाइं सत्तट्ठिभागं च एक्कतीसधा छेत्ता अट्ठारस भागाइं जाइं चंदे अप्पणो परस्स य चिण्णाइं पडियरति, एतावताव बाहिरचउत्थपच्चत्थिमिल्ले अद्धमंडले समत्ते भवइ, एवं खलु एवं चंदेणं मासेणं चंदे तेरस चउप्पण्णगाइं दुवे तेरसगाइं जाइं चंदे परस्स चिण्णाइं पडिचरति, तेरस तेरसगाइं जाइं चंदे अप्पणो चिण्णाइं पडियरति, दुवे ईतालीसगाइं दुवे तेरसगाइं अट्ठ सत्तट्ठिभागाइं सत्तट्ठिभागं च एक्कतीसधा छेत्ता अट्ठारसभागाइं जाइं चंदे अप्पणो परस्स य चिण्णाइं पडिचरति, अवराइं खलु दुवे तेरसगाइं जाइं चंदे केणइ असा मन्नगाइं सयमेव पविट्ठित्ता २ चारं चरति, इच्चेसो चंदमासोऽभिगमणणिक्खमणवुड्ढिअणवट्ठितसंठाणसंठितीविउव्वणगिड्ढिपत्ते रूवी चंदे देवे २ आहि० ☆☆☆।८१॥ **तेरसमं पाहुडं १३** ॥☆☆☆ ता कता ते दोसिणा बहू आहि० ?, ता दोसिणापक्खे णं दोसिणा बहू आहि०, ता कहं दोसिणापक्खे दोसिणा बहू आहि० ?, ता अंधकारपक्खाओ णं दोसिणा बहू आहि०, ता कहं ते अंधयारपक्खातो दोसिणापक्खे दोसिणा बहू आहि० ?, ता अंधकारपक्खातो णं दोसिणापक्खं अयमाणे चंदे चत्तारि बायाले मुहुत्तसते छातालीसं च बावट्ठिभागे मुहुत्तस्स जाइं चंदे विरज्जति, तं०- पढमाए पढमं भागं जाव पण्णरसीए पण्णरसं भागं, एवं खलु अंधकारपक्खातो दोसिणापक्खे दोसिणा बहू आहि०, ता केवतिया णं दोसिणापक्खे दोसिणा बहू आहि० ?, ता परित्ता असंखेज्जा भागा, ता कता ते अंधकारे बहू आहि० ?, ता अंधयारपक्खे णं बहू अंधकारे आहि०, ता कहं अंधकारपक्खे अंधकारे बहू आहि० ?, ता दोसिणापक्खातो अंधकारपक्खे अंधकारे बहू आहि०, ता कहं ते दोसिणापक्खातो अंधकारपक्खे अंधकारे बहू आहि० ?, ता दोसिणापक्खातो णं अंधकारपक्खं अयमाणे चंदे चत्तारि बाताले मुहुत्तसते छायालीसं च बावट्ठिभागे मुहुत्तस्स जाइं चंदे रज्जति, तं०- पढमाए पढमं भागं जाव पण्णरसीए पण्णरसमं भागं, एवं खलु दोसिणापक्खातो अंधकारपक्खे अंधकारे बहू आहि०, ता केवतिए णं अंधकारपक्खे अंधकारे बहू आहि० ?, परित्ता असंखेज्जा भागा ☆☆☆ ।८२॥ **चोद्दसमं पाहुडं १४** ॥☆☆☆ ता कहं ते सिग्घगती वत्थू आहि०, ता एतेसिं णं चंदिमसूरियगहनक्खत्ततारारूवाणं चंदेहिंतो सूरा सिग्घगती सूरेहिंतो गहा० गहेहिंतो णक्खत्ता० णक्खत्तेहिंतो तारा० सव्वप्पगती चंदा सव्वसिग्घगती तारा, ता एगमेगेणं मुहुत्तेणं चंदे केवतियाइं भागसत्ताइं गच्छति ?, ता जं जं मंडलं उवसंकमित्ता चारं चरति तस्स २ मंडलपरिक्खेवस्स सत्तरस अडसट्ठिं भागसते गच्छति मंडलं सतसहस्सेणं अट्ठाणउतीसतेहिं छेत्ता, ता एगमेगेणं मुहुत्तेणं सूरिए केवतियाइं भागसयाइं गच्छति ?, ता जं जं मंडलं उवसंकमित्ता चारं चरति तस्स २ मंडलपरिक्खेवस्स अट्ठारस तीसे भागसते गच्छति मंडलं सतसहस्सेणं अट्ठाणउतीसतेहिं छेत्ता, ता एगमेगेणं मुहुत्तेणं णक्खत्ते केवतियाइं भागसताइं गच्छति ?, ता जं जं मंडलं उवसंकमित्ता चारं चरति तस्स २ मंडलपरिक्खेवस्स अट्ठारस पणतीसे भागसते

Jain Education International 2010_03 For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

गच्छति मंडलं सतसहस्सेणं अट्ठाणउतीसतेहिं छेत्ता ।८३। ता जया णं चंदं गतिसमावण्णं सूरे गतिसमावण्णे भवति से णं गतिमाताए केवतियं विसेसेति ?, बावट्ठिभागे विसेसेति, ता जया णं चंदं गतिसमावण्णं णक्खत्ते गतिसमावण्णे भवइ से णं गतिमाताए केवतियं विसेसेइ ?, ता सत्तट्ठि भागे विसेसेति, ता जता णं सूरं गतिसमावण्णं णक्खत्ते गतिसमावण्णे भवति से णं गतिमाताए केवतियं विसेसेति ?, ता पंच भागे विसेसेति, ता जता णं चंदं गतिसमावण्णं अभीयीणक्खत्ते णं गतिसमावण्णे पुरच्छिमाते भागाते समासादेति त्ता णव मुहुत्ते सत्तावीसं च सत्तट्ठिभागे मुहुत्तस्स चंदेण सद्धिं जाव जोएति त्ता जोयं अणुपरियट्टति त्ता विप्पजहाति त्ता विगतजोई यावि भवति, ता जता णं चंदं गतिसमावण्णं सवणे णक्खत्ते गतिसमावण्णे पुरच्छिमाते तहेव जहा अभियिस्स नवरं तीसं मुहुत्ते चंदेण सद्धिं जोअं जोएति त्ता विगतजोई यावि भवइ, एवं पण्णरसमुहुत्ताइं तीसतिमुहुत्ताइं पणयालीसमुहुत्ताइं भाणितव्वाइं जाव उत्तरासाढा (सूर्य० ता जता णं चंदं गतिसमावण्णं गहे गतिसमावण्णे पुरच्छिमाते भागाते समासादेति त्ता चंदेणं सद्धिं जोगं जुंजति त्ता जोगं अणुपरियट्टति त्ता विप्पजहति विगतजोई यावि भवति) ता जया णं सूरं गतिसमावण्णं अभीयीणक्खत्ते गतिसमावण्णे पुरच्छिमाते भागाते समासादेति त्ता चत्तारि अहोरत्ते छच्च मुहुत्ते सूरेणं सद्धिं जोयं जोएति त्ता जाव विगतजोगी यावि भवति, एवं सूरेण सद्धिं जोगो भाणियव्वो जाव उत्तरासाढाणक्खत्ते विगतजोगी यावि भवति (सूर्य० ता जता णं सूरं गतिसमावण्णं गहे गतिसमावण्णे पुरच्छिमाते भागाते समासादेति त्ता सूरेण सद्धिं यथाजोयं जुंजति त्ता यथाजोयं अणुपरियट्टति त्ता जाव विप्पजहति त्ता विगतजोगी यावि भवति) ।८४। ता णक्खत्तेणं मासेणं चंदे कति मंडलाइं चरति ?, ता तेरस मंडलाइं चरति तेरस य सत्तट्ठिभागे मंडलस्स, ता णक्खत्तेणं मासेणं सूरे पुच्छा, तेरस मंडलाइं चरति चोत्तालीसं च सत्तट्ठिभागे मंडलस्स, ता णक्खत्तेणं मासेणं णक्खत्ते० ?, ता तेरस मंडलाइं चरति अद्धसीतालीसं च सत्तट्ठिभागे मंडलस्स, ता चंदेणं मासेणं चंदे कति मंडलाइं चरति ?, चोद्दस चउभागाइं मंडलाइं चरति एगं च चउव्वीससतं भागं मंडलस्स, ता चंदेणं मासेणं सूरे कति पुच्छा, ता पण्णरस चउभागूणाइं मंडलाइं चरति एगं च चउवीससयभागं मंडलस्स, ता चंदेणं मासेणं णक्खत्ते कति पुच्छा, ता पण्णरस चउभागूणाइं मंडलाइं चरति छच्च चउवीससतभागे मंडलस्स, ता उडुणा मासेणं चंदे कति पुच्छा, ता चोद्दस मंडलाइं चरति तीसं च एगट्ठिभागे मंडलस्स, ता उडुणा मासेणं सूरे कति पुच्छा, ता पण्णरस मंडलाइ चरति, ता उडुणा मासेणं णक्खत्ते कति पुच्छा, ता पण्णरस मंडलाइं चरति पंच य बावीससतभागे मंडलस्स, ता आदिच्चेणं मासेणं चंदे कति मंडलाइं चरति ?, ता चोद्दस मंडलाइं चरति एक्कारस य पन्नरसभागे मंडलस्स, ता आदिच्चेणं मासेणं सूरे कति पुच्छा, ता पण्णरस चउभागाहिगाइं मंडलाइं चरति, ता आदिच्चेणं मासेणं णक्खत्ते कति पुच्छा, ता पण्णरस चउभागाहिगाइं मंडलाइं चरति पंचतीसं च वीससतभागमंडलाइं चरति, ता अभिवड्ढिएणं मासेणं चंदे कति मंडलाइं चरति ?, ता पण्णरस मंडलाइं तेसीतिं छलसीयसतभागे मंडलस्स, ता अभिवड्ढितेणं मासेणं सूरे पुच्छा, ता सोलस मंडलाइं चरति तीहिं भागेहिं ऊणगाइं दोहिं अडयालेहिं सएहिं मंडलं छित्ता, अभिवड्ढितेणं मासेणं नक्खत्ते कति मंडलाइं चरति ?, ता सोलस मंडलाइं चरति सीतालीसाए भागेहिं अहियाइं चोद्दसहिं अट्ठासीएहिं सएहिं मंडलं छेत्ता ।८५। ता एगमेगेणं अहोरत्तेणं चंदे कति मंडलाइं चरति ?, ता एगं अद्धमंडलं चरति एक्कतीसाए भागेहिं ऊणं णवहिं पण्णरसेहिं सएहिं अद्धमंडलं छेत्ता, ता एगमेगेणं अहोरत्तेणं सूरिए कति मंडलाइं चरति ?, ता एगं अद्धंमंडलं चरति, ता एगमेगेणं अहोरत्तेणं णक्खत्ते कति मंडलाइं चरति ?, एगं अद्धमंडलं चरति दोहिं भागेहिं अधियं सत्तहिं बत्तीसेहिं सएहिं अद्धमंडलं छेत्ता, ता एगमेगं मंडलं चंदे कतिहिं अहोरत्तेहिं चरति ?, ता दोहिं अहोरत्तेहिं चरति एक्कतीसाए भागेहिं अधितेहिं चउहिं बायालेहिं सतेहिं राइंदियं छेत्ता, ता एगमेगं मंडलं सूरे कतिहिं अहोरत्तेहिं चरति ?, ता दोहिं अहोरत्तेहिं चरति, ता एगमेगं मंडलं णक्खत्ते कतिहिं अहोरत्तेहिं चरति ?, ता दोहिं अहोरत्तेहिं चरति दोहिं भागेहिं ऊणेहिं तिहिं सत्तसट्ठेहिं सतेहिं राइंदिएहिं छेत्ता, ता जुगेणं चंदे कति मंडलाइं चरति ?, ता अट्ठ चुलसीते मंडलसते चरति, ता जुगेणं सूरे कति मंडलाइं चरति ?, णवपण्णरसमंडलसते चरति, ता जुगेणं णक्खत्ते कति मंडलाइं चरति ?, ता अट्ठारसपणतीसे दुभागमंडलसते चरति, इच्चेसा मुहुत्तगती

Jain Education International 2010_03 For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

रिक्खातिमासराइंदियजुगमंडलपविभत्ती सिग्घगती वत्थु आहि० ☆☆☆ ।८६॥ **पन्नरसमं पाहुडं १५ ॥** ☆☆☆ ता कहं ते दोसिणालक्खणे आहि० ?, चंदलेसादी य दोसिणादी य दोसिणाई य चंदलेसादी य के अट्ठे किंलक्खणे ?, ता एकट्ठे एगलक्खणे, ता सूरलेस्सादी य आयवेइ य आतवेति य सूरलेस्सादी य के अट्ठे किंलक्खणे ?, ता एगट्ठे एगलक्खणे, ता अंधकारेति य छायाइ य छायाति य अंधकारेति य के अट्ठे किंलक्खणे ?, ता एगट्ठे एगलक्खणे ☆☆☆ ।८७॥ **सोलसमं पाहुडं १६ ॥**☆☆☆ ता कहं ते चयणोववाता आहि० ?, तत्थ खलु इमाओ पणवीसं पडिवत्तीओ पं०, तत्थ एगे एव०-ता अणुसमयमेव चंदिमसूरिया अण्णे चयंति अण्णे उववज्जंति, एवं जच्चेवोयाए संठितीए पणुवीसं पडिवत्तीओ तातो एत्थंपि भाणितव्वाओ जाव ता अणुओसप्पिणीउस्सप्पिणीमेव चंदिमसूरिया अण्णे चयंति अण्णे उववज्जंति एगे एव०, वयं पुण एवं वदामो-ता चंदिमसूरिया णं देवा महिड्ढीआ महाजुतीया महाबला महाजसा महासोक्खा महाणुभावा वरवत्थधरा वरमल्लधरा वरगन्धधरा वराभरणधरा अव्वोच्छित्तिणयट्ठताए (काले) अण्णे चयंति अण्णे उववज्जंति आहि० ☆☆☆ ।८८॥ **सत्तरसमं पाहुडं १७ ॥**☆☆☆ ता कहं ते उच्चत्ते आहि० ?, तत्थ खलु इमाओ पणवीसं पडिवत्तीओ पं०, तत्थेगे एव०-ता एगं जोयणसहस्सं सूरे उट्ढं उच्चत्तेणं दिवड्ढं चंदे एगे एव०, एगे पुण०-ता दो जोयणसहस्साइं सूरे उड्ढं उच्चत्तेणं अड्ढातिज्जाइं चंदे एगे एव०, एवं एतेणं अभिलावेणं ता तिन्नि जोयणसहस्साइं सूरे अद्धुट्ठाइं चंदे चत्तारि जोयणसहस्साइं सूरे अद्धपंचमाइं चंदे पंच जोयणसहस्साइं सूरे अद्धच्छट्ठाइं चंदे एवं छ सूरे अद्धसत्तमाइं चंदे सत्त सूरे अद्धट्ठमाइं चंदे अट्ठ सूरे अद्धनवमाइं चंदे नव सूरे अद्धदसमाइं चंदे दस सूरे अद्धएक्कारस चंदे एक्कारस सूरे अद्धबारस चंदे बारस सूरे अद्धतेरस चंदे तेरस सूरे अद्धचोद्दस चंदे चोद्दस सूरे अद्धपण्णरस चंदे पण्णरस सूरे अद्धसोलस चंदे सोलस सूरे अद्धसत्तरस चंदे सत्तरस सूरे अद्धअट्ठारस चंदे अट्ठारस सूरे अद्धएकूणवीसं चंदे एकोणवीसं सूरे अद्धवीसं चंदे वीसं सूरे अद्धएक्कवीसं चंदे एक्कवीसं सूरे अद्धबावीसं चंदे बावीसं सूरे अद्धतेवीसं चंदे तेवीसं सूरे अद्धचउवीसं चंदे चउवीसं सुरे अद्धपणवीसं चंदे एगे एव०, एगे पुण०-पणवीसं जोयणसहस्साइं सूरे उड्ढंउच्चत्तेणं अद्धछव्वीसं चंदे एगे एव०, वयं पुण एवं वदामो-ता इमीसे रयणप्पभाए पुढवीए बहुसमरमणिज्जाओ भूमिभागाओ सत्त णउइजोयणसए अबाहाए हेट्ठिल्ले तारविमाणे चारं चरति अट्ठजोयणसते अवाहाए सूरविमाणे चारं चरति अट्ठअसीए जोयणसए अबाहाए चंदविमाणे चारं चरति णव जोयणसताइं अबाहाए उवरिल्ले तारविमाणे चारं चरति हेट्ठिल्लातो तारविमाणातो दस जोयणाइं अवाहाए सूरविमाणे चारं चरति नउतिं जोयणे अबाहाए चंदविमाणे चारं चरति एवं जहेव जीवाभिगमे तहेव नेयव्वं सव्वब्भंतरिल्लं चारं संठाणं पमाणं वहंति सिग्घगती इड्ढी तारंतरं अग्गमहिसीओ ठिती अप्पाबहुं जाव ताराओ संखेज्जगुणाओ (सूर्य० ८९-९९ गा० ३१) ☆☆☆।९९॥ **अट्ठारसमं पाहुडं १८॥**☆☆☆ ता कति णं चंदिमसूरिया सव्वलोयंसि ओभासंति उज्जोवेंति तवंति पभासंति आहितात्ति वदेज्जा ?, तत्थ खलु इमाओ बारस पडिवत्तीतो पं०, तत्थेगे एव०-ता एगे चंदे एगे सूरे सव्वलोगंसि ओभासंति जाव पभासंति आहितेति०, एगे पुण०-ता तिण्णि चंदा तिण्णि चेव सूरा सव्वलोए० एगे०, एगे पुण०-ता आउट्ठिं चंदा एवं एएणं अभिलावेणं जातो चेव ततिए पाहुडे दुवालस पडिवत्तीओ तातो चेव इहंपि णेयव्वातो नवरं सत्त य दस य जाव ता बावत्तरं चंदसहस्सं बावत्तरं सूरितसहस्सं सव्वलोयं ओभासति जाव पभासति आहि० एगे एव०, वयं पुण एवं वयामो ता अयण्णं जंबुद्दीवे जाव परिक्खेवेणं, जंबुदीवे णं दीवे दो चंदा पभासेंसु पभासेंति जहा जीवाभिगमे जाव तारातो, ता जंबुद्दीवं णं लवणे णामं समुद्दे वट्टे वलयाकारसंठिते सव्वतो समंता परिक्खिवित्ताणं चिट्ठति, ता लवणे णं समुद्दे किं समचक्कवालसंठिते विसमचक्कवालसंठिते ?, ता समचक्कवालसंठिए नो विसमचक्कवालसंठिए, ता लवणे समुद्दे केवतियं चक्कवालविक्खंभेणं केवतितं परिक्खेवेणं आहि० ?, ता दो जोयणसयसहस्साइं चक्कवालविक्खंभेणं पण्णरसजोयणसयसहस्साइं सतं चउआलं किंचिविसेसूणे परिक्खेवेणं, ता लवणे णं समुद्दे चत्तारि चंदा पभासिसु वा जाव तारातो, ता लवणं

Jain Education International 2010_03 For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

समुद्दं धायतिसंडे णं दीवे वट्टे वलयाकारसंठिते जाव चिट्ठति, ता धायइसंडे णं दीवे समचक्कवालसंठिते एवं विक्खंभो परिक्खेवो जोतिसं जहा जीवाभिगमे जाव तारातो, ता धायतिसंडं णं दीवं कालोए णामं समुद्दे किं वट्टे वलयाकारसंठिते जाव चिट्ठति, ता कालोए णं समुद्दे किं समचक्कवालसंठिते विसम० एवं विक्खंभो परिक्खेवो जोतिसं च भाणियव्वं जाव तारातो, ता कालोअण्णं समुद्दं पुक्खरवरे णं दीवे वट्टे वल जाव चिट्ठति, ता पुक्खरवरे णं दीवे णं समचक्कवाल० विक्खंभो परिक्खेवो जोतिसं जाव तारातो, पुक्खरवरस्स णं दीवस्स चक्कवालविक्खंभस्स बहुमज्झदेसभाए एत्थ णं माणुसुत्तरे णामं पव्वते वट्टे वलयाकारसंठिते पं०, जे णं पुक्खरवरं दीवं दुहा विभयमाणे २ चिट्ठति तं०-अब्भंतरपुक्खरद्धं च बाहिरपुक्खरद्धं च, ता अब्भिंतरपुक्खरद्धे णं किं समचक्कवालसं० एवं विक्खंभो परिक्खेवो जोतिसं गहातो य जाव एगससीपरिवारो तारागणकोडिकोडिणं, ता पुक्खरवरं णं दीवं पुक्खरोदे समुद्दे वट्टे वल जाव चिट्ठति, एवं विक्खंभो परिक्खेवो जोतिसं च भाणितव्वं जहा जीवाभिगमे जाव संयभूरमणे।(सूर्य० १००-१ गा० ३२-८८) ☆☆☆ ।१०१॥ **एगूणवीसइमं पाहुडं १९** ॥ ☆☆☆ ता कहं ते अणुभागे आहियत्ति वइज्जा ?, तत्थ खलु इमातो दो पडिवत्तीतो पं०, तत्थेगे एव०-ता चंदिमसूरिया णं णो जीवा अजीवा णो घणा झुसिरा णो बायरबोंदिधरा कलेवरा णत्थि णं तेसिं उट्ठाणेति वा कम्मेति वा बलेइ वा वीरिएइ वा पुरिसकारपरक्कमेइ वा णो ते विज्जुं लवंति णो असणिं लवंति णो थणितं लवंति, अहे णं बायरे वाउयाए संमुच्छति अहे णं बायरवाउयाए संमुच्छित्ता विज्जुंपि लवंति असणिंपि लवंति थणितंपि लवंति०, एगे पुण एव०-ता चंदिमसूरिया णं जीवा णो अजीवा घणा णो झुसिरा बादरबोंदिधरा णो कलेवरा अत्थि णं तेसिं णं उट्ठाणेइ वा जाव पुरिसक्कारपरक्कमेति वा ते विज्जुंपि लवंति असणिंपि लवंति थणियंपि लवंति०, वयं पुण एवं वदामो-ता चंदिमसूरिता णं देवा महिड्ढिया जाव महासुक्खा वरवत्थधरा वरगंधधरा वरमल्लधरा वराभरणधरा अव्वोच्छित्तिणयट्ठताए अण्णे चयंति अण्णे उववज्जंति आहि० ।१०२। ता कहं ते राहुकम्मे आहि०?. तत्थ खलु इमातो दो पडिवत्तीतो पं०, तत्थ एगे एव०-ता अत्थि णं से राहुदेवे जे णं चंदं सूरं च गेण्हंति, एगे पुण०-ता णत्थि णं से राहुदेवे जे णं चंदं च सूरं च गेण्हति, तत्थ जे ते एव०-ता अत्थि णं से राहू देवे जे णं चंदं सूरं च गेण्हति ते णं एव०-ता राहू णं देवे चंदं सूरं च गेण्हमाणे बुद्धंतेणं गिण्हित्ता बुद्धंतेणं मुयति बुद्धंतेणं गिण्हित्ता मुद्धंतेणं मुंयति मुद्धंतेणं गिण्हित्ता बुद्धंतेणं मुयति मुद्धंतेणं गिण्हित्ता मुद्धंतेणं मुयति वामभुयंतेणं गिण्हित्ता वामभुयंतेणं मुंयइ वामभुंयतेणं गिण्हित्ता दाहिणभुयंतेणं मुयइ दाहिणभुयंतेणं गेण्हित्ता वामभुंयतेणं मुयति दाहिणभुंयतेणं गिण्हित्ता दाहिणभुंयंतेणं मुयति, तत्थ जे ते एव०-ता णत्थि णं से राहु देवे जे णं चंदं सूरं च गेण्हति ते णं एव०-तत्थ खलु इमे पण्णरस कसिणा पोग्गला पं०, तं०-सिंघाडए जडिलए खत्तए खरते अंजणे खंजणे सीतले हिमसीतले केलासे अरूणप्पहे पणिज्जए भमुव (नभसू) रए कविलए पिंगलए राहू, ता जता णं एए पण्णरस कसिणा कसिणा पोग्गला सता चंदस्स वा सूरस्स वा लेसाणुबद्धचारिणो भवंति तता णं मणुस्सलोगे मणुस्सा वतंति-एवं खलु राहू चंदं वा सूरं वा गिण्हिति, ता जता णं एए पण्णरस कसिणा कसिणा पोग्गला णो सता चंदस्स वा सूरस्स वा लेसाणुबद्धचारिणो भवंति णो खलु तदा माणुसलोयम्मि मणुस्सा एवं वदंति-एवं खलु राहू चंदं सूरं वा गेण्हति एगे एवमाहंसु, वयं पुण एवं वयामो ता राहू णं देवे महिड्ढीए जाव महासुक्खे वरवत्थधारी जाव वराभरणधारी, राहुस्स णं देवस्स णव णामधेज्जा पं० तं०-सिंघाडते जडिलए खत्तते खरए ददुरे मगरे मच्छे कच्छपे किण्हसप्पे, राहुस्स णं देवस्स विमाणा पंचवण्णा पं० तं०-किण्हा णीला लोहिता हालिद्दा सुक्किल्ला, अत्थि कालए राहुविमाणे खंजणवण्णाभे पं० अत्थि णीलए राहुविमाणे लाउयवण्णाभे पं० अत्थि लोहिए राहु० मंजिट्ठावण्णाभे अत्थि पीते० हालिद्दवण्णाभे अत्थि सुक्किल्लए० भासरासिवण्णाभे पं०, जया णं राहू आगच्छमाणे वा गच्छमाणे वा विउव्वमाणे वा परियारेमाणे वा चंदलेसं पुरच्छिमेणं आवरित्ताणं पच्चच्छिमेणं वीईवयइ तता णं पुरच्छिमेणं चंदे उवदंसेति पच्चच्छिमेणं राहू, जया णं राहू आगच्छमाणे वा जाव परियारेमाणे वा चंदस्स वा सूरस्स वा लेसं पच्चत्थिमेणं आवरित्ता पुरच्छिमेणं

Jain Education International 2010_03 For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

वीईवयइ तया णं पच्चत्थिमेणं चंदे उवदंसेति पुरत्थिमेणं राहू, एएणं अभिलावेणं दाहिणेणं आवरेत्ताणं उत्तरेणं वीईवयइ उत्तरेणं आवरेत्ता दाहिणेणं वीईवयइ उत्तरपुरत्थिमेणं आवरेत्ता दाहिणपच्चत्थिमेणं वीईवयइ दाहिणपच्चत्थिमेणं आवरेत्ता उत्तरपुरत्थिमेणं वीईवयइ दाहिणपुरत्थिमेणं आवरेत्ता उत्तरपच्छत्थिमेणं वीईवयइ, उत्तरपच्चत्थिमेणं आवरेत्ता दाहिणपुरत्थिमेणं वीईवयइ तया णं उत्तरपच्चत्थिमेणं चंदे उवदंसेति दाहिणपुरत्थिमेणं राहू, ता जता णं राहू आगच्छमाणे वा गच्छ० चंदस्स लेस्सं आवरेति तता णं मणुस्सलोगे मणुस्सा वतंति-एवं खलु राहुणा चंदे गहिए २, ता जता णं राहू आगच्छमाणे वा० चंदलेस्सं आवरित्ता पासेण वीईवयइ तता णं मणुस्सलोए मणुस्सा वदंति-एवं खलु राहुणा चंदे वंते २, जता णं राहू आगच्छमाणे वा० चंदस्स लेस्सं आवरेत्ताणं मज्झेणं वीईवयइ तता णं मणुस्सलोगे मणुस्सा वतंति-एवं खलु राहुणा चंदे वइयरिए २, ता जता णं राहू आगच्छमाणे वा० चंदस्स लेस्सं अहे सपक्खिं सपडिदिसिं आवरेत्ताणं चिट्ठति तता णं मणुस्सलोए मणुस्सा वतंति-एवं खलु राहुणा चंदे घत्थे २, ता कतिविहे णं राहू पं० ?, ता दुविहे राहू पं० तं०-धुवराहू य पव्वराहू य, तत्थ णं जे से धुवराहू से णं बहुलपक्खस्स पडिवए पण्णरसतिभागेणं पण्णरसतिभागं चंदलेसं आवरेमाणे चिट्ठति तं०-पढमाए पढमं भागं बितियाए बितियं भागं जाव पण्णरसीए पण्णरसमं भागं, चरिमसमते चंदे रत्ते भवति अवसेससमए चंदे रत्ते विरत्ते य भवति, तमेव सुक्कपक्खम्मि उवदंसेमाणे २ चिट्ठति तं०-पढमाए पढमं भागं जाव पण्णरसमं भागं, चरिमे समए चंदे विरत्ते भवति अवसेससमए चंदे रत्ते य विरत्ते य भवति, तत्थ णं जे से पव्वराहू से जह० छण्हं मासाणं उक्को० बातालीसाते मासाणं चंदस्स अडतालीसाए संवच्छराणं सूरस्स ।१०३। ता से केणट्ठेणं एवं वुच्चति-चंदे ससी २ ?, ता चंदे णं जोइसिंदे जोतिसराया सोमे कंते सुभगे पियदंसणे सुरूवे ता से एतेणट्ठेणं एवं वुच्चति-चंदे ससी २, ता से केणट्ठेणं एवं वुच्चति-सूरे आइच्चे २ ?, ता सूरादिया णं समताति वा आवलिवाति वा जाव उस्सप्पिणीति वा ओसप्पिणीति वा से एएणं अट्ठेणं एवं वुच्चति-सूरे आदिच्चे २ ।१०४। ता चंदस्स णं जोतिसिंदस्स जोतिसरण्णो कति अग्गमहिसीओ पं० ?, चत्तारि अग्गमहिसीओ पं० तं०-चंदप्पहा दोसिणाभा अच्चिमाली पभंकरा, तत्थ णं एगमेगाए देवीए चत्तारि २ एवं चेव पुव्वभणितं अट्ठारसमे पाहुडे तहा णायव्वं जाव मेहुणवत्तियं, एवं सूरस्सवि, ता सूरियचंदिमा णं जोतिसिंदा जोतिसरायाणो केरिसए कामभोगे पच्चणुभवमाणा विहरंति ?, ता से जहाणामए केइ पुरिसे पढमजुव्वणुट्ठाणवलसमत्थाए भारियाए सद्धिं अचिरवत्तवीवाहे अत्थगवेसणताए सोलसवासविप्पवसिते ता से णं तता लद्धट्ठे कयकज्जे अणहसमग्गे पुणरवि सयं गिहं हव्वमागते ण्हाए जाव सरीरे मणुण्णं थालीपागसुद्धं अट्ठारसवंजणाउलं भोयणं भुत्ते समाणे तंसि तारिसगंसि वासघरंसि अब्भिंतरतो सचित्तकम्मे बाहिरतो दूमियघट्ठमट्ठे विचित्तउल्लोयचिल्लिगतले मणिरयणपणासियंधयारे बहुसमरमणिज्जभूमिभागे पंचवण्णसरससुरभिमुक्क (पुप्फ) पुंजोवयारकलिते कालागरूपवरकुंदुरूक्कधूवमघमघंतगंधुद्धुयाभिरामे सुगंधवरगंधिए गंधवट्टिभूते तंसि तारिसगंसि सयणिज्जंसि सालिंगणवट्टिए उभतो बिब्बोयणे दुहतो उण्णए मज्झेणयगंभीरे गंगापुलिणवालुउद्दालसालिसते उवचियसोमदुगुल्लपट्टपडिच्छायणे सुविरइयरयत्ताणे रत्तंसुयसंवुडे आयिणगरूयबूरणवणीततूलफासे गंधवरकुसुमचुण्णसयणोवयारकलिते ता एयारिसियाए सिंगारागारचारूवेसाते संगय जाव जोव्वणविलासकलिताए अणुरत्ताए अविरत्ताए मणोणुकूलाए भारियाए सद्धिं इट्ठे सद्दफरिसरसरूवगंधे पंचविहे माणुस्सए कामभोगे पच्चणुभवमाणे विहरेज्जा, ता से णं पुरिसे विउसमणकालसमयंसि केरिसतं सातासोक्खं पच्चणुभवमाणे विहरति ?, तं उरालं णं समणाउसो !, तस्स णं पुरिसस्स कामभोगेहिंतो वाणमंतराणं देवाणं एत्तो अणंतगुणविसिट्ठतरगा चेव कामभोगा, वाणमंतराणं देवाणं कामभोगेहिंतो असुरिंदवज्जियाणं भवणवासीणं देवाणं एत्तो अणंतगुणविसिट्ठतरगा चेव कामभोगा, असुरेंदवज्जिताणं० एत्तो अणंत० गहगणणक्खत्त जाव कामभोगेहिंतो चंदिमसूरियाणं जोतिसियाणं जोतिसराईणं इत्तो अणंतगुणविसिट्ठतरगा चेव कामभोगा, ता चंदिमसूरिया णं जोतिसिंदा जोइसरातातणो एरिसते कामभोगे पच्चणुभवमाणे विहरंति ।१०५। तत्थ खलु इमे अट्ठासीती महागहा पं० तं०-इंगालए वियालए लोहितक्खे सणिच्छरे आहुणिए पाहुणिए कणते कणो कणकणए कणवियाए १० कणगसंताणए सोमे सहिते

Jain Education International 2010_03 For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

आसासणे कज्जोवए कत्थु (व्व) रए अयगरए दुंदुभए संखे संखणाभे २० संखवण्णाभे कंसे कंसणाभे कंसवण्णाभे रूप्पी रूप्पोभासे नीलो नीलोभासे भासे भासरासी ३० दगे दगवण्णे तिले तिलपुप्फवण्णे काए कागं (वं) धे इंदग्गी धूमकेतू हरि पिंगलए ४० बुद्धे सुक्के बहस्सती राहू अगत्थी माणवते कामफासे धुरे पमुहे वियडे ५० विसंधी कप्पेल्लए पइल्ले जडिलए अरूणे अग्गिल्लए काले महाकाले सोत्थिए सोवत्थिए वद्धमाणए ६० पलंबे णिच्चालोए णिच्चुज्जोए सयंपहे ओभासे सेयंकरे आभंकरे पभंकरे अरए ७० विरए असोगे वीयसोगे विवत्ते विवत्थे विसाले साले सुव्वते अणियट्टी एकजडी ८० दुजडी करे करिए राय अग्गले भावे केऊ पुप्फकेतू (सूर्य० गाथा ८९-९७) ।१०६॥२० पाहुडं॥ 'इय एस पागडत्था अभव्वजणहिययदुल्लभा इणमो। उक्कित्तिया भगवती जोइसरायस्स पन्नत्ती ॥९८॥ एस गहियावि संती थद्धे गारवियमाणपडिणीए। अबहुस्सए न देया तव्विवरीए भवे देया ॥९९॥ धिइउट्ठाणुच्छाहकंमबलविरियपुरिसकारेहिं। जो सिक्खिओवि संतो अभायणे पकिखविज्जाहि ॥१००॥ सो पवयणकुलगणसंघबाहिरो णाणविणयपरिहीणो। अरहंतथेरगणहरमेरं किर होइ वोलीणो ॥१॥ तम्हा धिइउट्ठाणुच्छाहकम्मबलविरियसिक्खियं णाणं। धारेयव्वं णियमा ण य अविणीएसु दायव्वं ॥२॥ वीरवरस्स भगवतो जरमरणकिलेसदोसरहियस्स। वंदामि विणयपणतो सोक्खुप्पाए सया पाए ॥१०३॥ गाथा ।१०७। **卐卐卐 श्रीचंद्रप्रज्ञप्त्युपांगमुत्कारितं॥ 卐卐卐**

Jain Education International 2010_03 For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org